आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

अगस्त 2024

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
30/-₹

फेल होती परीक्षाएं, गुम होती अकादमिक श्रेष्ठताएं

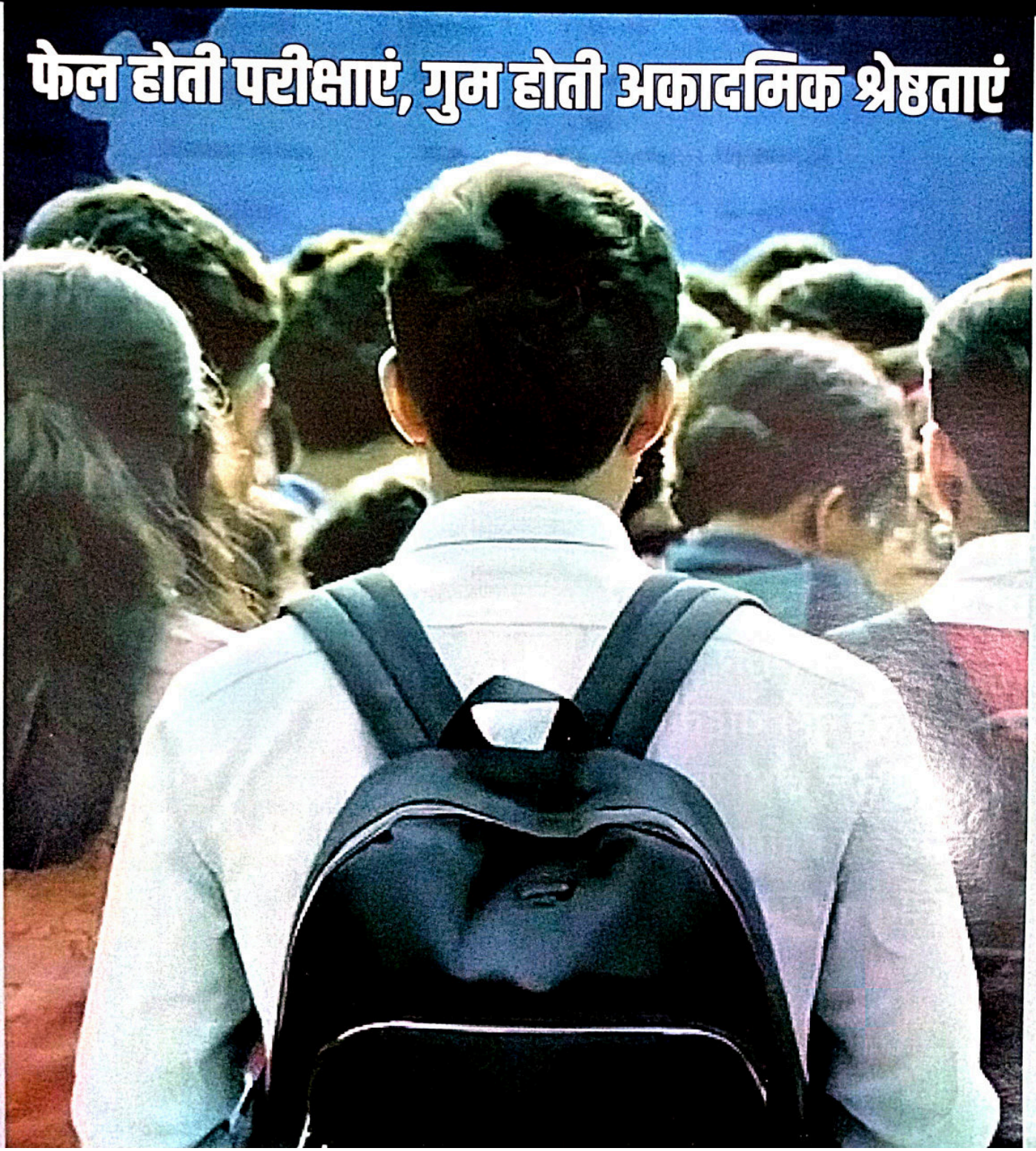



“तुममें जो बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में घरबार छोड़ने वालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।”

(कुरआन, 24:22)

with best compliment from

J.I.H. Ramganj Bazar
Jaipur (Raj.)

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
abuaniqa@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि

एक प्रति 30/- रु॰ एक वर्ष 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰ तीन वर्ष 950/- रु॰
चार वर्ष 1200/- रु॰ पांच वर्ष 1400/- रु॰
आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
ASILA OFFSET PRINTERS
1299, KALAN MAHAL,
NEW DELHI-110002

संपादक : शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 34 अंक 02 अगस्त 2024

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

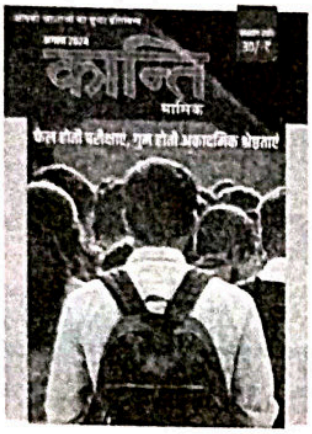

कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
नैतिकता, स्वतंत्रता की आधारशिला
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
सत्य-मार्ग का स्रोत एवं स्वरूप
डॉ. मक़सूद आलम

सौंदर्य बोध 11
अभियान चरित्र निर्माण का
नईम सिद्दीक़ी

मुख्य स्तंभ 15
फेल होती परीक्षाएं, गुम होती अकादमिक श्रेष्ठताएं
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 19
प्रश्नों के घेरे में आती परीक्षाएं
विराग गुप्ता

समाधान 23
व्यवस्था, भरोसा और जवाबदेही
संपादन प्रभाग

कविता 26
पहाड़ पर चढ़ने के लिए
पद्मजा घोरपड़े

समसामयिक 27
सवा साल बाद नहीं बदले हालात
तबाना नूरी

मंथन 31
समस्याओं की जननी को समाज में जगह क्यों दी जाए?
डॉ. प्रदीप कुमार

विधान 34
न्याय की कसौटी पर होगी नए क़ानूनों की परख
जितेंद्र गौतम

इबारत 36
आधुनिक शल्य चिकित्सा के अग्रदूत
संपादन प्रभाग

सेहत 38
हाई कोलेस्ट्रॉल : दबे पांव आने वाला ख़तरा
संपादन प्रभाग

करियर 41
विदेशी भाषाओं में बेहतर भविष्य
संपादन प्रभाग

कहानी 43
स्वयंवर
माइल ख़ैराबादी

घटना चक्र 47
समझें इस जनादेश को
संपादन प्रभाग

आख़िरी पन्ना 49
दिल से जो बात निकलती है...
एजाज़ अहमद असलम

मूल प्रश्न



शिब्ली अरसलान

नैतिकता, स्वतंत्रता की आधारशिला

अक्सर स्वतंत्रता और नैतिकता को एक दूसरे के विलोम के तौर पर पेश किया जाता है यानी ये कहा जाता है कि एक स्वतंत्र सोच का इंसान नैतिक नहीं हो सकता और एक नैतिक इंसान स्वतंत्र विचार का नहीं होता। ये वास्तव में ''स्वतंत्रता'' और ''नैतिकता'' दोनों को नहीं समझने का परिणाम है। स्वतंत्रता क्या है? राजनीति शास्त्र में इस प्रश्न का सीधा-सपाट उत्तर ये दिया जाता है कि व्यक्ति पर बाहरी प्रतिबंध का न होना ही स्वतंत्रता है, यानी यदि किसी व्यक्ति पर बाहरी नियंत्रण या दबाव न हो अर्थात वो व्यक्ति बिना किसी पर निर्भर हुए निर्णय ले सके तथा स्वायत्त तरीक़े से व्यवहार कर सके तो वो व्यक्ति स्वतंत्र माना जायेगा।

समाज में रहने वाला कोई व्यक्ति भला हर प्रकार के प्रतिबंधों की पूर्ण अनुपस्थिति की कैसे उम्मीद कर सकता है? ऐसे में ये समझना ज़रूरी हो जाता है कि कौन से प्रतिबंध न्यायोचित हैं और कौन से नहीं। किन को स्वीकार किया जा सकता है और किन को हटाया जाना चाहिए। वो आदर्श और मूल्य क्या हों जिसकी बुनियाद पर ये सब तय किया जाए। इन्हीं आदर्शों, सिद्धांतों,नियमों और प्रतिबंधों को धर्म नैतिक मूल्य (MORAL VALUES) कहता है।

प्रतिबंधों का न होना स्वतंत्रता का केवल एक पहलू है। स्वतंत्रता का अर्थ व्यक्ति की योग्यता का विस्तार करना और उसके अंदर की संभावनाओं को विकसित करना भी है। इस प्रकार स्वतंत्रता वो स्थिति है, जिसमें लोग अपनी रचनात्मकता और क्षमताओं का विकास कर सके। इस तरह स्वतंत्रता गरिमापूर्ण जीवन के लिए बेहद ज़रूरी है।

समाज में रहने वाला कोई व्यक्ति भला हर प्रकार के प्रतिबंधों की पूर्ण अनुपस्थिति की कैसे उम्मीद कर सकता है? ऐसे में ये समझना ज़रूरी हो जाता है कि कौन से प्रतिबंध न्यायोचित हैं और कौन से नहीं। किन को स्वीकार किया जा सकता है और किन को हटाया जाना चाहिए। वो आदर्श और मूल्य क्या हों जिसकी बुनियाद पर ये सब तय किया जाए। इन्हीं आदर्शों, सिद्धांतों,नियमों और प्रतिबंधों को धर्म नैतिक मूल्य (moral values) कहता है।

हमें नैतिक मूल्य की आवश्यकता क्यों है?

सिद्धांतों, नियमों और प्रतिबंधों की अनुपस्थिति में इंसानी रिश्तों में जो बिगाड़ पैदा होगा, उससे मानव समाज अव्यवस्था की गर्त में पहुंच जायेगा। लोगों के बीच महत्वाकांक्षा का टकराव सामान्य बात है। अपनी

ज़रूरतों और इच्छाओं की पूर्ति हेतु इंसानों के बीच सीमित संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा हम रात-दिन देखते हैं। समाज में असहमति उभरने के अनेक कारण हो सकते हैं। हम अपने चारों तरफ़ छोटे बड़े कारणों पर लड़ने के लिए तैयार लोगों को देखते हैं। शहरों में कार पार्किंग को लेकर झगड़ा, गांव में गली-नाली और ज़मीन आदि के लिए लड़ाई सामने के उदाहरण हैं।

हम इस दुनिया में कुछ ज़रूरतों और इच्छाओं से बंधे हैं, इन इच्छाओं और ज़रूरतों को पूरा करने में यदि नियमों और सिद्धांतों के किसी समुच्चय (set) को फॉलो न किया जाए, किसी भी क़ीमत पर येन-केन-प्रकारेण ज़रूरतों और इच्छाओं को पूरा करना जीवन का लक्ष्य बन जाए तो समाज को कोई तबाही से नहीं बचा सकता। तथाकथित स्वतंत्रता के गगनभेदी नारों के साथ ऐसी अव्यवस्था जन्म लेगी कि मानव समाज में वास्तविक स्वतंत्रता के लिए लोग तरस जाएंगे।

आज यही हो रहा है। स्वतंत्रता के विकृत नारों के सहारे अपनी कुंठित इच्छाओं की पूर्ति के लिए एक ख़ेमा किसी भी मूल्य और प्रतिबंध को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है। जिसके नतीजे में समाज स्वच्छंदता, निर्लज्जता, अश्लीलता से बजबजा रहा है। इच्छाओं की 'ग़ुलामी' को आज़ादी कहा जा रहा है। ख़ासकर युवा इस छलावे में फंसते हैं। वे समझते हैं कि नैतिक मूल्यों से 'पिंड छुड़ा कर' वो स्वतंत्र हो रहे हैं। ''मेरी ज़िंदगी, मेरी मर्ज़ी'' जैसे नारों ने युवाओं को कहीं का नहीं छोड़ा है। युवा पीढ़ी मानसिक तनाव, बिखराव, तन्हाई और अवसाद का शिकार हो रही, जिसके कारण युवाओं की सकरात्मक ऊर्जा और रचनात्मकता दांव पर लग गयी है।

सार ये है कि नैतिकता, स्वतंत्रता की आधारशिला है। नैतिकता के बिना वास्तविक स्वतंत्रता संभव नहीं है। आवशयक नियमों और ज़रूरी प्रतिबधों को दरकिनार कर महज़ इच्छाओं की ग़ुलामी, बाज़ार की दासता और रीति-रिवाजों का अंधानुकरण कतई आज़ादी नहीं कहला सकती। हमें आज़ादी और मनमानी के बीच भेद को समझना होगा।

सार ये है कि नैतिकता, स्वतंत्रता की आधारशिला है। नैतिकता के बिना वास्तविक स्वतंत्रता संभव नहीं है। आवशयक नियमों और ज़रूरी प्रतिबधों को दरकिनार कर महज़ इच्छाओं की ग़ुलामी, बाज़ार की दासता और रीति-रिवाजों का अंधानुकरण कतई आज़ादी नहीं कहला सकती। हमें आज़ादी और मनमानी के बीच भेद को समझना होगा।

महत्वपूर्ण प्रश्न ये है कि नैतिक मूल्य कहां से प्राप्त किये जाएं?

इस प्रश्न के उत्तर में कांट जैसे विचारक भी एक सर्वशक्तिमान शक्ति की 'आवश्यकता' को स्वीकारते हैं। धर्म का तो बुनियादी प्रश्न ही ईश्वर की अवधारणा पर टिका है। एक सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किए बिना कोई नैतिक मानक और मूल्य टिकाऊ नहीं हो सकता। अगर मैं कहता हूं कि नैतिकता के लिए ईश्वर की सत्ता को स्वीकारना ज़रूरी है तो मेरा मतलब यह नहीं है कि नास्तिक कभी भी नैतिक मानकों को नहीं पहचानते हैं।

हां, ये ज़रूर है कि एक नास्तिक निरपेक्ष नैतिक सिद्धांतों में विश्वास करने के लिए पर्याप्त कारण नहीं दे सकता है। और जब लोग बिना किसी न्यायोचित कारण के नैतिक सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं, तो वे उन पर उन की तुलना में कमज़ोर पकड़ रखते हैं जो नैतिक मूल्यों को तर्कसंगत आधार पर स्वीकार करते हैं। मेरा ये मत भी नहीं है कि जो लोग ईश्वर में विश्वास करते हैं वे नैतिक रूप से परिपूर्ण हैं, हां वे तार्किक रूप से नैतिक हैं। ■■

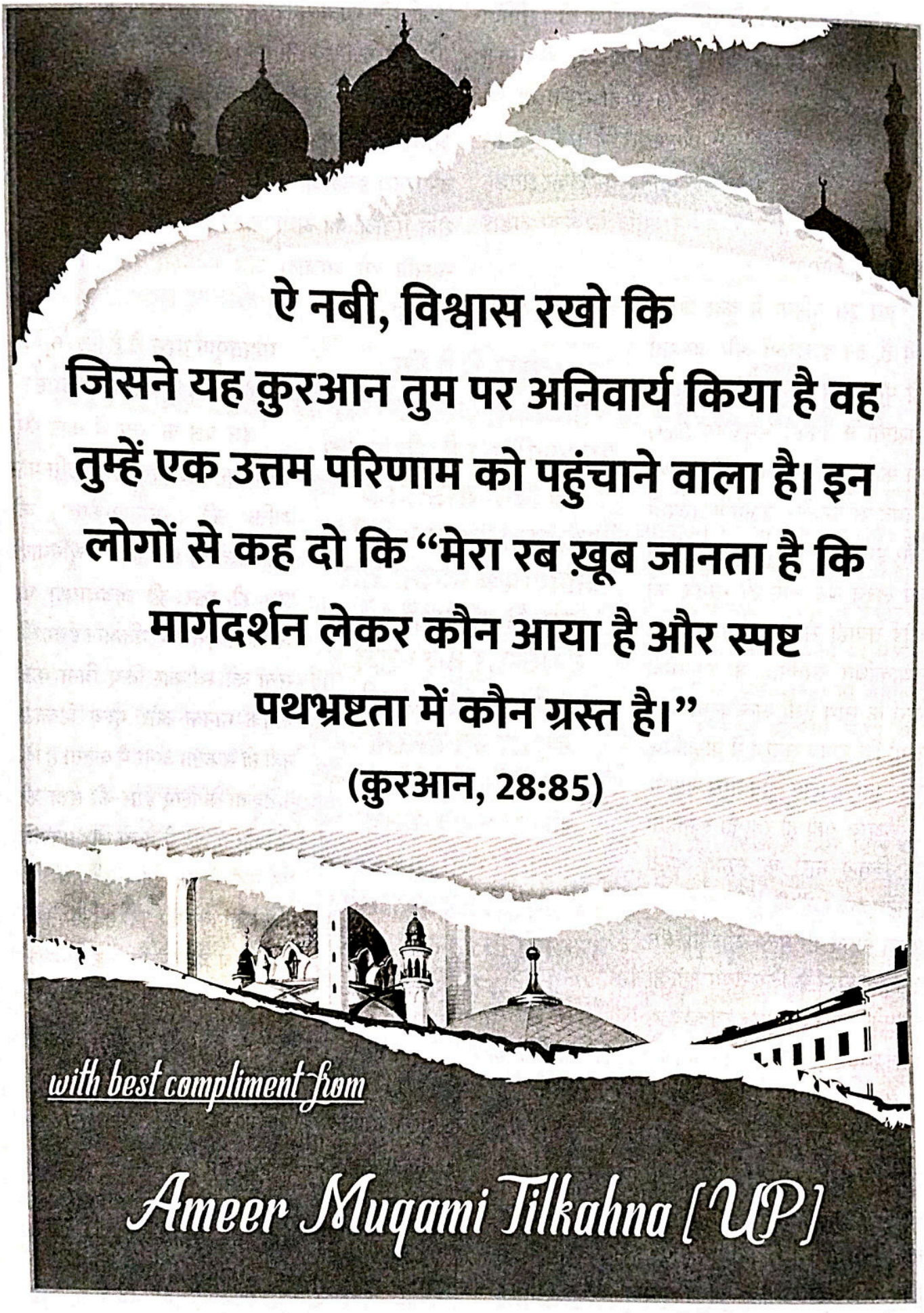
ऐ नबी, विश्वास रखो कि
जिसने यह क़ुरआन तुम पर अनिवार्य किया है वह
तुम्हें एक उत्तम परिणाम को पहुंचाने वाला है। इन
लोगों से कह दो कि "मेरा रब ख़ूब जानता है कि
मार्गदर्शन लेकर कौन आया है और स्पष्ट
पथभ्रष्टता में कौन ग्रस्त है।"
(क़ुरआन, 28:85)
with best compliment from
Ameer Muqami Tilkahna [UP]

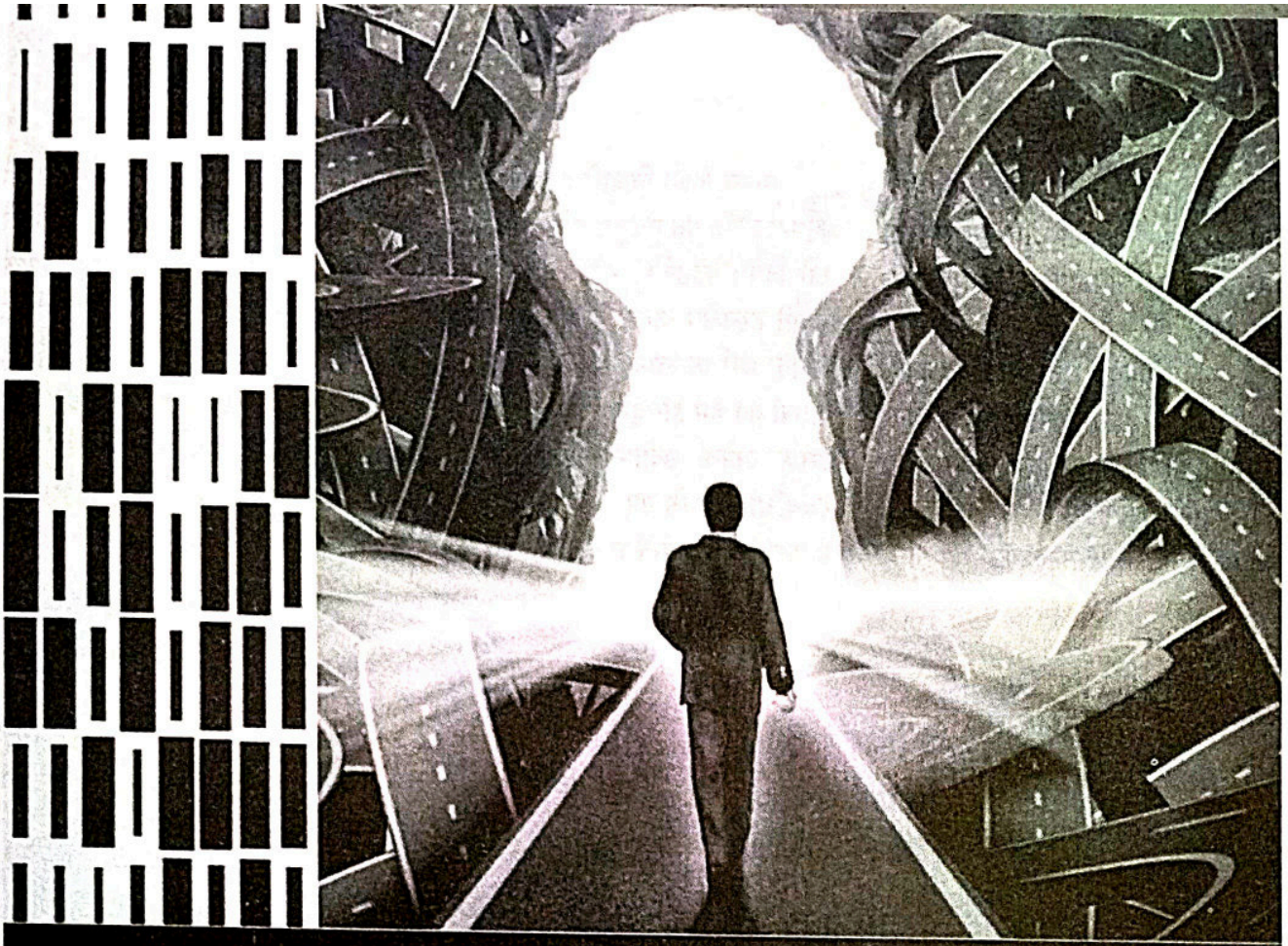

सत्य-मार्ग का स्रोत एवं स्वरूप

मानव-जीवन इहलोक से परलोक तक निरंतर सीढ़ीवार चलता हुआ अंतिम परिणाम तक पहुंचता है। प्रत्येक व्यक्ति की कामना होती है कि वह प्रत्येक चरण में सफलता की ओर अग्रसर रहे। यह ऐसी कामना है जो तभी साकार हो सकती है जब जीवन अपनी सही दिशा में और उसकी अपेक्षाओं और नियम-व्यवस्था के अनुकूल चले। यह दिशा क्या हो, कौन-सा नियम हो और जीवन की व्यवस्था कैसी हो; आदि जो मनुष्यों को हर प्रकार से आगे बढ़ाती रहे और सुख एवं सफलता का माध्यम बने। जब ये नियम-व्यवस्था मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि एवं ज्ञान से स्वयं सृजन करता है तो वह कई त्रुटियों और दोषों से युक्त होती है। यही कारण है कि मनुष्य अपने व्यावहारिक अनुभव से उसमें संशोधन करता रहता है, दूसरे शब्दों में यह कि ये नियम सारे मानवों के लिए उपयुक्त सिद्ध नहीं होते हैं।

प्रश्न केवल यह नहीं है कि मनुष्य

चिंतन



डॉ. मक़सूद आलम

के लिए जीवन के समस्त क्षेत्रों में विधि-व्यवस्था क्या हो, अपितु प्रश्न यह भी है कि मनुष्य इस विश्व के कर्ता को सही रूप में किस प्रकार और क्या माने? सम्पूर्ण जगत् का रचयिता किन कर्मों से प्रसन्न होता है और किन कर्मों से अप्रसन्न? धरती पर उपस्थित जीव और प्राणियों के साथ मनुष्य का संबंध किस प्रकार का हो? इसी प्रकार सूरज, चांद, सितारे आदि हमारे सहायक और सेवक-सृष्टि हैं या पूज्य प्रभु? क्या हवाओं को चलाने वाली शक्ति ईश्वर पूज्य है या स्वयं हवा पूज्य है?

हम मनुष्यों को वृक्षों और पौधों से फल इत्यादि खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं, धरती भी खाद्य पदार्थ देती है। इस धरती को हम अपना सेवक मानें या मां के रूप में इसको पूज्य-शक्ति स्वीकार करें? इन पेड़ों को हम अपना पोषक मानें या उसकी पूजा करें या फिर एक परमेश्वर को धरती और वृक्षों आदि का कर्ता एवं इन कृतियों के द्वारा हमारे पोषण की व्यवस्था करने वाला मान कर उसी को पालनहार की संज्ञा दें? इत्यादि अनेक

प्रश्न हैं जिनका सही उत्तर हमें मिले तो हम अपने को भी और इन समस्त वस्तुओं एवं शक्तियों को भी समझ सकते हैं।

इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए प्रत्येक युग में लोगों ने अपना जीवन खपाया है। किन्तु इनका एक सटीक और संतोषजनक उत्तर न पा सके, बल्कि विचारों में उलझकर रह गए।

मनुष्य ने इन विचारों को अपनाकर अपना व्यक्तिगत एवं सामाजिक संतुलन खो दिया। इतना ही नहीं दर्शन ने धर्म में भी हस्तक्षेप करके हेर-फेर किया है। वैदिक धर्म के लम्बे समय के बाद के शास्त्रों को हम इस दृष्टि से देखें तो उनमें इसके अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। स्वयं बाइबल के नए और पुराने नियम में फेरबदल एक सर्व सत्य है।

ने संदेशवाहक भेजने का प्रबन्ध किया। मानव जाति विभिन्न देशों और जातियों में बंटती हुई दूर-दूर तक फैल गई। प्रत्येक जाति में ईश्वर ने अपना संदेशवाहक भेजा। यह था ईश्वरीय ज्ञान अर्थात सत्य-धर्म का स्रोत। जो लोग ईश्वर की ओर से संदेश सुनाने एवं मार्गदर्शन के लिए मनुष्यों के बीच उठाए जाते रहे, उनको ईशदूत एवं संदेशवाहक कहते हैं। इस पद

प्रश्न केवल यह नहीं है कि मनुष्य के लिए जीवन के समस्त क्षेत्रों में विधि-व्यवस्था क्या हो, अपितु प्रश्न यह भी है कि मनुष्य इस विश्व के कर्ता को सही रूप में किस प्रकार और क्या माने? सम्पूर्ण जगत् का रचयिता किन कर्मों से प्रसन्न होता है और किन कर्मों से अप्रसन्न? धरती पर उपस्थित जीव और प्राणियों के साथ मनुष्य का संबंध किस प्रकार का हो? इसी प्रकार सूरज, चांद, सितारे आदि हमारे सहायक और सेवक-सृष्टि हैं या पूज्य प्रभु? क्या हवाओं को चलाने वाली शक्ति ईश्वर पूज्य है या स्वयं हवा पूज्य है?



इस प्रयास के परिणामन ही सामाजिक दर्शन के बड़े-बड़े चिन्तक सामने आए। प्लेटो (Plato), अरस्तू (Aristotle), सुकरात (Socrates), बर्गसन (Burgson), लिंकन, मार्क्स (Marx), चाणक्य इत्यादि । इन सबने विषय को उलझाया ही है, सुलझाया किसी ने नहीं। मनुष्य की सीमित बुद्धि तो इतना ही कर सकती थी।

ईश्वर ने इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए इन्सान को ही माध्यम बनाया। जिन व्यक्तियों द्वारा ईश्वर ने अपना संदेश भेजा, उनके मानने वालों ने धीरे-धीरे एक लम्बे समय के बाद सब कुछ भुला दिया। कोई प्रामाणिक ज्ञान और उस ज्ञान के संदेशवाहक का अता-पता शेष नहीं रखा। इस प्रकार जब मानव-जीवन में बिगाड़ आ गया तो फिर ईश्वर

की दो श्रेणियां रही हैं। एक वह ईशदूत, जो ईश्वर की वाणी सुनाते और ईश्वर-भक्ति का आह्वान करते थे। ये ईशदूत प्रथम श्रेणी के होते थे। ये अपनी ओर से कुछ नहीं कहते थे। ये वह कहते, जो ईश्वर अपने शब्दों में उनको वाणी देता और जो कुछ ईश्वर उनके हृदय में डालता। यह हृदय में डाली हुई बात अवतरित वाणी की व्याख्या के लिए होती। और

इसलिए होती कि दूत उन संदेशों एवं आज्ञाओं को व्यावहारिक रूप दे सकें। एक आंदोलन चलाकर समाज में शुद्ध परिवर्तन लाने का प्रयत्न करें। अरबी में उनको रसूल की संज्ञा दी गई है।

दूसरी श्रेणी के दूत वे हैं जो पूर्व के रसूलों के अनुयायियों में बिगाड़ के बाद उनको रसूलों के उपदेशों और मार्ग को याद दिलाकर उनका सुधार करने के लिए आए। ईश्वर ने उनपर अलग से अपनी वाणी नहीं उतारी। वे केवल पूर्व की वाणी को शुद्ध रूप में समझाने और लोगों में सुधार करने का कार्य करते रहे। ईश्वर उनके हृदय में बातें डालता था और वे कार्य करते थे। ऐसे दूतों को नबी कहा जाता है। संभवतः वैदिक धर्म में प्रथम श्रेणी के दूतों को देवदूत और द्वितीय श्रेणी के दूतों को ऋषि कहा गया है। देव-दूतों के लिए संभवतः महर्षि का शब्द प्रयोग हुआ है जो बाद के कालों में असल अर्थ से हट गया और दूसरे बड़े ज्ञानी पुरुषों में से किसी-किसी को ऋषि और किसी को महर्षि या अवतार कह दिया गया है। ऋषियों और महार्षियों (नबियों और रसूलों) के अनुयायियों को अरबी में सहाबी या हवारी कहा गया है, जबकि हिन्दी या संस्कृत में सखा या भक्त कहा गया है।

प्रथम मनुष्य की अपनी बढ़ती-फैलती संतानों को अपना ज्ञान देने के लिए ईश्वर ने प्रथम मानव स्वयंभु मनु अर्थात आदम को नबी बनाया और ये पैग़म्बरी (Prophethood) के क्रम के प्रथम नबी हुए। जैसे-जैसे आबादी फैलती और बढ़ती रही, एक-एक क्षेत्र में नबी या रसूल आते रहे। उनके बाद फिर जब-जब बिगाड़ आता रहा, उनके सुधार के लिए ईश्वर बार-बार ऐसा ही प्रबंध करता रहा। मनु के बाद पहले बड़े नबी नूह थे जिनको न्यूह कहा गया है।



आर्य लोगों में कौन-कौन नबी आए इसका भी कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं मिलता। अंतिम नबी, जिनके आने की भविष्यवाणियां पूर्व के नबी करते थे, मध्य धरती पर आए। आपने जो मार्गदर्शन एवं आदर्श प्रस्तुत किया वह भी किसी जाति विशेष के लिए नहीं वरन सार्वभौमिक हैं अर्थात समस्त मानव जाति के लिए हैं। भले ही उस मार्गदर्शन के कार्य का आरंभ अरब धरती से किया।

यह कहना कठिन है कि उनके पूर्व भी कुछ छोटे-बड़े नबी आए थे या नहीं।

सेमेटिक और असेमेटिक सभी जातियां नूह और उनके साथी अर्थात् ऋषियों से ही निकली हैं। आर्य लोगों में कौन-कौन नबी आए इसका भी कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं मिलता। अंतिम नबी, जिनके आने की भविष्यवाणियां पूर्व के नबी करते थे, मध्य धरती पर आए। इनका नाम मुहम्मद (सल्ल.) था। ये अहमद भी कहे जाते हैं। अरब के मक्का नगर के वासी थे। इनकी एक ओर अपनी सामी पीढ़ी के लोग थे, दूसरी ओर आर्य थे। इन्होंने ''हे मानव, हे मानवो'', कह कर लोगों को संबोधित किया। इन्होंने यह नहीं कहा कि हे अरबवासियों या हे सामियों ! मैं तुम समस्त लोगों की ओर भेजा गया हूं। अतः आपने जो मार्गदर्शन एवं आदर्श प्रस्तुत किया वह भी किसी जाति विशेष के लिए नहीं वरन सार्वभौमिक है अर्थात समस्त मानव जाति के लिए है। भले ही उस मार्गदर्शन के कार्य का आरंभ अरब धरती से किया। ■■

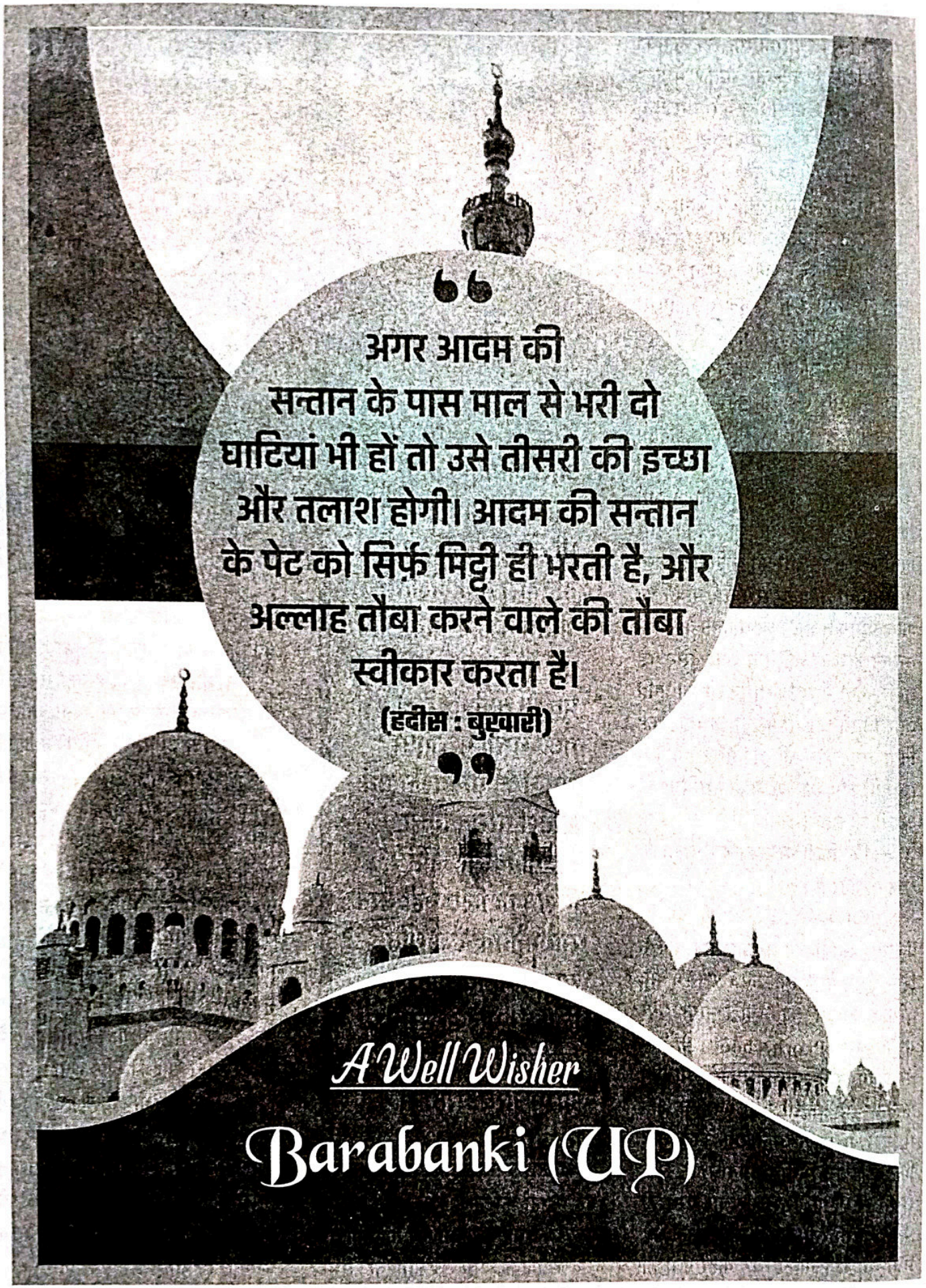
“
अगर आदम की
सन्तान के पास माल से भरी दो
घाटियां भी हों तो उसे तीसरी की इच्छा
और तलाश होगी। आदम की सन्तान
के पेट को सिर्फ़ मिट्टी ही भरती है, और
अल्लाह तौबा करने वाले की तौबा
स्वीकार करता है।
(हदीस : बुख़ारी)
”
A Well Wisher
Barabanki (UP)

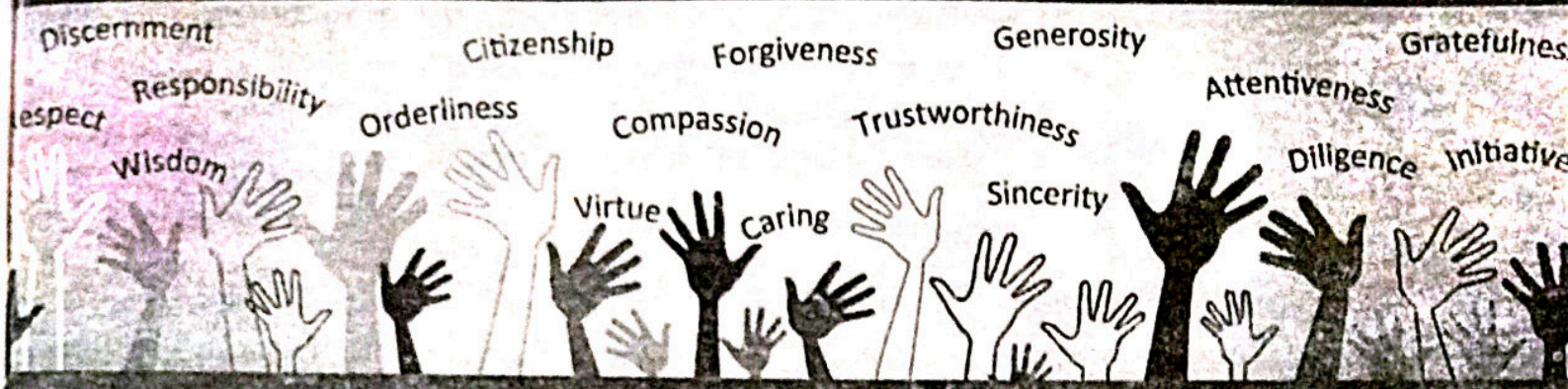

अभियान चरित्र निर्माण का

यह तो स्पष्ट है कि हम अपनी ज़िन्दगी को बाक़ी रखने के लिए कुछ ज़रूरतों व इच्छाओं से बंधे हुए हैं। उन ज़रूरतों को हमें किसी न किसी तरह पूरा करना पड़ता है, लेकिन यदि इन्सान केवल अपनी इच्छाओं और ज़रूरतों को पूरा करने में लग जाए तो उसके अन्दर नैतिक मूल्य करवट ही नहीं लेते और उसमें कोई आध्यात्मिक विकास नहीं होता। नैतिक जीवन ऐसी ज़िम्मेदारियों से बनता है, जिनको पूरा करने के लिए अपनी इच्छाओं की कुछ न कुछ क़ुरबानी देनी पड़े। दूसरे शब्दों में, नैतिक जीवन इच्छाओं के त्याग से शुरू होती है। अपनी इच्छाओं में ही मग्न रहना हमें हैवानी ज़िन्दगी (पाशव जीवन) तो दे सकता है, लेकिन उच्च कोटि की इन्सानी ज़िन्दगी अपनी इच्छाओं को किसी ऊंचे उद्देश्य पर क़ुरबान करने से ही हासिल होती है।

सार यह कि चरित्र को बनाने और ज़िन्दगी को संवारने और आत्मिक व नैतिक उन्नति व विकास पाने के लिए इन्सान के सामने कोई क़ुरबानी चाहने वाला उद्देश्य और स्वार्थ से ऊंचा लक्ष्य निगाह में होना चाहिए।

सौंदर्य बोध



नईम सिद्दीक़ी

इसके बिना नैतिकता का विकास और चरित्र के निर्माण की कोई सम्भावना नहीं। यह उद्देश्य और लक्ष्य जितना कमज़ोर और सीमित या उच्च और विस्तृत होगा उसके अनुसार मानव-चरित्र व आचरण में भी विस्तार या संकुचितपन पाया जाएगा।

नेक बनने के लिए नेकी की धुंधली सी तस्वीर दिमाग में होना काफ़ी नहीं, बल्कि चरित्र को संवारने के लिए एक स्पष्ट नियम और कसौटी का ज्ञान होना ज़रूरी है। जब कभी यह रास्ता अस्पष्ट रहा है, इन्सानी क़ाफ़िले धुंधली कल्पनाओं के पीछे-पीछे आवारागर्दी करते रहे हैं। मानवता भलाई कल्याण और सफलता ऐसे ही किसी दौर में पा सकी है जबकि इस कामयाबी व कल्याण के लिए स्पष्ट नियम उसके हाथ में आया हो।

वह व्यक्ति जो जानवर की तरह सिर्फ़ अपने चारे-पानी, या अपनी इच्छाओं की तलब में सरगर्म रहता है उसके अन्दर चरित्र नाम की कोई चीज़ नहीं पाई जा सकती। इससे बढ़ कर वे लोग हैं जो अपनी इच्छाओं का त्याग और अपने हित की क़ुरबानी देते हैं। उनके अंदर एक चरित्र निर्मित होता है। हर फ़र्ज़ इच्छाओं के मुक़ाबले पर आकर क़ुरबानी मांगता है। कर्त्तव्यों और इच्छाओं के बीच कशमकश होती है और यह कशमकश ज़िन्दगी को एक इम्तिहान बना देती है। इस कशमकश और इम्तिहान की हालत में पड़ कर आदमी को हर बार फ़ैसले करने पड़ते हैं, और उन फ़ैसलों को निभाना पड़ता है। इम्तिहान में पड़ना और सही फ़ैसले करना और फिर उनको निभाना चरित्र को विकसित करता है और उसके जौहर को वैसे ही क्रान्ति व उच्चता प्रदान करता है जैसे सोना बार-बार तप कर कुन्दन बनता है।

कोई नहीं जो इम्तिहान की स्थिति में होने की चेतना को बाहर से

आदमी पर ठूंस सके, कोई नहीं जो इस कशमकश की ज़िम्मेदारी को बाहर से स्वीकार करा सके, कोई नहीं जो फ़र्ज़ और इच्छा के किसी संग्राम में आदमी के अन्तःकरण में होने वाले फ़ैसले को समझ सके और उसको बलपूर्वक मही मार्ग पर डाल सके और कोई नहीं जो किसी नैतिक फ़ैसले को वफ़ादारी से निभाने पर बाहर के दबाव से आदमी को मजबूर कर सके।

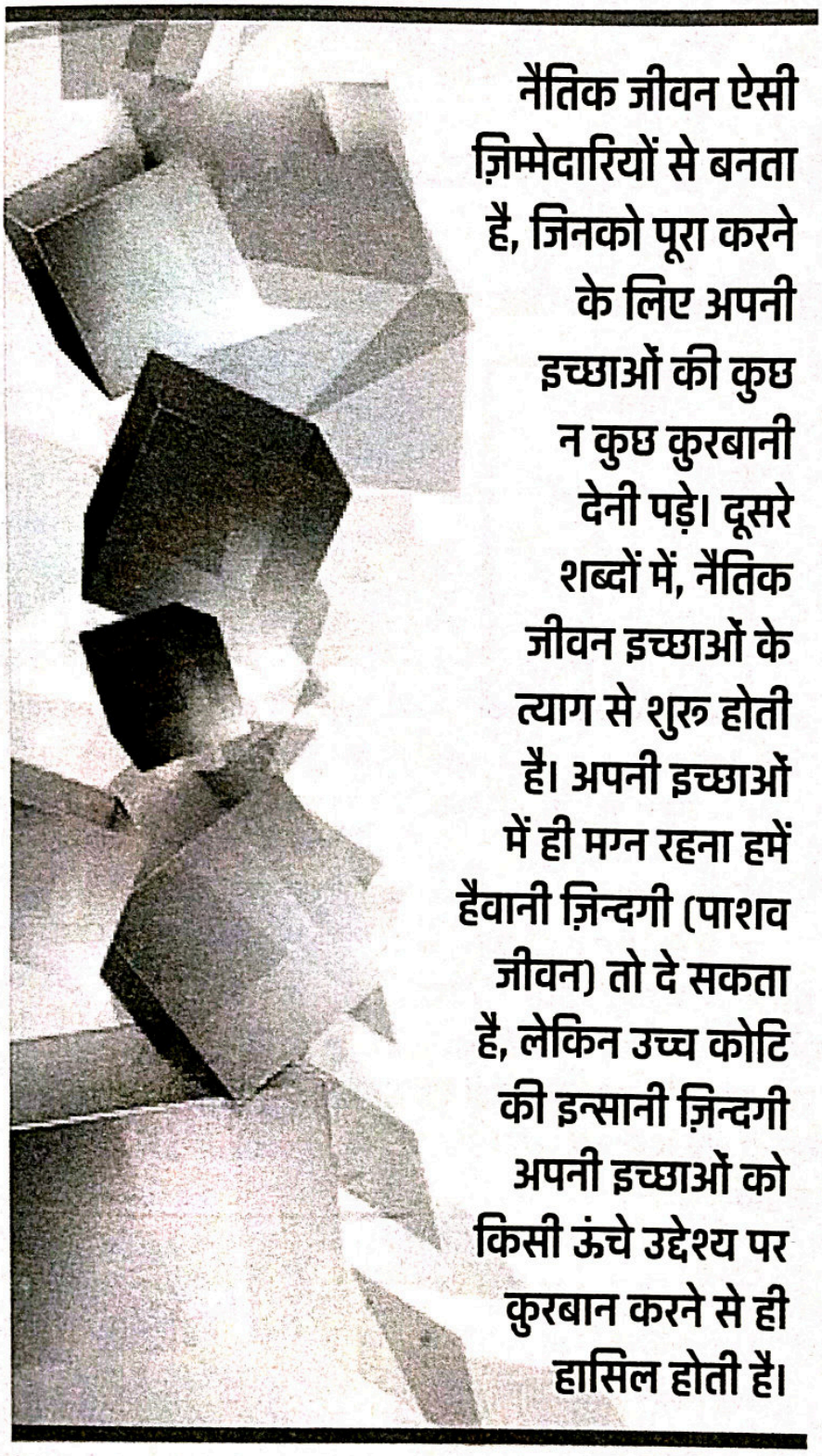

नैतिक जीवन ऐसी ज़िम्मेदारियों से बनता है, जिनको पूरा करने के लिए अपनी इच्छाओं की कुछ न कुछ कुरबानी देनी पड़े। दूसरे शब्दों में, नैतिक जीवन इच्छाओं के त्याग से शुरू होती हैं। अपनी इच्छाओं में ही मग्न रहना हमें हैवानी ज़िन्दगी (पाशव जीवन) तो दे सकता है, लेकिन उच्च कोटि की इन्सानी ज़िन्दगी अपनी इच्छाओं को किसी ऊंचे उद्देश्य पर कुरबान करने से ही हासिल होती है।

भलाई और बुराई के बीच सारी उम्र जारी रहने वाली इस कशमकश में केवल वही व्यक्ति बाज़ी ले जा सकता है जो एक सिपाही का जज़्बा अपने अन्दर रखता हो। एक संतरी की तरह अपने उसूलों और अपने फरायज कर्त्तव्यों की निगरानी करने वाला बने, और एक पहलवान की तरह तुच्छ भावनाओं से कुश्ती लड़ता रहे। जिस व्यक्ति के अन्दर का सिपाही हथियार फेंक चुका हो, जिस आदमी के अन्दर का संतरी सो गया हो, और जिस व्यक्ति के अन्दर का पहलवान बेहिस हो गया हो, वह ज़िन्दगी का खेल हार चुका, कोई दूसरा उसके हिस्से की जंग नहीं लड़ सकता और कोई दूसरा उसकी जगह पहरा नहीं दे सकता।

किसी उद्देश्य को निश्चित रूप से चुन लेना, उस पर हमेशा अपनी निगाह केन्द्रित रखना, उसके कत्तव्यों को अपने लिए अनिवार्य कर लेना, उसकी मांगों के अनुसार अपनी इच्छाओं की क़ुरबानी देना, उससे पैदा होने वाली कशमकश में एक मुजाहिद की शान के साथ पेशक़दमी करना और हर क़दम पर मज़बूती के साथ जमे रहना ख़ुद हमारा काम है, दूसरों का नहीं।

जब व्यक्ति इस्लाम को अपनी जिन्दगी का मार्गदर्शक बनाता है तो इसका मतलब यह है कि वह अपने लिए सर्वोच्च उद्देश्य चुन लेता है, और वह उद्देश्य है ईश्वर की मर्ज़ी की प्राप्ति और इस मक़सद के लिए पूरी मानवता का कल्याण चाहना। इस प्रकार वह अपने लिए कर्त्तव्य निश्चित कर लेता है। वह अपने ऊपर कुछ सीमाए बांध लेता है, वह अपनी इच्छाओं की क़ुरबानी के अवसरों से आगाह हो जाता है। वह अपने आपको परीक्षा व कशमकश के मैदान में ला खड़ा करता है।

नेक बनने के लिए नेकी की धुंधली सी तस्वीर दिमाग़ में होना काफ़ी नहीं, बल्कि सीरत व किरदार को संवारने के

लिए एक स्पष्ट नियम और कसौटी का ज्ञान होना ज़रूरी है। हर ज़माने में हर जगह और हर प्रकार के हालात में व्यक्ति और क़ौम के अन्दर बेहतर ज़िन्दगी हासिल करने, बुराइयों और ख़राबियों से बचने और तरक़्क़ी के रास्ते पर बढ़ने की इच्छा प्राकृतिक रूप से मौजूद रहती है, लेकिन बेहतर ज़िन्दगी हासिल करने का रास्ता सामान्य रूप से अस्पष्ट हो रहा है। जब कभी यह रास्ता अस्पष्ट रहा है, इन्सानी क़ाफ़िले धुंधली कल्पनाओं के पीछे-पीछे आवारागर्दी करते रहे हैं। मानवता भलाई कल्याण और सफलता ऐसे ही किसी दौर में पा सकी है जबकि इस कामयाबी व कल्याण के लिए स्पष्ट नियम उसके हाथ में आया हो।

पैग़म्बरों और नबियों, (अलैहिमुरसलाम) का सबसे बड़ा एहसास यही है कि उन्होंने नेकी और कामयाबी व कल्याण के नियम को स्पष्ट रूप से मानवता के सामने रखा। अपनी आख़िरी और मुकम्मल शक्ल में यह नियम क़ुरआन ने पेश किया है।



नियम के साथ-साथ ही इन्सान हमेशा इस बात का भी मोहताज रहा है कि उस नियम के अनुसार ढ़ली हुई इन्सान की ज़िन्दगी का एक चलता फिरता नमूना भी उसके सामने रहे। वह मार्गदर्शन और प्रेरणा हासिल करने के लिए अव्यावहारिक, मात्र काल्पनिक दर्शन से कहीं ज़्यादा किसी व्यावहारिक नमूने से शिक्षा लेता है और उसे अपनाता है। वह केवल दार्शनिक दावत और मात्र दलीलों से क्रान्तिकारी आत्मा हासिल नहीं कर सकता। बल्कि उसे ऐसी तत्वदर्शिता की ज़रूरत है जिसके साथ उसकी व्यावहारिक व्याख्या भी मौजूद हो। वह ऐसा दर्शन चाहता है जो घटनाओं के रूप में अपना जलवा दिखाए, वह ऐसी दलीलों का ज़रूरतमन्द होता है जिनके अन्दर मानव भावनाओं की धुलावट मौजूद हो। दूसरे शब्दों में वह केवल एक किताबी नियम से पूरा मार्गदर्शन नहीं पा सकता। बल्कि उसे किसी ऐसे इन्सान की ज़रूरत है जो किताबी नियम को मानव जीवन में चलता-फिरता दिखा सके। उसे एक आदर्श चरित्र की ज़रूरत होती है और यह आदर्श मुहम्मद (सल्ल.) का कान्तिमय व्यक्तित्व है।

अनुभव से स्पष्ट है कि हम में से हर व्यक्ति अपने दोस्तों, मिलने-जुलने वालों, समाज के प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध लोगों और ऐतिहासिक शख़्सीयतों में

कान्ति साप्ताहिक और कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें !

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

कहीं न कहीं अपने लिए आदर्श ज़रूर रखता है। और फिर अपने नैतिक नियम बनाने, रोज़-रोज के मामलों में फ़ैसला व उन पर अमल करने में बातचीत, चालढाल यहां तक कि वेश-भूषा तथा छवि बनाने में अनायास ही अपने उस आदर्श या आयडियल की पैरवी करता है। कुछ ख़ास शब्द और उनके लिए ख़ास उच्चारण और इसी प्रकार ख़ुशी और ग़म, ग़ुस्से और प्रेम, दया और घृणा के कुछ तौर-तरीक़े हम ख़ास-ख़ास व्यक्तियों से अपने अन्दर उतार लेते हैं। अब जैसा-जैसा आदर्श नमूना किसी ने अपने सामने रखा होता है, उसी तरह का चरित्र उसके अन्दर परवान चढ़ता है। किसी के सामने एक फिल्मी एक्टर का किरदार होता है, किसी के सामने कोई कवि या लेखक होता है, किसी के सामने किसी उपन्यास का हीरो होता है, किसी के सामने क्रिकेट या हाकी का कोई खिलाड़ी होता है, किसी के सामने उसका कोई उस्ताद, अफ़सर या पार्टी या देश का लीडर होता है। कई बार हमारे विभिन्न आदर्श-नमुने विभिन्न दिशाओं में बिखरे होते हैं और हम अलग-अलग पहलुओं से एक साथ बहुत से लोगों की पैरवी करते हैं। इस्लाम ने यह चाहा है कि हम अपनी पूरे नैतिक जीवन के लिए मुहम्मद (सल्ल.) की एक ही बेदाग और बे-मैल ज़िन्दगी को अपने अमल के लिए नमूना और मापदंड बनाएं और सारा मार्गदर्शन वहीं से हासिल करें।

सार यह कि चरित्र को बनाने और ज़िन्दगी को संवारने और आत्मिक व नैतिक उन्नति व विकास पाने के लिए इन्सान के सामने कोई क़ुरबानी चाहने वाला उद्देश्य और स्वार्थ से ऊंचा लक्ष्य निगाह में होना चाहिए। इसके बिना नैतिकता का विकास और चरित्र के निर्माण की कोई सम्भावना नहीं। यह उद्देश्य और लक्ष्य जितना कमज़ोर और सीमित या उच्च और विस्तृत होगा उसके अनुसार मानव-चरित्र व आचरण में भी विस्तार या संकुचितपन पाया जाएगा।

मानव-चरित्र के लिए वही सबसे ऊंचा मक़ाम है जिस पर निगाह जमा कर सबसे ऊंची उड़ान भरी जा सकती है। इस सबसे ऊचे आदर्श वाले चरित्र व आचरण की सुन्नत, (कथनी व करनी) का ठीक प्रमाणित रिकार्ड, उसकी पूरी तस्वीर सुरक्षित है और मानव इतिहास का भवन उसकी अमिट रोशनी से जगमगा रहा है और इस आदर्श से अपने जीवन में निखारने वाला व्यक्ति खुद भी जगमगा उठता है। ज़रूरत इस बात की है कि हम आदर्श और मापदंड के ज्ञान की प्यास अपने अन्दर जगाएं और जो ज्ञान हासिन हो उसके अनुसार अपने आचरण व चरित्र के निर्माण की मुहिम जारी रखें। ■■

"अतः सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों का रब और धरती का रब, सारे संसार का रब है। आकाशों और धरती में बड़ाई उसी के लिए है, और वही प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है।"

(क़ुरआन, 45:36, 37)

with best compliment from

Zakir Husain (Raja Chakki)

Mahidpur (MP)



शिक्षा व्यवस्था में

फेल होती परीक्षाएं, गुम होती अकादमिक श्रेष्ठताएं

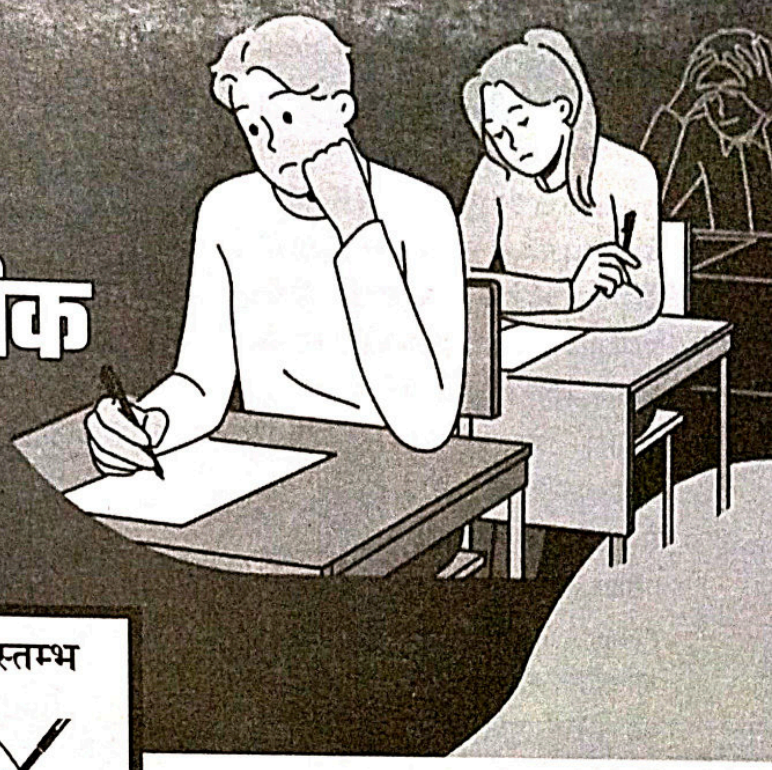

मुख्य स्तम्भ



सुफ़ियान अहमद

माध्यमिक शिक्षा ख़त्म होते-होते हमारे युवा और युवतियां तय करने लगते हैं कि वे शिक्षक बनेंगे या व्यापारी, पुलिस में जाएंगे या सेना में, वकील या न्यायाधीश, क्लर्क या नौकरशाह। या फिर वे डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, मैनेजर आदि बनना पसंद करेंगे। यहीं से तरह-तरह की प्रतियोगी परीक्षाओं के चरण की निर्णायक भूमिका शुरू होती है। दुर्योग से हमारे देश में प्रतियोगी परीक्षाओं के विभिन्न चरण संसाधनों की कमी, बदइंतिज़ामी और भ्रष्टाचार की बहुतायत और स्तरहीनता से बेहाल हैं।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि यहां शिक्षा व्यवस्था तो दरअस्ल है ही नहीं। बस एक परीक्षा व्यवस्था है। इसे जो पास कर लेता है, वह योग्य व विद्वान मान लिया जाता है। क्या पढ़ा, क्या सीखा यह प्रश्न महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि ज्ञान की अस्ल कसौटी प्रश्न-पत्र में छपे कुछ सवाल हैं। किसी जुगत से परीक्षा पास कर लेना ही कुशलता का असल पैमाना समझा जाता है।

> **“भ्रष्टाचार और धन बल के बढ़ते प्रयोग के प्रकरण भारतीय शिक्षा के एक दुखद रूपक की तरह हमारे सामने हैं। पिछले कुछ वर्षों से राज्यों और केंद्र की ओर से आयोजित शायद ही ऐसी कोई प्रतियोगी परीक्षा हो, जिसके प्रश्नपत्र लीक न हुए हों या फिर उनके परिणामों को लेकर संदेह न उठे हों।”**

परिणामस्वरूप परीक्षाओं में भ्रष्टाचार और धन-बल के बढ़ते प्रयोग के प्रकरण भारतीय शिक्षा के एक दुखद रूपक की तरह हमारे सामने हैं। समाज में एक ऐसा वर्ग तैयार हो गया है, जिसका एकमात्र उद्देश्य किसी भी क़ीमत पर परीक्षा उत्तीर्ण करना रह गया है। इसके लिए उसे चाहे अपराध ही क्यों न करने पड़े । पिछले कुछ वर्षों से राज्यों और केंद्र की ओर से आयोजित शायद ही ऐसी कोई प्रतियोगी परीक्षा हो, जिसके प्रश्नपत्र लीक न हुए हों या फिर उनके परिणामों को लेकर संदेह न उठे हों। अकेले उत्तर प्रदेश में पिछले 7 वर्षों में 24 से अधिक परीक्षाएं पेपर लीक और भ्रष्टाचार की वजह से रद्द हो चुकी हैं। पिछले 5 वर्षों में 15 राज्यों में 40 से

ज़्यादा परीक्षाओं के पेपर लीक हुए।

प्रश्नपत्रों के लीक होने पर राजनीतिक दल एक-दूसरे को कठघरे में तो खड़ा करते हैं, लेकिन इस मामले में सभी दलों और उनकी सरकारों का हाल एक जैसा है। इन दिनों लगभग हर दूसरी या तीसरी परीक्षा के पर्चे लीक हो रहे हैं। मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश की परीक्षा यानी नीट में अनियमितता को लेकर उठे सवाल अभी शांत भी नहीं हुए थे कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए की ओर से कराई गई यूजीसी-नेट परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने का मामला सामने आ गया। ज़ाहिर है कि यह हमारी पूरी शिक्षा प्रणाली के स्तर पर एक बड़ा सवालिया निशान है। इसलिए ज़मीनी हक़ीक़त पर ग़ौर करना ज़रूरी है।

पिछले दस वर्षों से केंद्र सरकार द्वारा जिस अर्थव्यवस्था की मज़बूती का बखान किया जा रहा है, उसकी जीडीपी का मात्र तीन प्रतिशत के आसपास ही शिक्षा पर निवेश हो रहा है। जबकि इसे दोगुना होना चाहिए था। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की हालत यह है कि छात्र उत्तीर्ण होकर आगे की कक्षाओं में पहुंच जाते हैं, लेकिन उनमें नीचे की कक्षाओं के बराबर पढ़ने और गणित की क्षमता नहीं होती।

डिग्रियां लेने के बावजूद उनमें अकादमिक क्षमताएं निचले स्तर की होती हैं। ज़्यादातर स्नातक बाज़ार के मानकों के लिहाज़ से रोज़गार पाने लायक़ नहीं होते। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी का मार्केट पूरी तरह से निजी क्षेत्र में है। पुलिस या सेना के सिपाही से लेकर आईएएस-डॉक्टर-इंजीनियर-मैनेजर तक की कोचिंग निजी ख़र्चे पर उपलब्ध है, लेकिन जैसे ही ट्रेनिंग लेकर हमारा युवा वर्ग प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठता है, वह वर्षों से चल रहे राष्ट्रीय घोटाले की भेंट चढ़ जाता है। इस स्कैंडल का नाम है पेपर-लीक।

विडम्बना है कि भारतीय समाज में शिक्षा को लेकर उत्साह तो है, लेकिन समाज शिक्षा की प्रक्रिया में ईमानदारी से भाग लेने के प्रति उतना उत्साही नहीं है जितनी उत्सुकता उसकी डिग्री और सर्टिफिकेट लेने में है। इस रवैये के पीछे का एक प्रमुख कारण वह व्यवस्था है, जिसने शिक्षा की पूरी प्रक्रिया को परीक्षा केंद्रित बना दिया है जबकि यह पाठ्यक्रम केंद्रित होनी चाहिए थी।



संगठित होकर नक़ल कराने वाले माफ़िया के बारे में सभी को पता है। पर इस तथ्य को लोग जानते हुए भी अनजान बने रहते हैं कि पंजाब, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में न जाने कितने ऐसे अध्यापक हैं, जिनकी जगह कोई और पढ़ाता है। नियुक्ति पाने वाला केवल तनख़्वाह उठाता है, और अपनी जगह पढ़ाने वाले को उसका एक हिस्सा दे देता है। प्रधानाचार्य की भी इसमें मिलीभगत होती है। मोटी रक़म देकर किसी भी विषय में पीएचडी की थीसिस लिखवाने का एक पूरा कुचक्र मुद्दतों से चल रहा है। हज़ारों-लाखों में कोई-कोई थीसिस ही ढंग की होती है। बाक़ी सभी स्तरहीन, घिसे-पिटे शोध, कट-पेस्ट या खानापूर्ति वाले फील्ड वर्क पर आधारित होती हैं।

हमारे विश्वविद्यालय ज्ञानार्जन के केंद्र नहीं रह गए हैं। वे ज़्यादा से ज़्यादा कोर्स पूरा कराने के लिए होने वाली

टीचिंग की ज़िम्मेदारी ही पूरी कर पाते हैं। उन्हें मिलने वाली रेटिंग एक छलावा भर है, क्योंकि वह पीएचडी की डिग्रियां बांटने की संख्या पर आधारित होती है। मौलिकता और अकादमिक श्रेष्ठता से पूरी तरह से वंचित शोध-प्रबंधों के आकलन की इस रेटिंग में कोई भूमिका नहीं होती। कथित उच्च शिक्षा पाया छात्र जब मुंह खोलता है तो न ठीक से हिंदी बोल पाता है, न अंग्रेज़ी।

शिक्षा की बदहाली का सीधा संबंध बेरोज़गारी की समस्या से है। फिर भी शिक्षा हमारी प्राथमिकताओं में कहीं नीचे है। इस समय भारतीय शिक्षा परिदृश्य में चर्चा का प्रमुख विषय परीक्षाओं में होने वाली नक़ल और परीक्षाओं के परिणाम को प्रभावित करने वाले अन्य उपाय ही प्रमुखता से छाए हुए हैं।

विडम्बना है कि भारतीय समाज में शिक्षा को लेकर उत्साह तो है, लेकिन समाज शिक्षा की प्रक्रिया में ईमानदारी से भाग लेने के प्रति उतना उत्साही नहीं है जितनी उत्सुकता उसकी डिग्री और सर्टिफिकेट लेने में है। इस रवैये के पीछे का एक प्रमुख कारण वह व्यवस्था है, जिसने शिक्षा की पूरी प्रक्रिया को परीक्षा केंद्रित बना दिया है, जबकि यह पाठ्यक्रम केंद्रित होनी चाहिए थी। देखा जाए तो आज हमारे शिक्षण संस्थानों का पूरा ज़ोर परीक्षा लेने और सर्टिफिकेट देने पर हो गया है, जबकि अगर संस्थान पाठ्यक्रम निर्माण और उसके पालन पर ज़्यादा ध्यान दें तो परीक्षा पर उनको बहुत अधिक कार्य नहीं करना होगा।

देखा जाए तो आज हमारे शिक्षण संस्थानों का पूरा ज़ोर परीक्षा लेने और सर्टिफिकेट देने पर हो गया है, जबकि अगर संस्थान पाठ्यक्रम निर्माण और उसके पालन पर ज़्यादा ध्यान दें तो परीक्षा पर उनको बहुत अधिक कार्य नहीं करना होगा।

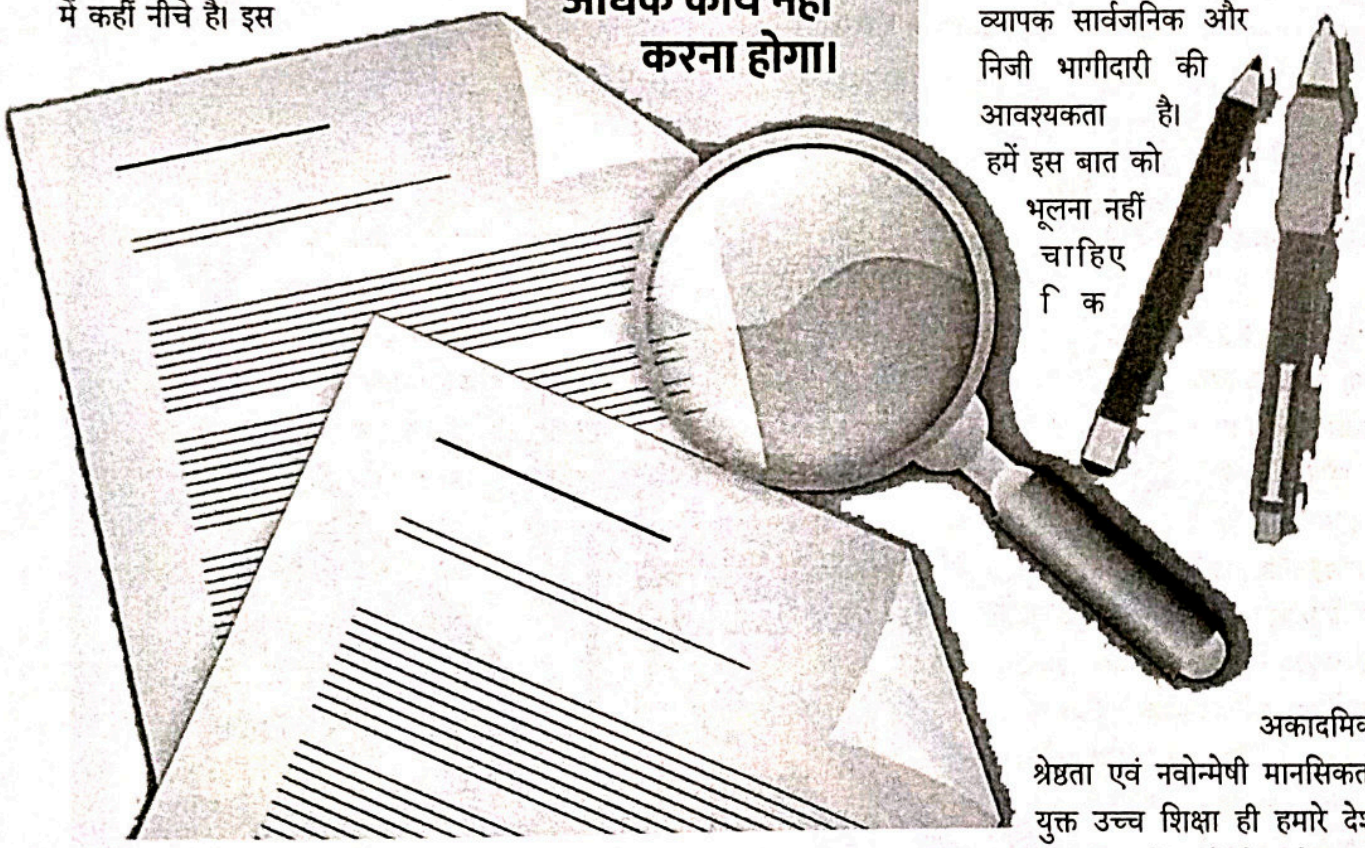

ऐसे समय में जब देश में पेपर लीक की घटनाएं और परीक्षा को प्रभावित करने वाले कुत्सित प्रयासों की शिकायतें लगातार बढ़ रही हों, तब हमें एक समाज के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियों को याद करना चाहिए। हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था के केंद्र में अकादमिक श्रेष्ठता को लाना होगा। इसके लिए व्यापक सार्वजनिक और निजी भागीदारी की आवश्यकता है। हमें इस बात को भूलना नहीं चाहिए कि अकादमिक श्रेष्ठता एवं नवोन्मेषी मानसिकता युक्त उच्च शिक्षा ही हमारे देश व समाज को आगे ले जाने वाली कुंजी है। छात्रों को भी यह बात ध्यान में रखनी होगी कि उन्हें एक सभ्य समाज का सच्चा नागरिक बनना भी आवश्यक है। उसे एक ऐसा इन्सान बनना है जो अकादमिक श्रेष्ठताओं से परिपूर्ण हो, जो ईमानदारी से जीवन में हर प्रकार से सफल हो सके।

■■

कान्ति के ये सब्सक्राइबर

जिन्होंने अभी तक अपनी ख़रीदारी की रक़म जमा नहीं की है,

बराय मेहरबानी

इस QR Code

के ज़रिये जल्द अदायगी करें।

Name: KANTI

Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk



नोट :

अदायगी के बाद

स्क्रीनशॉट

इस नम्बर पर

(9818799223)

ज़रूर भेजें।

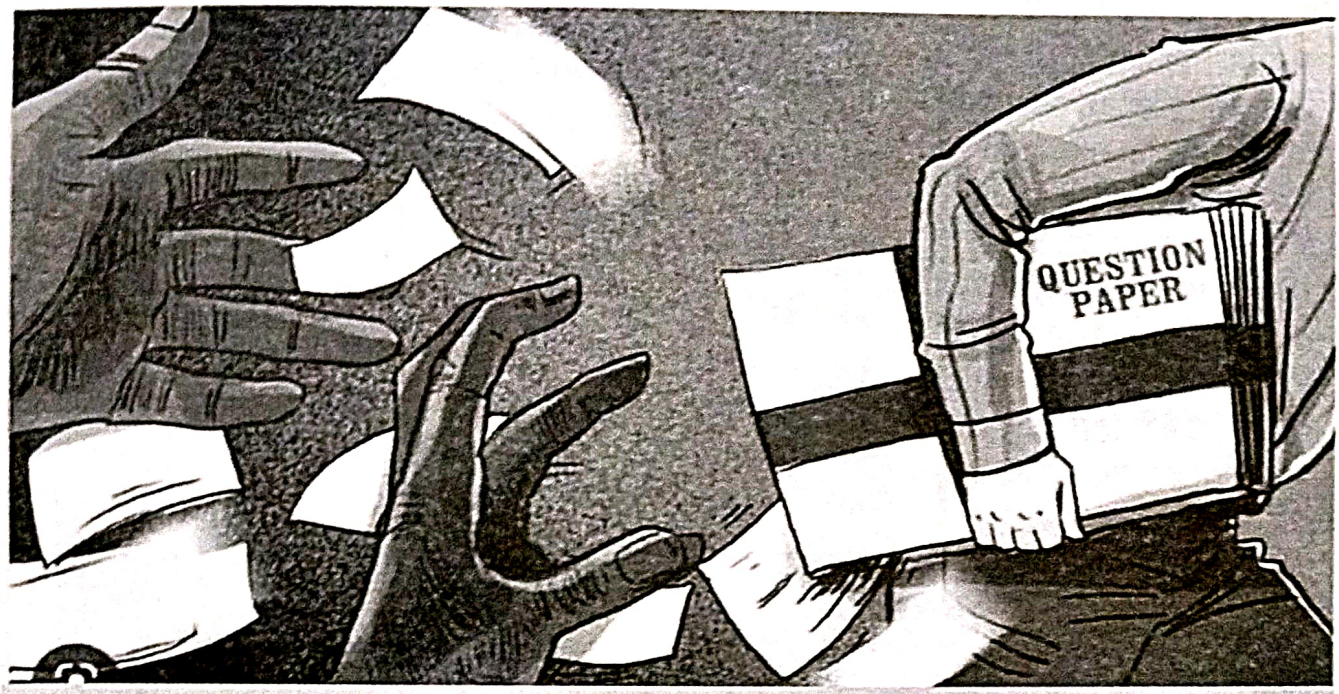

प्रश्नों के घेरे में आती परीक्षाएं

डॉक्टरी की प्रवेश परीक्षा 'नीट' में अनेक तरह की धांधली, मक्कारी और पेपर-लीक से लाखों परिवारों का सपना टूटने के साथ ही एनटीए और सरकार की साख को भी भारी धक्का लगा है। मेडिकल, इंजीनियरिंग, फार्मेसी और यूनिवर्सिटी के कॉलेजों में प्रवेश के लिए परीक्षा आयोजित करने वाली 'नेशनल टेस्टिंग एजेंसी' को सोशल मीडिया में 'नेशनल ठगी एजेंसी' नाम से शर्मसार किया जा रहा है।

राज्यों में पुलिस की जांच, संदेहजनक तरीक़े से गठित आंतरिक जांच समिति, तमाम हाईकोर्ट में सुनवाई और सुप्रीम कोर्ट में लम्बी तारीख़ से मामला और बिगड़ रहा है। परीक्षा में धांधली का योग्य छात्रों पर कितना प्रभाव पड़ता है, उसकी दो बानगी देना ज़रूरी है।

कई साल पहले सीबीएसई की कक्षा 12 की वार्षिक परीक्षा में एक मेधावी लड़की ने एनसीईआरटी की किताबों से अलग हटकर मौलिक और श्रेष्ठ जवाब दिए, लेकिन दकियानूसी परीक्षक ने उस सवाल में नंबर नहीं दिए। हाईकोर्ट में मेरी बहस के बाद कॉपी की दोबारा जांच हुई। जज ने मौखिक तौर



पर यह माना कि ऐसे श्रेष्ठ जवाब पर पूरे नंबर मिलने चाहिए, लेकिन लिखित आदेश पारित करने से इन्कार कर दिया। उस घटना के बाद सीबीएसई ने नीतियों में बदलाव किया, लेकिन समय पर सार्थक न्याय नहीं मिलने से उस लड़की का आत्मविश्वास लम्बे समय के लिए चरमरा गया।

दूसरा मामला क्लैट का है, जिसके माध्यम से विधि कॉलेज में प्रवेश होते हैं। पांच साल पहले बिहार में नक़ल और चीटिंग से कुछ बच्चों ने क्लैट में टॉप रैंक हासिल करके भारत के सर्वश्रेष्ठ लॉ कॉलेज में एडमिशन हासिल कर लिया। संदेह के बावजूद उन पर कार्रवाई नहीं हुई, क्योंकि इससे पूरी परीक्षा पर सवाल खड़े हो जाते। लेकिन कॉलेज की आंतरिक परीक्षा में छात्रों के फेल होने पर हेराफेरी की हक़ीक़त सामने आने के बाद विद्यार्थियों का सिस्टम पर भरोसा डगमगा गया।

पेपर लीक हुआ है तो क्या पूरी परीक्षा रद्द नहीं होनी चाहिए? परीक्षा रद्द होने पर क्या बाक़ी निर्दोष छात्रों के साथ ज़्यादती नहीं होगी? इन विवादों के चक्रव्यूह में फंसने के बजाय मध्यम-मार्ग पर एक्शन लिया जा सकता है। जिन सेंटर पर नक़ल, फ़र्ज़ीवाड़ा और ग़लत

कई साल पहले सीबीएसई की कक्षा 12 की वार्षिक परीक्षा में एक मेधावी लड़की ने एनसीईआरटी की किताबों से अलग हटकर मौलिक और श्रेष्ठ जवाब दिए, लेकिन दकियानूसी परीक्षक ने उस सवाल में नंबर नहीं दिए। हाईकोर्ट में मेरी बहस के बाद कॉपी की दोबारा जांच हुई। जज ने मौखिक तौर पर यह माना कि ऐसे श्रेष्ठ जवाब पर पूरे नंबर मिलने चाहिए, लेकिन लिखित आदेश पारित करने से इनकार कर दिया। उस घटना के बाद सीबीएसई ने नीतियों में बदलाव किया, लेकिन समय पर सार्थक न्याय नहीं मिलने से उस लड़की का आत्मविश्वास लम्बे समय के लिए चरमरा गया।

तरीक़े से ग्रेस मार्क देने के आरोप हैं, ऐसे सभी संदिग्ध बच्चों का नए सिरे से टेस्ट कराने से मेरिट का सच सामने आ जाएगा।

इसके अलावा सभी संदिग्ध छात्रों, उनके पैरेंट्स, कोचिंग संस्थान और परीक्षा केंद्र के इंचार्ज लोगों का तत्काल प्रभाव से नार्को टेस्ट होना चाहिए। इससे मेरिट वाले छात्रों का सिस्टम में भरोसा बढ़ने के साथ भविष्य में धांधली करने वालों के मंसूबे ध्वस्त होंगे। सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा है कि सभी मामलों को अदालतों के पाले में धकेलना ग़लत है। अगली तारीख़ के पहले ही पारदर्शी व निष्पक्ष तरीक़े से कार्रवाई करके सरकार को जनता का दिल जीतने की कोशिश करनी चाहिए। अन्यथा तमिलनाडु सरकार की यह बात सही साबित होगी कि नीट की परीक्षा प्रणाली ग़रीब और ग्रामीण विरोधी है।

राजनीतिक हस्तक्षेप, कोचिंग माफिया, धन-बल के बढ़ते प्रभाव से परीक्षाओं में धांधली की वजह से शिक्षा के साथ नौकरियों की गुणवत्ता गिरने से भारत में शैक्षणिक अराजकता बढ़ रही है।

स्मार्ट सिटी की बात करने वाले देश में जांच की उलटबांसियों के बजाय जल्द न्याय क्यों नहीं मिलता? व्यापमं घोटाले से साफ़ है कि पुलिस और सीबीआई की लम्बी जांच से पीड़ित लोगों का भविष्य अंधेरी सुरंग के हवाले हो जाता है। अपराधी सांसदों से जैसे लोकतंत्र शर्मसार होता है, उसी तरह कोचिंग माफिया और सॉल्वर गैंग की मिलीभगत से अयोग्य और धनपशुओं के मेडिकल प्रोफ़ेशन में आने से समाज का अस्तित्व ख़तरे में पड़ सकता है।

भारत में पीआईएल यानी जनहित याचिका के नाम पर पब्लिसिटी का कारोबार बढ़ने के बावजूद पीड़ित लोगों को न्याय नहीं मिलना चिंताजनक है।



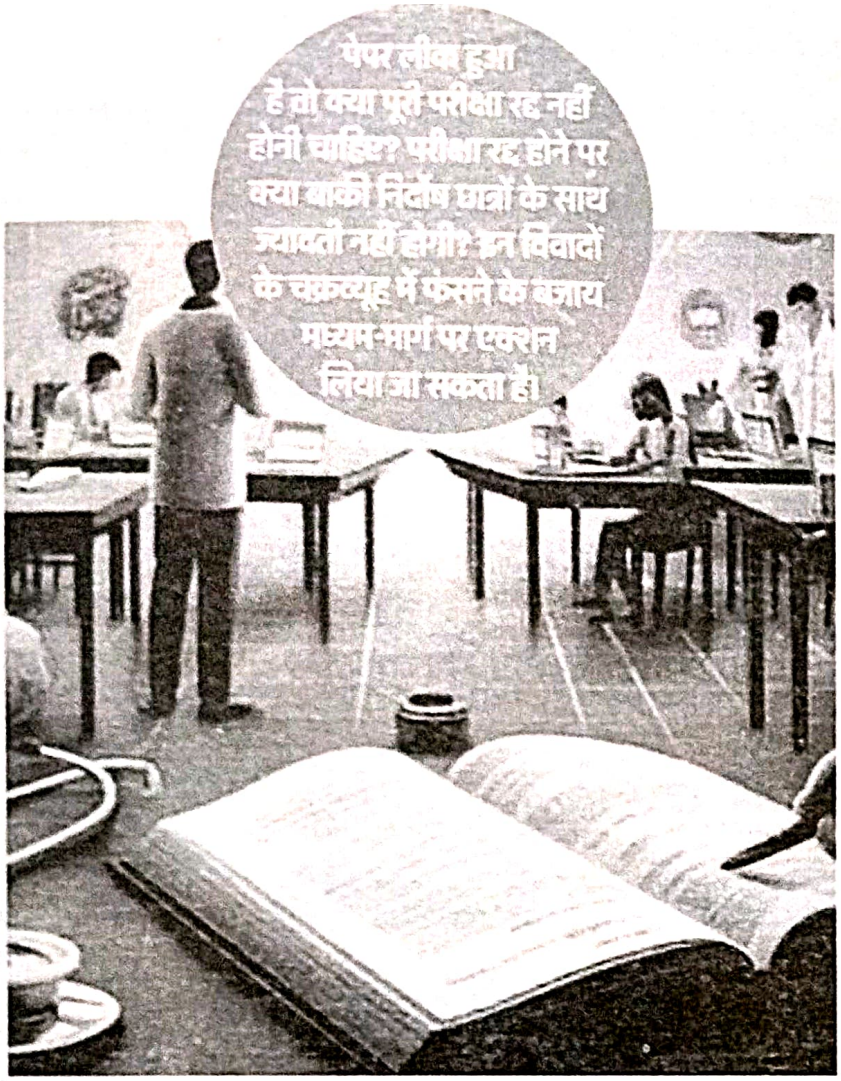

वर्ष 2022 की नीट परीक्षा से जुड़े पेंडिंग मामले को अर्थहीन बताते हुए सुप्रीम कोर्ट के जजों ने पिटीशन को निरस्त कर दिया है।

यह मामला व्यापमं की तरह बेपटरी न हो, इसके लिए हाईकोर्ट में चल रहे सभी मामलों को सुप्रीम कोर्ट को अपने पास ट्रांसफ़र कराना चाहिए। इंतिज़ार किए बग़ैर सुप्रीम कोर्ट की वैकेशन बेंच में तत्काल प्रभाव से इस पर सुनवाई कराने की ज़रूरत है।

अपराध और धांधली के सभी पहलू अदालत के सामने आ सकें, इसके लिए एमिकस क्यूरी (न्याय-मित्र वकील) नियुक्त करने की ज़रूरत है। अगर नीट की पवित्रता प्रभावित हुई है तो समय पर न्याय देकर जजों को संविधान की शपथ पूरी करनी चाहिए। *(साभार : AFEIAS)*

■■

❊ अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जबकि वो तुम्हें बुलाते हैं उस चीज़ की तरफ जिसमें तुम्हारे लिए ज़िंदगी है। (क़ुरआन) ❊ उस शख़्स से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो अल्लाह की तरफ बुलाये और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ। (क़ुरआन)

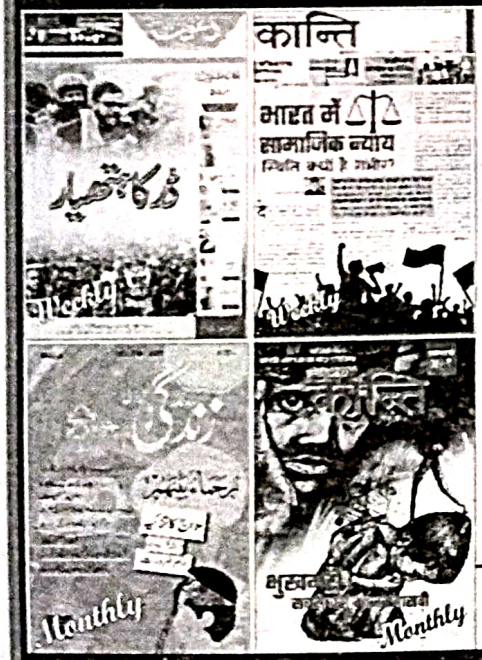

हिन्दुस्तान के मशहूर दीनी-इल्मी, फिक्री और म्यारी अख़बार व रसाइल (पत्रिकाओं) का मुताला(अध्ययन)कीजिए

इस सिलसिले में हमारी ख़िदमात हासिल कीजिए :

पेपर – पत्रिका	प्रति कापी	सालाना खरीददारी
✪ कान्ति साप्ताहिक अख़बार	7/-	350/-
✪ कान्ति मासिक पत्रिका	30/-	350/-
✪ दावत उर्दू अख़बार साप्ताहिक	15/-	750/-
✪ जिंदगी–ए–नौ उर्दू महाना	35/-	400/-

सालाना खरीददारी व ग्राहक बनने के लिए राब्ता करें :

मुहम्मद शहज़ाद (उत्तर प्रदेश), मोबाइल नं। : 9808080806

“

ईश्वर पर दृढ़
आस्था के साथ अडिग रहें ,
अच्छे कर्म करते रहें, जिस
चीज़ से रोका गया है रुके रहें,
ईश्वरीय आदेश को मानें,
ईशपरायणता के साथ उपकार
की नीति अपनाए रखें, तो
ईश्वर ऐसे सुचरित्र लोगों से
बहुत प्रेम करता है ।

”

(कुरआन, 5 : 93)

A Well Wisher

Bihar



व्यवस्था, भरोसा और जवाबदेही

इस समय देश भर में एक ऐसी स्थिति बन गई है कि किसी एक प्रतियोगी या प्रवेश परीक्षा में अनियमितता को लेकर उठे सवाल शांत भी नहीं होते तब तक इसी प्रकार का कोई दूसरा मामला सामने आ जाता है। यह निराशाजनक है कि प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न पत्र लीक करने वाले गिरोह तो सशक्त होते जा रहे हैं, लेकिन उन पर लगाम लगाने वाले उपाय निष्प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं। जिस तरह प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता भंग करने वाले बेलगाम हैं, उसी तरह नक़ल माफिया भी। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि स्कूली और विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षाओं में नक़ल का रोग बढ़ता जा रहा है।

ऐसे में सवाल उठता है कि कोई ठोस परीक्षा नीति क्यों नहीं बन पा रही है, जिससे स्कूली परीक्षाओं से लेकर प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता क़ायम हो सके। प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न पत्र इसलिए भी लीक होते हैं, क्योंकि उन्हें लीक कराने वालों को कठोर सज़ा का भय नहीं। जब प्रवेश एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़ी के चलते लाखों छात्रों को परेशानी उठानी पड़ती है तो उनका सरकार पर से भरोसा



उठता है। प्रश्न पत्र लीक होने की घटनाएं युवाओं में असंतोष उत्पन्न कर रही हैं। चूंकि ऐसी घटनाएं लगातार घट रही हैं, इसलिए उनका असंतोष बढ़ता जा रहा है। समस्या यह है कि सरकारें नौकरशाही को जवाबदेह नहीं बना पा रही हैं।

क़रीब-क़रीब सभी राज्यों में प्रश्न पत्र लीक हो चुके हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न पत्र इसलिए भी लीक हो रहे हैं, क्योंकि उनका आयोजन कराने वाली संस्थाएं अपना काम पुराने तरीक़ों से करती हैं। प्रश्न पत्र लीक होने के मामले इसीलिए बढ़ रहे हैं, क्योंकि परीक्षाओं के आयोजन में बाहरी एजेंसियों की मदद ली जा रही है। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि इन एजेंसियों के लोग ही पैसा कमाने के लिए धांधली करते और कराते हैं। समझना कठिन है कि प्रतियोगी परीक्षाओं का संचालन बाहरी एजेंसियों की मदद से क्यों कराया जाता है और वह भी ठेके पर। जब तक ठेके पर परीक्षाएं कराई जाती रहेंगी, तब तक उनकी विश्वसनीयता भंग होती रहेगी।

प्रश्न पत्र लीक होने का एक बड़ा कारण उन्हें पहले से तैयार कर छापना और फिर उन्हें विभिन्न शहरों में भेजने की परिपाटी है। कई बार इसी प्रकिया में कहीं न कहीं सेंध लग जाती है। आख़िर आज के इस तकनीकी युग में पुराने तौर-तरीक़ों से परीक्षाएं क्यों आयोजित की

जाती हैं? ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि प्रश्न पत्रों को पहले से छापने और शहर-शहर भेजने के बजाय उन्हें परीक्षा होने के कुछ घंटे पहले अंतिम रूप दिया जाए और फिर उन्हें सूचना तकनीक के ज़रिये संबंधित केंद्रों में भेजा जाए। परीक्षा शुरू होने से पहले परीक्षा केंद्रों में ही प्रश्न पत्र की प्रतियां निकालने की व्यवस्था की जाए तो परीक्षाओं में सेंध लगने से रोका जा सकता है। प्रश्न यह भी है कि प्रश्न पत्रों के कई सेट क्यों नहीं बनाए जाते, ताकि यदि कहीं कोई प्रश्नपत्र लीक भी हो जाए तो प्रदेश या देश भर में परीक्षाएं रद्द न करनी पड़ें।

चिंता का विषय है। प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़ी रोकने के लिए केंद्र सरकार ने एक नया और कठोर क़ानून बना दिया है। कुछ राज्य सरकारें भी कठोर क़ानून बना रही हैं। ऐसा होना ही चाहिए, लेकिन क्या केवल कठोर क़ानून प्रश्न पत्र लीक करने वालों के दुस्साहस का दमन करने में सक्षम होंगे? यह प्रश्न इसलिए, क्योंकि अभी तक जिन्होंने प्रश्न पत्र लीक करने-कराने का काम किया, उन्हें कोई कठोर सज़ा नहीं दी जा सकी है। सवाल यह भी है कि क्या ये क़दम छात्रों और अभिभावकों की परेशानी दूर कर सकेंगे?

इसमें सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों को गंभीरता दिखानी होगी। सभी दलों को विशेषकर सत्तारूढ़ दल को देश के सबसे गंभीर प्रश्नों पर दलबंदी के घेरे से उठकर विचार-विमर्श की मर्यादा बनानी चाहिए। शिक्षा और संस्कृति ऐसे ही विषय हैं।

शिक्षा, परीक्षा एवं प्रतिभाओं का चयन-प्रशिक्षण और सुयोग्य युवाओं को उचित स्थान देना देश के प्रत्येक वर्ग के हित में है। सभी दलों के छोटे-बड़े नेताओं, कार्यकर्ताओं के बाल-बच्चे, संबंधी, मित्र-पड़ोसी भी इससे प्रभावित होते हैं। अतः हर हाल में ऐसी

आख़िर आज के इस तकनीकी युग में पुराने तौर-तरीक़ों से परीक्षाएं क्यों आयोजित की जाती हैं? ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि प्रश्नपत्रों को पहले से छापने और शहर-शहर भेजने के बजाय उन्हें परीक्षा होने के कुछ घंटे पहले अंतिम रूप दिया जाए और फिर उन्हें सूचना तकनीक के ज़रिये संबंधित केंद्रों में भेजा जाए।

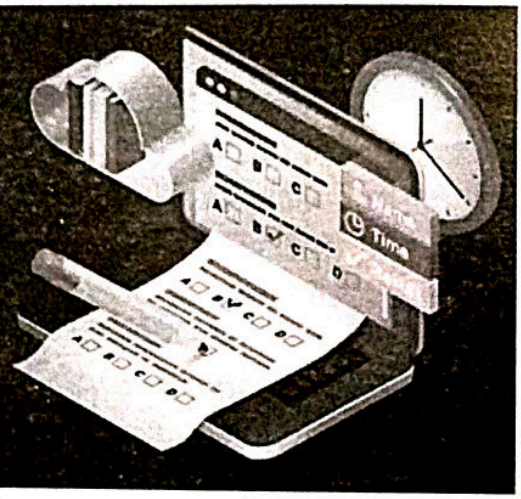

परीक्षाओं को विश्वसनीय बनाने में सफलता इसलिए नहीं मिल पा रही है, क्योंकि आवश्यक इच्छाशक्ति का परिचय नहीं दिया जा रहा है। आख़िर प्रतियोगी परीक्षाएं आयोजित करने वाली संस्थाएं संघ लोक सेवा आयोग से कोई सीख लेने को क्यों नहीं तैयार हैं? संघ लोक सेवा आयोग प्रतिवर्ष लाखों छात्रों की परीक्षा लेता है। यदि यह आयोग अपनी परीक्षाओं की शुचिता, विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा बनाए रखने में सक्षम है तो फिर एनटीए या इस जैसी अन्य संस्थाएं क्यों नहीं हैं?

वास्तव में परीक्षाओं की विश्वसनीयता पर संदेह पैदा होना राष्ट्रीय

ये सभी क़दम संतोष की बात हो सकते हैं, लेकिन यह क़वायद मात्र रोग के लक्षणों का उपचार करना है। मूल समस्या कहीं अधिक गहरी है, जिसे राजनीति से ऊपर उठकर देखने की ज़रूरत है। इसलिए और भी, क्योंकि राज्य सरकारों की ओर से आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न पत्र भी लीक होते रहते हैं और उनसे भी लाखों छात्र प्रभावित हुए हैं।

संसद में सभी दलों के ज़िम्मेदार नेताओं को मिलकर इस पर विचार करना चाहिए। इस विषय को दलीय राजनीति की उठापटक से अलग रखकर गहन मंथन से ही समाधान मिल सकेगा।

समस्याओं को दलबंदी का मुद्दा बनाना बुद्धिमानी नहीं है।

शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का विषय मानना इससे जुड़ी समस्याओं के वास्तविक और पुख़्ता समाधान होना चाहिए। इतने बड़े स्तर पर और तरह-तरह की प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन एक ही केंद्रीय एजेंसी से कराने में तमाम समस्याएं जुड़ी हैं। देश भर में हज़ारों-हज़ार लोगों की भागीदारी से ही इनका आयोजन होता है। तरह-तरह के निहित स्वार्थी लोग इसे भी अन्य व्यापार-धंधों की तरह एक लाभ का व्यवसाय भर मान लेते हैं।

सैकड़ों परीक्षा केंद्रों में से यदि दो-

चार जगह भी कदाचार हुआ तो असंख्य छात्रों के परिश्रम, प्रतिभा और विश्वास के साथ खिलवाड़ होता है। इस प्रकार, यह एक आम सामाजिक चरित्रहीनता का मामला भी बनता है, जिसे केवल कठोर क़ानून के भरोसे ठीक करने का प्रयास कारगर नहीं हो सकेगा।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने देश के संविधान के लोकार्पण के अवसर पर बहुत सारगर्भित टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि कैसा भी उत्तम संविधान या विधान क्यों न बना लिया जाए, उसका परिणाम उन लोगों के चरित्र और योग्यता पर निर्भर करेगा, जो उसे लागू करेंगे और करवाएंगे। इस अमृत वचन को हमारे नेताओं और नीति निर्माताओं को सदैव गांठ बांधकर रखनी चाहिए।

उन्हें समझना होगा कि हर महत्वपूर्ण स्थान, संस्थान और एजेंसी के कार्य तभी उत्तम स्तर के होंगे, जब सर्वोत्तम एवं सुयोग्य व्यक्तियों को उनकी ज़िम्मेदारी दी जाए। इसका शिक्षा क्षेत्र में सर्वाधिक ध्यान रखना आवश्यक है, जिससे अंततः सभी अन्य क्षेत्र स्वतः प्रभावित होते हैं। विदेशों में भारत की अकादमिक छवि भी इससे जुड़ी है।

चूंकि देश में भी अच्छी स्कूली शिक्षा, बेहतर उच्च शिक्षा और उत्तम प्रशिक्षण की संस्थाओं से ही हर क्षेत्र को अपने अधिकारी एवं कर्मचारी मिलते हैं, इसलिए हमें और सतर्क रहना होगा। शिक्षा क्षेत्र को पवित्र क्षेत्र मानकर ही हमारे नेताओं और अधिकारियों को काम करने की ज़रूरत है। इसे राजनीति, गुटबाजी, निजी स्वार्थ अथवा दल या संगठन के स्वार्थ-साधन से मुक्त करने की आवश्यकता है।

यही वह बिंदु है, जहां सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष को सच्ची उदारता और राष्ट्रीय भावना रखने की अपरिहार्य आवश्यकता है। हमारे नेताओं एवं नीति-नियंताओं को कम से कम शिक्षा क्षेत्र को स्वार्थी राजनीति, संकीर्णता और लोभ से मुक्त रखने का प्रण लेना चाहिए। यह लाखों बच्चों, युवाओं, और उनके अभिभावकों के विश्वास की रक्षा करने का भी विषय है।



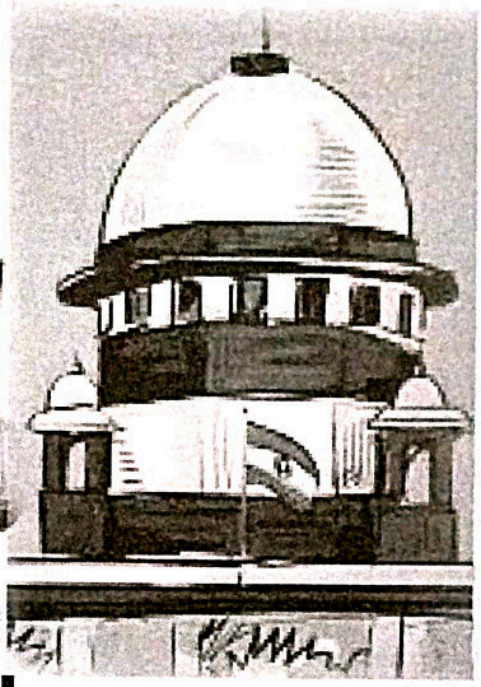

शिक्षा, परीक्षा एवं प्रतिभाओं का चयन-प्रशिक्षण और सुयोग्य युवाओं को उचित स्थान देना देश के प्रत्येक वर्ग के हित में है। सभी दलों के छोटे-बड़े नेताओं, कार्यकर्ताओं के बाल-बच्चे, संबंधी, मित्र-पड़ोसी भी इससे प्रभावित होते हैं। अतः हर हाल में ऐसी समस्याओं को दलबंदी का मुद्दा बनाना बुद्धिमानी नहीं है। शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का विषय मानना इससे जुड़ी समस्याओं के वास्तविक और पुख़्ता समाधान होना चाहिए।

यदि हमारे नेता इस पर सच्ची भावना दिखाएंगे तो पूरे समाज को भी बल मिलेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय धंधेबाज़ों, चरित्रहीन दलालों आदि पर अंकुश लगाना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य हो चला है।

भारत जैसे विशाल देश में हर चीज़ का केंद्रीकरण करके गुणवत्ता की गारंटी सुनिश्चित करना कठिन है। अतः हर क्षेत्र और विभाग के विशिष्ट संस्थानों में कार्य-भार बांटकर गुणवत्ता सुनिश्चित करने और आदर्श बनाकर दिखाने को प्रोत्साहन देने पर विचार करना चाहिए।

इसे खानापूरी नहीं, अपितु अच्छी शिक्षा, अच्छी परीक्षा, अच्छा प्रशिक्षण और अच्छे शिक्षकों-व्यवस्थापकों को सम्मानित करने पर भी ध्यान देना चाहिए। इससे अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। परीक्षाओं में धांधली ऐसा विषय है, जिस पर राज्यों और केंद्र के नीति-नियंताओं को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। ■■



पद्मजा घोरपड़े

पहाड़ पर चढ़ने के लिए

पहाड़ पर चढ़ने के लिए
चाहिए होते हैं
पहाड़-से पैर
और
समंदर लांघने के लिए
समंदर-सी आंखें
आकाश नापने के लिए
आकाश-सी बांहें

नहीं होता
यह सब कुछ
हमारे पास
तब हम
ढेला दिखाकर
कंकड़ फेंककर
पतंग उड़ाकर
घोषित करते रहते हैं
अपने
पहाड़ होने को!
समंदर होने को!!
आकाश होने को!!!



समसामयिक

तबाना नूरी

मणिपुर
सवा साल बाद
नहीं बदले हालात

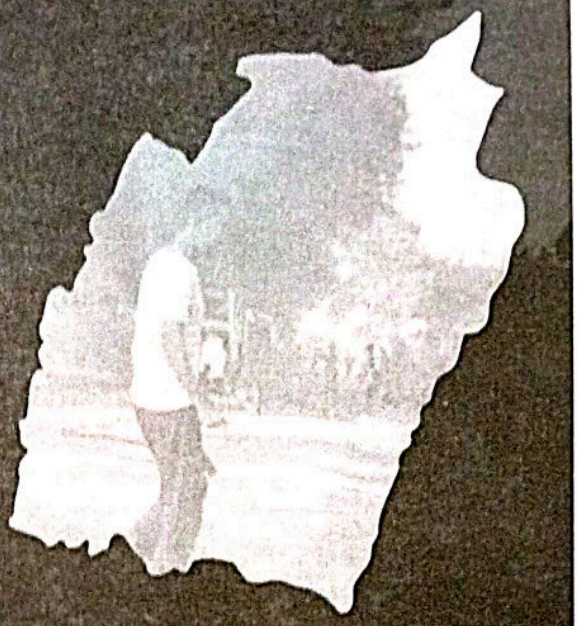

मणिपुर में अभी भी ख़ूनी संघर्ष समाप्त नहीं हो पाया है। शुरू से ही वहां शांति बहाली के प्रयास शिथिल नज़र आते रहे हैं। प्रशासन ने इच्छाशक्ति दिखाई होती, तो बहुत पहले इस समस्या का समाधान निकल गया होता। मगर उनकी भूमिका संदिग्ध बनी हुई है। इतने लंबे समय से वहां अशांति का वातावरण है, मगर उसे हल करने की कोशिश नहीं की गई। पिछले दस वर्षों से वहां शांति का वातावरण था। इसे लेकर विपक्षी दल लगातार सवाल उठाते रहे हैं। संसद में भी प्रश्न पूछे गए, मगर कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिल सका।

लगभग सवा साल पहले मणिपुर में कुकी और मैतेई समुदाय के बीच ख़ूनी संघर्ष भड़क उठा था, मगर न तो राज्य और न केंद्र सरकार मणिपुर के ख़ूनी संघर्ष को रोक पाई है। शुरू में ज़रूर केंद्रीय गृहमंत्री वहां गए थे, मगर फिर कोई उल्लेखनीय कार्रवाई नहीं हो सकी। बाद में सर्वोच्च न्यायालय ने मामले का संज्ञान लेते हुए जांच और कार्रवाई के लिए समितियां गठित कर दी, मगर उसका भी कोई नतीजा नज़र नहीं आ रहा।

मणिपुर के लोगों का सरकार और प्रशासन पर से भरोसा उठ चुका है। गांव वाले खुद सुरक्षा दल बना कर पहरेदारी करते और उपद्रवियों से बचने की कोशिश करते हैं। यानी वहां के लोगों को एक तरह से उनके हाल पर छोड़ दिया गया है।

इस संघर्ष में अब तक सवा दो सौ से अधिक लोगों के मारे जाने, चार सौ से अधिक लोगों के घायल होने, हज़ारों घरों के जलाए जाने और साठ हज़ार से अधिक लोगों के विस्थापित होकर राहत शिविरों में शरण लेने के तथ्य उजागर हैं। सरकारों को अब यह बहाना ज़रूर मिल गया है कि मणिपुर के संघर्ष को रोकने की कार्रवाई सर्वोच्च अदालत की निगरानी में चल रही है, इसलिए वे इसमें बहुत हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं। मगर यह उनका अपनी ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेने का एक और तरीक़ा है।

यह समझना मुश्किल है कि कैसे कोई भी कल्याणकारी सरकार अपने नागरिकों को इस तरह मारकाट करते देखती रह सकती है। राज्य सरकार तो इस मामले में शुरू से नाकाम साबित हुई है, मगर केंद्र सरकार ने इस पर अपेक्षित गंभीरता क्यों नहीं दिखाई, समझ से परे है। जिस तरह वहां महिलाओं को निर्वस्त्र करके घुमाया गया, उनके साथ

सामूहिक बलात्कार किया गया, उससे पूरी दुनिया में देश की छवि ख़राब हुई।

मणिपुर के लोगों का सरकार और प्रशासन पर से भरोसा उठ चुका है। गांव वाले ख़ुद सुरक्षा दल बनाकर पहरेदारी करते और उपद्रवियों से बचने की कोशिश करते हैं। यानी वहां के लोगों को एक तरह से उनके हाल पर छोड़ दिया गया है।

हाल में ही प्रधानमंत्री ने कहा है कि मणिपुर में स्थिति सामान्य हो रही है और विपक्ष इस पर राजनीति करके मुद्दे को न भड़काए, लेकिन क्या सचमुच ऐसा है? क्या वाक़ई मणिपुर में सवा साल बाद भी हालात सामान्य हो रहे हैं? जिस दिन प्रधानमंत्री यह दावा कर रहे थे उसी दिन सुप्रीम कोर्ट की एक बेंच ने सख़्त लहजे में कहा कि हमें राज्य सरकार पर भरोसा नहीं है जो एक विचाराधीन क़ैदी का इलाज इसलिए नहीं करा रही है, क्योंकि वह कुकी समुदाय से है।

हाल में ही प्रधानमंत्री ने कहा है मणिपुर में स्थिति सामान्य हो रही है और विपक्ष इस पर राजनीति करके मुद्दे को न भड़काए, लेकिन क्या सचमुच ऐसा है? क्या वाक़ई मणिपुर में सवा साल बाद भी हालात सामान्य हो रहे हैं? जिस दिन प्रधानमंत्री यह दावा कर रहे थे उसी दिन सुप्रीम कोर्ट की एक बेंच ने सख़्त लहजे में कहा कि हमें राज्य सरकार पर भरोसा नहीं है जो एक विचाराधीन क़ैदी का इलाज इसलिए नहीं करा रही है, क्योंकि वह कुकी समुदाय से है।



इलाज न करने का कारण बताने वाले हाईकोर्ट और प्रशासनिक आदेशों को देख सुप्रीम कोर्ट चौक गया। उसमें कहा गया था कि राज्य में हालात सामान्य नहीं हैं और अगर इस बंदी को अस्पताल में भेजा गया तो क़ानून-व्यवस्था और बिगड़ सकती है। अगर कोई विचाराधीन क़ैदी जानलेवा बीमारी से ग्रस्त हो, दर्द से कराह रहा हो और महीनों से जेल अधिकारी उसका एक समुदाय विशेष का होने के कारण इलाज न करा रहे हों, और अंततः उसे देश की सबसे बड़ी कोर्ट में आना पड़ा हो तो क्या इसे सामान्य स्थिति कहा जाएगा?

अगर ऐसे मुद्दे पर विपक्ष राजनीति करता भी है तो यह उसका मौलिक दायित्व है। सरकार की विफलताओं को जनमानस में लाना प्रजातंत्र की पहली शर्त है। हां, उस पर सरकार कैसे प्रतिक्रिया करती है यह देखा जाना चाहिए।

सरकार के तमाम दावों के बावजूद आज भी मणिपुर के हालात में कोई बड़ा बदलाव आता नहीं दिख रहा है। ज़ाहिर है, मुख्य रूप से मैतेई और कुकी समुदायों के बीच चल रहे हिंसक टकराव की आग में मणिपुर झुलस रहा है और इस पर क़ाबू पाने में सरकार नाकाम रही है।

दरअस्ल, लोकतंत्र और शासन के बुनियादी सिद्धांतों के तहत कम से कम सरकार को इस बात का ध्यान रखना

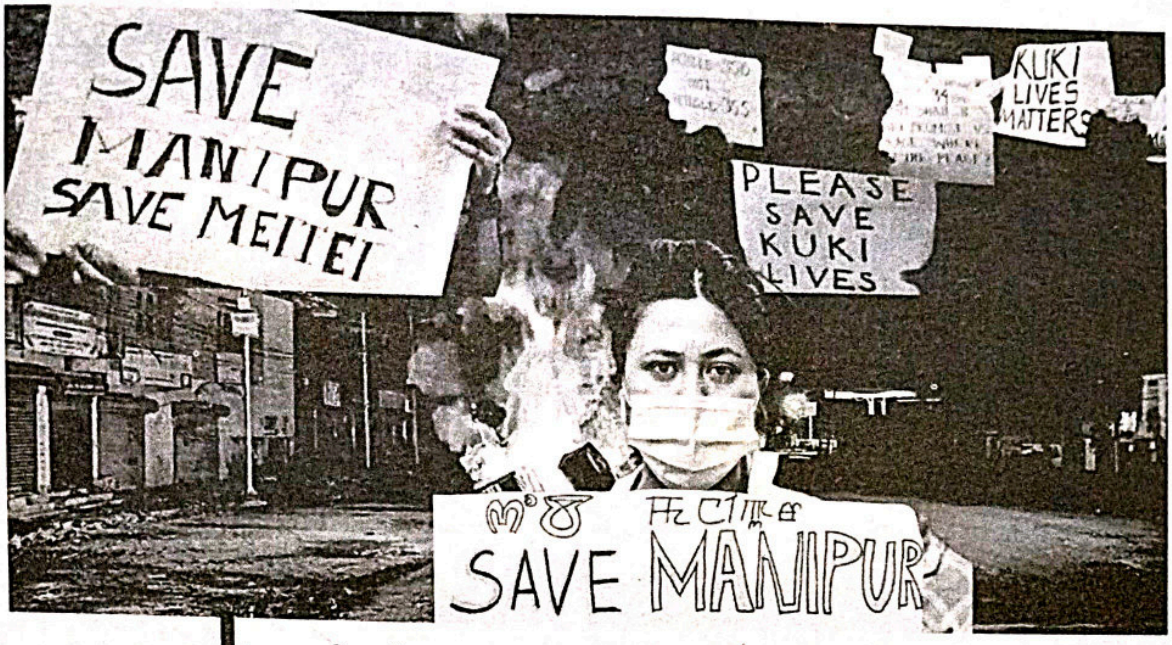

हालत यह है कि राज्य में दो समुदायों के बीच हिंसा के एक वर्ष से ज़्यादा बीत चुके हैं, सैकड़ों से लोग मारे जा चुके हैं और आज भी सरकार शांति क़ायम कर पाने में नाकाम है। एक लोकतांत्रिक कही जाने वाली सरकार के लिए इससे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति और क्या हो सकती है कि सुप्रीम कोर्ट को यह टिप्पणी करनी पड़े कि 'उसे मणिपुर सरकार पर भरोसा नहीं है।'

चाहिए कि वह इस संघर्ष के दौरान किसी ख़ास तबक़े के पक्ष में या किसी के ख़िलाफ़ न दिखे। मगर मणिपुर में सरकार पर ऐसे आरोप कई बार लगाए गए कि वह मैतेई समुदाय के लिए नरम रुख़ और कुकी समुदाय के प्रति उपेक्षा का भाव रखती है। इस क्रम में बीते दिनों सुप्रीम कोर्ट ने सरकार के प्रति सख़्त नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए उसे इस बात के लिए कठघरे में खड़ा किया कि एक व्यक्ति को सिर्फ़ इसलिए अस्पताल नहीं ले जाया गया, क्योंकि वह अल्पसंख्यक कुकी समुदाय से था।

ग़ौरतलब है कि मणिपुर में अब भी कुकी और मैतेई समुदाय के बीच टकराव जारी है। मगर कम से कम सरकार की ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपने क्षेत्राधिकार में हर नागरिक के प्रति समान बर्ताव करे, बिना किसी भेदभाव के सबके लिए सुरक्षित और सहज जीवन सुनिश्चित करे। ज़रूरत इस बात की है कि राज्य सरकार किसी समुदाय के प्रति पूर्वाग्रहों के बिना शांति-व्यवस्था क़ायम करे। किसी बीमार या ज़रूरतमंद व्यक्ति की मदद से बचने के लिए अगर क़ानून-व्यवस्था बिगड़ने की आशंका को कारण बताया जाता है, तो सवाल है कि इसे बहाल करने और रखने की ज़िम्मेदारी किसकी है?

हालत यह है कि राज्य में दो समुदायों के बीच हिंसा के एक वर्ष से ज़्यादा बीत चुके हैं, सैकड़ों लोग मारे जा चुके हैं और आज भी सरकार शांति क़ायम कर पाने में नाकाम है। एक लोकतांत्रिक कही जाने वाली सरकार के लिए इससे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति और क्या हो सकती है कि सुप्रीम कोर्ट को यह टिप्पणी करनी पड़े कि 'उसे मणिपुर सरकार पर भरोसा नहीं है।' ■■

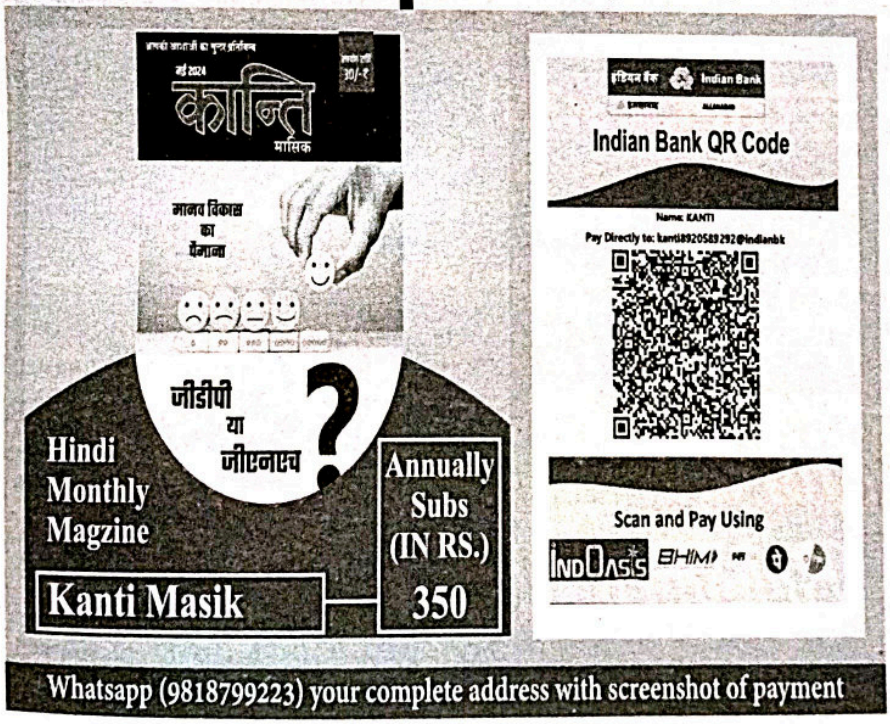

“

निश्चय ही जो मर्द और जो औरतें मुस्लिम हैं, मोमिन हैं, आज्ञाकारी हैं, सत्यवादी हैं, धैर्यवान हैं, अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं, सदक़ा (दान) देने वाले हैं, रोज़े (व्रत) रखने वाले हैं, अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की रक्षा करने वाले हैं, और अल्लाह को ज़्यादा याद करने वाले हैं, अल्लाह ने उनके लिए क्षमादान और बड़ा बदला तैयार कर रखा है।

(क़ुरआन, 33:35)

”

with best compliment from

J.I.H. Jarwal

Bahraich [UP]

समस्याओं की जननी को समाज में जगह क्यों दी जाए?

मंथन



डॉ. प्रदीप कुमार

विश्व संगठन (डब्ल्यूएचओ) की ताज़ा रिपोर्ट ने भारत समेत पूरी दुनिया में शराब से होने वाली मौतों की एक चिंताजनक तस्वीर पेश की है जिसे पूरी गंभीरता से लिए जाने की ज़रूरत है। रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में शराब से हर वर्ष छब्बीस लाख से ज़्यादा लोग मर रहे हैं तो इस वक्त दुनिया में करीब चालीस करोड़ लोग शराब व नशे की से होने वाली बीमारियों से पीड़ित हैं। भारत की स्थिति तो और भी ज़्यादा ख़राब है। जहां प्रति एक लाख में 38.5 प्रतिशत मौतें हो रहीं हैं।

1.4 अरब आबादी वाला देश भारत शराब की लत से जूझ रहा है और नवीनतम आंकड़े समस्या की गंभीरता को दर्शाते हैं। रिपोर्ट का यह भी कहना है कि भारत में पंद्रह वर्ष या उससे अधिक के 41 फ़ीसदी पुरुष शराब पीते हैं, जबकि महिलाओं की संख्या क़रीब 21 फ़ीसदी है। रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2020 में भारत में शराब से तीन लाख से ज़्यादा मौतें हुईं। यह आंकड़ा चीन जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश की तुलना में दोगुने से भी अधिक है।

हालांकि भारत में लंबे समय से शराबबंदी की मांगें उठती रहीं हैं, सरकारों ने भी शराब की बिक्री और खपत की विनियमित करने के कई उपाय भी लागू किए हैं, लेकिन ठोस क्रियान्वयन के अभाव में अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही है। दरअस्ल, यह ध्यान रखने की ज़रूरत है कि शराब से होने वाली मौतें केवल स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक विकास को भी बाधा पहुंचाती हैं। राष्ट्रपिता गांधीजी तो पूर्ण शराबबंदी के घोर समर्थक थे। गांधीजी कहते थे कि यदि मुझे 48 घंटे की भी हुकूमत दे दी जाए तो मैं एक साथ बिना मुआवज़ा दिए शराब की सारी दुकाने बंद करा दूंगा। इसका मुख्य कारण वह शराब के सेवन से उत्पन्न होने वाली सामाजिक, आर्थिक और नैतिक बुराइयों को बताते थे। उनका मानना था कि शराब सिर्फ़ मनुष्य का स्वास्थ्य ही नहीं उसकी आत्मा का भी धीरे-धीरे नाश कर देती है। वह पशु में परिवर्तित हो जाता है। उसके भीतर नैतिक मूल्यों का भी ह्रास होने लगता है। उनका कहना था कि, "मैं भारत में कुछ हज़ार शराबी देखने के बजाय देश को अत्यधिक ग़रीब देखना पसंद करूंगा।"

आमतौर पर शराबबंदी न करने के पीछे सरकारों का तर्क होता है कि इससे विकास प्रभावित होगा, जबकि विशेषज्ञों और जानकारों ने शराब से मिलने वाले राजस्व तथा इसके सेवन के कारण होने वाली हानियों के अध्ययन में पाया कि शराब से आने वाले राजस्व की तुलना में शराबजन्य रोगों और अपराधों की रोकथाम के

आमतौर पर शराबबंदी न करने के पीछे सरकारों का तर्क होता है कि इससे विकास प्रभावित होगा, जबकि विशेषज्ञों और जानकारों ने शराब से मिलने वाले राजस्व तथा इसके सेवन के कारण होने वाली हानियों के अध्ययन में पाया कि शराब से आने वाले राजस्व की तुलना में शराबजन्य रोगों और अपराधों की रोकथाम के लिए सरकारों को 24 प्रतिशत अधिक धन ख़र्च करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में शराबबंदी से राजस्व घाटे को जोड़ने का तर्क बेहूदा है।

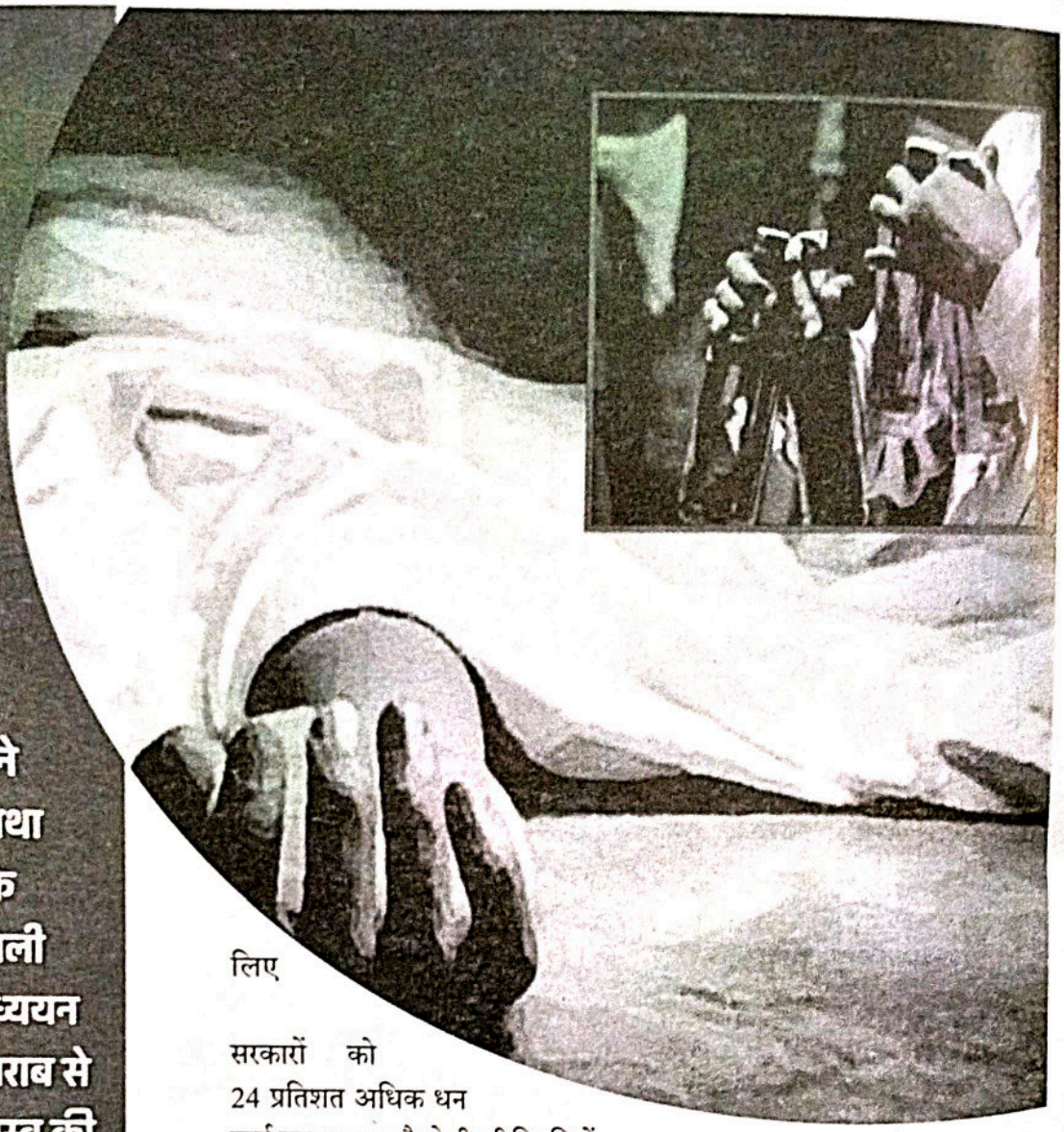

लिए सरकारों को 24 प्रतिशत अधिक धन ख़र्च करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में शराबबंदी से राजस्व घाटे को जोड़ने का तर्क बेहूदा है।

आज़ादी के तुरंत बाद गुजरात में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा की गई थी। गुजरात का विकास इतने वर्षों में नहीं प्रभावित हुआ। देश में चाहे कांग्रेस की सरकार हो या भाजपा की किसी पार्टी ने शराबबंदी पर गंभीरता से विचार नहीं किया। यदि शराब के राजस्व से ही विकास संभव था तो गुजरात पर इसका प्रभाव क्यों नहीं पड़ा?

देश और दुनिया में ऐसा कोई उदाहरण हमारे सामने नहीं है जब शराब पर पाबंदी लगाने से विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ा हो। इसके सकारात्मक प्रभाव ज़रूर लोगों को देखने को मिलते हैं।

शराब या अन्य नशे को भारतीय समाज में कभी भी अच्छा नहीं माना गया। हमारे देश के महापुरुषों ने समय-समय पर शराब के ख़िलाफ़ जागरूकता अभियान चलाया। अधिकांश समाज सुधारकों ने शराब को धर्म, जीवन और समाज के लिए दुष्प्रभावी बताया। हमारा संविधान भी कहता है कि किसी भी सरकार को शराब का प्रचार और विपणन (मार्केटिंग) नहीं करना चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि शराब एक जानलेवा चीज़ है, इससे होने वाली

हानियों की सूची बहुत लंबी है। शराब से न केवल मनुष्य का शरीर बल्कि उसका पैसा, परिवार, सुख-चैन सभी का नुक़सान होता है। शराब का सेवन किस हद तक अपने दुष्परिणाम दिखा सकता है यह किसी से छिपा नहीं है। शराब न सिर्फ़ इसका सेवन करने वाले का नाश करती है बल्कि यह समाज के लिए भी एक कलंक है। इसकी वजह से न जाने कितने परिवार उजड़ते है और न जाने कितनी ज़िंदगियां बर्बाद होती हैं।

हमारे नैतिक एवं धार्मिक मूल्य भी हमें शराब के सेवन के लिए प्रोत्साहित नहीं करते। इस्लाम धर्म में तो शराब को पूरी तरह से वर्जित क़रार दिया गया है। इसी प्रकार सनातन धर्म (जिसे आमतौर पर हिंदू धर्म कहा जाता है) में कहा गया है कि शराब धर्म को भ्रष्ट कर देती है।





भारत में लंबे समय से शराबबंदी की मांगें उठती रहीं हैं, सरकारों ने भी शराब की बिक्री और खपत की विनियमित करने के कई उपाय भी लागू किए हैं, लेकिन ठोस क्रियान्वयन के अभाव में अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही हैं। दरअस्ल, यह ध्यान रखने की ज़रूरत है कि शराब से होने वाली मौतें केवल स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं हैं, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक विकास को भी बाधा पहुंचाती हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान 13 रत्न निकले थे। 12 देवताओं ने रखे और एक रत्न, जिसे शराब माना गया, वह राक्षसों को दे दिया गया। माना गया कि शराब राक्षसत्व बुद्धि को प्रबल करती है। देवत्व क्षीण होता है और राक्षसी प्रवृत्तियों को बल मिलता है, जो बुद्धि को भ्रष्ट करती है।

इस संबंध में इस्लाम के सुप्रसिद्ध विद्वान मौलाना मौदूदी के एक कथन का उल्लेख करना मैं यहां प्रासंगिक समझता हूं–"शराब के विषय में जहां यह बात सत्य है कि मुंह लग जाए तो बड़ी मुश्किल से छूटती है, वहीं यह बात भी सत्य है कि इसमें किसी सीमा का निर्धारण बहुत मुश्किल है, क्योंकि सीमा का निर्धारण बुद्धि ही करेगी और वह शराब के प्रभाव से शिथिल हो जाती है।"

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि हमारे नैतिक, धार्मिक एवं सामजिक मूल्यों का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जिससे शराब के सेवन को प्रोत्साहन मिलता हो। इसलिए यह न केवल सरकार बल्कि इस समाज की और ख़ुद हमारी भी ज़िम्मेदारी है कि लोगों को शराब का सेवन न करने के लिए प्रेरित किया जाए और ज़्यादा से ज़्यादा प्रयासों द्वारा शराबबंदी के लिए ज़ोर दिया जाए। आम नागरिक हो या फिर सरकार सभी को इस दिशा में गंभीरता से सोचना चाहिए और ठोस क़दम उठाना चाहिए।

जब हर कोई जानता है कि शराब का सेवन फलदायी नहीं है और इससे सिर्फ़ अपराध, समस्या और नुक़सान की स्थिति ही उत्पन्न होती है तो आख़िर इसे समाज में जगह दी ही क्यों जाए? लोगों को इस आसुरी लत से मुक्त किया जाना अति आवश्यक है। ■■

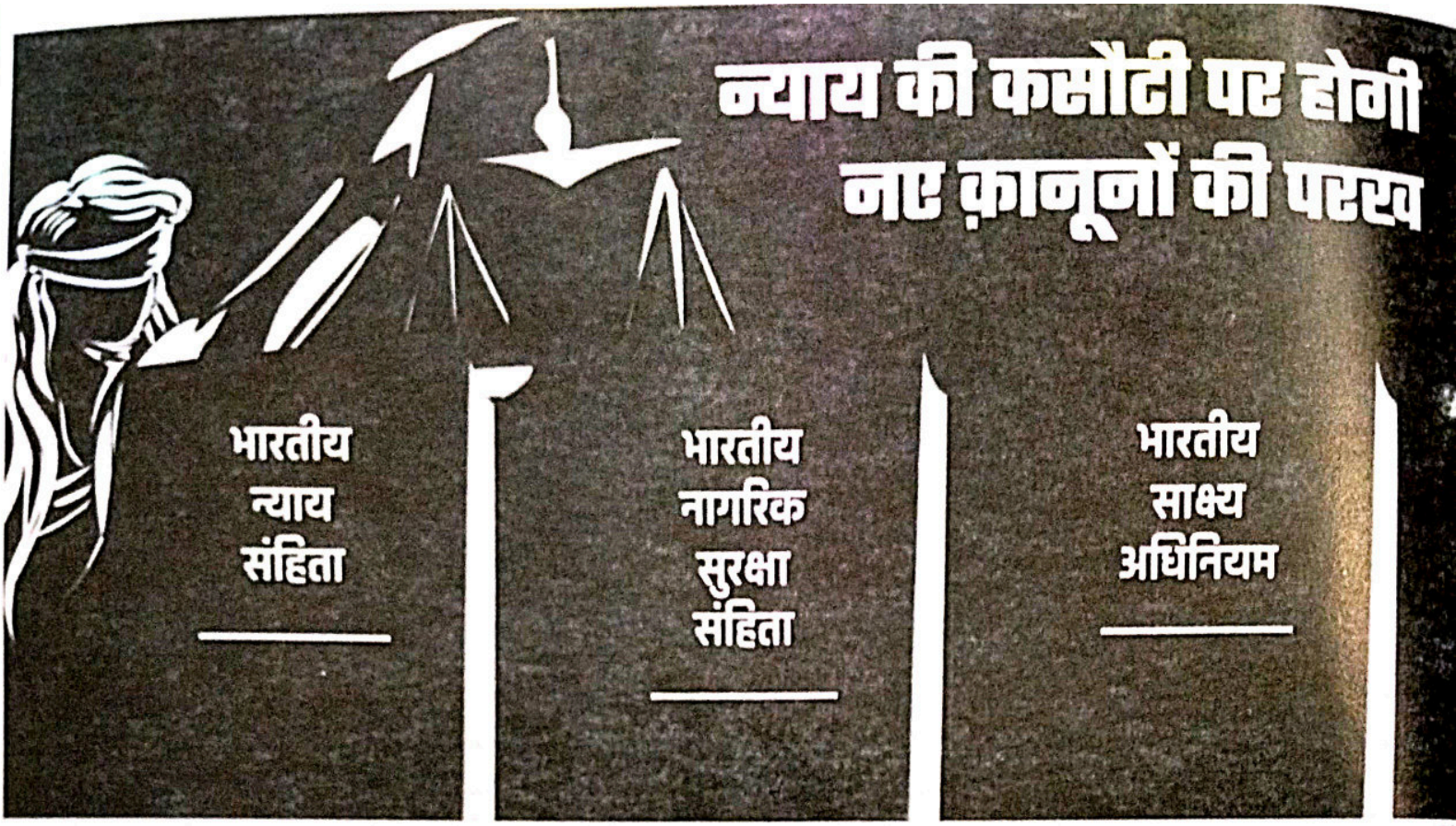

तमाम उम्मीदों और आशंकाओं के बीच देश में आईपीसी, सीआरपीसी और इंडियन एविडेंस ऐक्ट की जगह तीन नए क़ानून-भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम लागू हो चुके हैं। इस बात से किसी को इन्कार नहीं हो सकता कि पुराने पड़ चुके क़ानून हटाए जाने चाहिए, लेकिन उक्त तीनों नए क़ानूनों को लेकर विपक्षी दलों से जुड़े नेता ही नहीं, क़ानूनी जानकार भी सवाल और संदेह जताते रहे हैं, लेकिन सरकार इन्हें लेकर पूरी तरह आश्वस्त नज़र आती है।

भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ सहित अन्य क़ानूनी जानकारों का कहना है कि नए क़ानून केवल तभी सकारात्मक प्रभाव डालेंगे जब बुनियादी ढांचे के विकास और फोरेंसिक विशेषज्ञों और जांच अधिकारियों की क्षमता निर्माण के लिए आवश्यक क़दम उठायें जायेंगे। साथ ही व्यवहार में इन बदलावों के लिए भी सबसे बड़ी कसौटी यही होगी कि संविधान द्वारा प्रदत्त व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नागरिक अधिकार सुनिश्चित करने के लिहाज़ से ये कितने प्रभावी साबित होते हैं?

विपक्ष का कहना है कि इन क़ानूनों में कुछ ऐसी सख़्त धाराएं बनाई गई हैं, जिनसे पुलिस को मनमानी का अधिकार मिलता और मानवाधिकारों के हनन का रास्ता खुलता है। ख़ासकर आपराधिक



क़ानूनों को लेकर व्यापक विरोध देखा जा रहा है। दरअस्ल, ये क़ानून विपक्ष की ग़ैर-मौजूदगी में और बिना किसी बहस के पारित हो गए थे, इसलिए इन पर विशद चर्चा नहीं हो पाई थी। इसलिए भी इनकी कई धाराओं को लेकर भ्रम और विवाद की गुंजाइश बनी हुई है। ध्यान रहे कि इन क़ानूनों के पारित होते समय संसद के 150 सदस्य निलंबित थे।

सामाजिक बदलावों और ज़रूरतों के मुताबिक़ क़ानूनों में संशोधन और अप्रासंगिक हो चुके क़ानूनों को समाप्त करना ज़रूरी होता है। इस लिहाज़ से औपनिवेशिक काल से चले आ रहे क़ानूनों की समीक्षा और उनमें बदलाव ज़रूरी थे। मगर आपराधिक क़ानून बनाते समय यह ध्यान रखना भी ज़रूरी होता है कि उनका दुरुपयोग न होने पाए, उनके चलते सामान्य नागरिकों के मानवाधिकारों का हनन न हो।

औपनिवेशिक समय के राजद्रोह क़ानून की जगह देशद्रोह क़ानून लाने की इसीलिए सबसे अधिक आलोचना हो रही है कि उससे लोगों में नागरिक अधिकारों के हनन का भय अधिक पैदा होता है। हालांकि हर नए क़ानून के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा तो होती ही है, होनी भी चाहिए, मगर उन पर आम सहमति बने बिना लागू किए जाने से विवाद और नाहक भय का वातावरण बनता है। जब तक आम नागरिकों में इन कानूनों को लेकर भरोसा नहीं बनेगा, विरोध के स्वर उठते रहेंगे।

जब ये क़ानून संसद में पारित हुए थे, तब उसके एक हिस्से को लेकर ट्रक चालकों ने देशव्यापी हड़ताल की थी। बड़ी संख्या में वकील भी इसके विरोध में हैं। संसद में विपक्ष तो हमलावर है ही। अगर सचमुच कुछ क़ानूनों की वजह से समाज में व्यवस्था के बजाय अव्यवस्था पैदा होती है, तो यह किसी भी तरह लोकतंत्र के लिए अच्छी बात नहीं होगी।

नए आपराधिक क़ानूनों को लागू करने में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, उनमें से कुछ का तो अनुमान आसानी से लगाया जा सकता

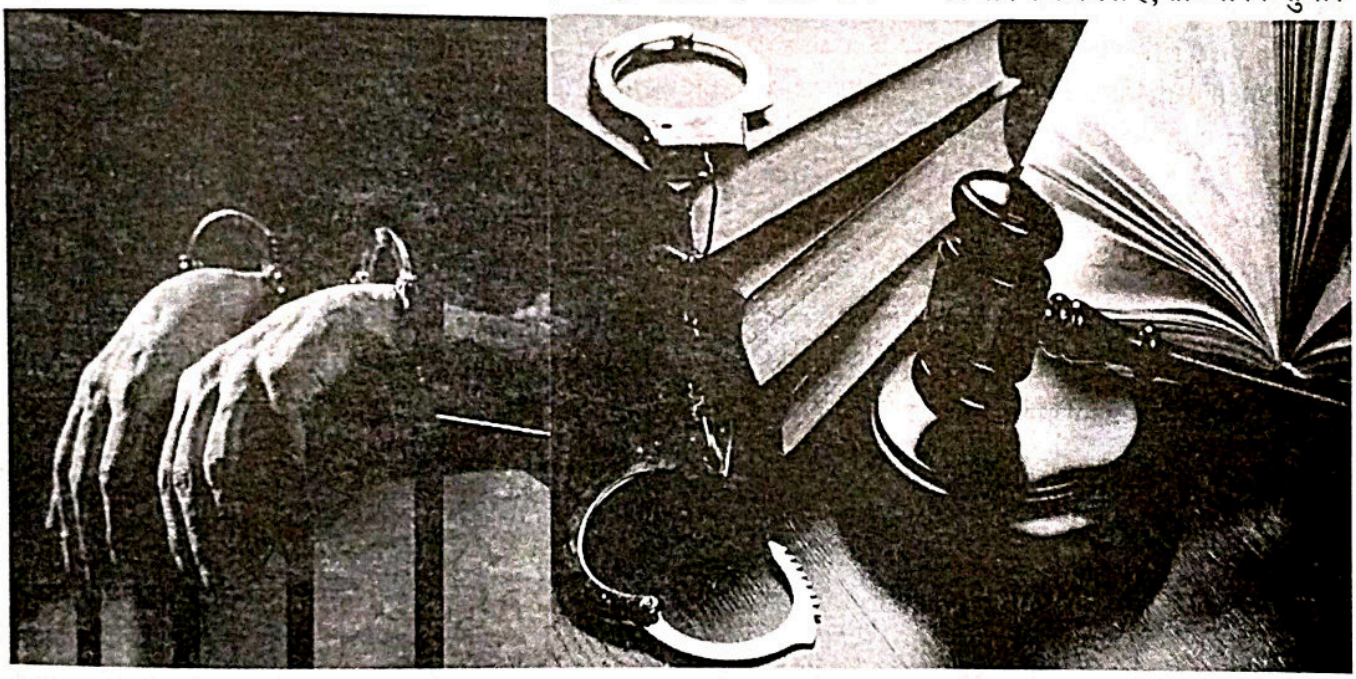

है। उसमें सबसे बड़ी चुनौती है बुनियादी ढांचे की ख़स्ताहाल स्थिति। जब तक बुनियादी कठिनाइयों को दूर नहीं किया जा सकेगा, नए क़ानूनों के प्रभावी असर की गारंटी नहीं ली जा सकती।

दावा किया गया है कि नए क़ानूनों से न्याय प्रणाली आधुनिक बन जाएगी और लोगों के लिए न्याय पाना आसान हो जाएगा। ज़ीरो एफ़आईआर, ऑनलाइन शिकायत, जघन्य अपराधों के वारदात-स्थल की अनिवार्य वीडियोग्राफ़ी और न्याय की समय-सीमा जैसे प्रावधान इन संहिताओं को काफ़ी मज़बूत और प्रासंगिक बना रहे हैं, मगर लग यही रहा है कि बुनियादी समस्याओं पर ग़ौर किए बिना क़ानूनी सुधार किए गए हैं, जिससे इन क़ानूनों का व्यापक असर पड़ना मुश्किल जान पड़ रहा है।

जिन चुनौतियों से इन आपराधिक क़ानूनों को पार पाना है, उनमें से कुछ की चर्चा ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर, देश के सुदूरवर्ती इलाक़ों में संचालित थानों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और बिजली की अबाध आपूर्ति अब तक सुनिश्चित नहीं हो सकी है। थानों के भवनों की स्थिति दयनीय है। पुलिसकर्मियों की कमी एक बड़ा मसला है और न्याय प्रक्रिया में सुधार भी ज़रूरी है। अभी आलम यह है कि कई पुलिस स्टेशन चंद पुलिसकर्मियों के बूते जैसे-तैसे चलाए जा रहे हैं, जिसके कारण वहां एफ़आईआर दर्ज करने से भी बचने का प्रयास किया जाता है।

देश में जजों की कितनी कमी है, यह बात छिपी नहीं है। ऐसे में, महज़ क़ानून बना देने से हालात नहीं बदल सकते। बुनियादी ढांचे को जब तक मज़बूत नहीं किया जाएगा, नए आपराधिक क़ानून बेअसर ही रहेंगे।

उल्लेखनीय है कि हमारे देश में पहले भी अपराधों पर अंकुश रखने के लिए सख़्त क़ानून बने हैं, लेकिन चूंकि उनका पालन सख़्ती से नहीं हुआ, इसलिए हमें बहुत हद तक सफलता नहीं मिल सकी। अगर इन क़ानूनों का गंभीरता से पालन किया जाता, तो यहां की राजनीति इस तरह दूषित नहीं होती या देश भ्रष्टाचार के दलदल में यूं न धंसता। असल में, क़ानून जब तक राज नेताओं, पैसे वालों या रसूख़दारों के हाथ की कठपुतली बना रहेगा, तब तक उसमें चाहे जितने बदलाव कर लिए जाएं, देश में अपराध कम नहीं हो सकते। अपराध को यदि कम करना है, तो व्यापक सुधार की ज़रूरत है।

अब देखना यह है कि विभिन्न न्यायिक प्रक्रियाओं के अनुपालन में ये तीनों नए क़ानून आपराधिक न्याय प्रणाली को जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप त्वरित, सरल, विश्वसनीय एवं प्रभावी बनाने में कितने सफल हो पाते हैं? नए आपराधिक क़ानूनों के लागू करने के क्रम में यह प्राथमिकता के आधार पर देखना होगा कि वे न्यायिक तंत्र के साथ पुलिस की कार्यप्रणाली और उसकी छवि को सुधारने में सक्षम होते हैं या नहीं? ■■

अल-ज़हरावी

आधुनिक शल्य चिकित्सा के अग्रदूत

आधुनिक 'शल्य चिकित्सा के जनक' के रूप में विख्यात अबू अल-क़ासिम अल-ज़हरावी 10वीं शताब्दी के अग्रणी चिकित्सक थे, जिन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अल-ज़हरावी अल-अंसारी' (al-Zahrawi) एक अरब चिकित्सक, सर्जन और रसायनशास्त्री थे। अल-ज़हरावी की पैदाइश सन् 936 ईस्वी में हुई थी। इन्हें मध्य युग और इस्लामी स्वर्ण युग के सबसे बड़े सर्जनों में से एक माना जाता है। वे शल्य चिकित्सा पद्धतियों का आविष्कार करने के लिए प्रसिद्ध हैं, जो आज भी चिकित्सा को प्रभावित करती हैं। इन्हें पश्चिम में अल्बुकासिस के नाम से जाना जाता है।

स्पेन के मशहूर हुक्मरां अब्दुर रहमान अल-नासिर थे, उन्होंने अपनी सल्तनत की राजधानी कोर्डोबा (स्पेन) के पास एक आलीशान महल बनवाया था, जिसका नाम अल-ज़हरा था। इसी महल के इर्द-गिर्द लोगों ने अपने घर बनाकर एक बस्ती बसा ली, यहीं के रहने वाले थे अबुल क़ासिम अल-ज़हरावी। इसी लिए इस जगह के नाम से उनके नाम में ज़हरावी लक़ब शामिल हुआ।

उस दौर में कोर्डोबा की आबादी 10 लाख के क़रीब थी, जिसके लिए 50 अस्पताल थे। युवावस्था की शुरुआत में ही अल-ज़हरावी ने कोर्डोबा विश्वविद्यालय में चिकित्सा



का अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया था। अल-ज़हरावी को मध्यकाल के सबसे बड़े कोर्डोबा पुस्तकालय में प्रवेश की अनुमति दी गई थी इस शाही लाइब्रेरी में 2 लाख से ज़्यादा



किताबें थीं। ऐसे माहौल में अबुल क़ासिम अल-ज़हरावी का बचपन और जवानी गुज़रा और इस माहौल से फ़ायदा उठा कर उन्होंने दुनिया को माडर्न सर्जरी का तोफ़ा दिया। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में उनका योगदान इस प्रकार है–

• अल-ज़हरावी ने ज़ख्मों पर टाका और पट्टी लगाने की शुरुआत किया। उन्होंने आंतरिक टांके के लिए कैटगट (जानवरों के आंत के बने धागे जो अपने आप कुछ समय बाद गलने लगता है) का उपयोग किया। ज़हरावी ने सबसे पहले बताया कि अगर इंसान के जिस्म के अंदरूनी हिस्से में टांके लगाने हों तो बिल्ली की आंत को धागे के तौर पर इस्तेमाल किया जाए, क्योंकि बिल्ली या घोड़े की आंतें इंसानी जिस्म में ही जज़्ब हो जाता है और धागा निकालने के लिए दोबारा सर्जरी नहीं करनी पड़ेगी।

• शल्य चिकित्सा के लिए 200 से अधिक सर्जिकल उपकरणों का आविष्कार किया जिनका आज भी थोड़ा बहुत बदलाव के बाद उपयोग किया जाता है।

• अल-ज़हरावी ने तक़रीबन 1200 साल पहले एक आंख वाले एक सख़्श के मोतियाबिंद का सबसे पहला ऑपरेशन किया और मोतियाबिंद सर्जरी के लिए सर्जिकल उपकरण भी विकसित किए।

• मरीज़ों के जिस्म सुन करने की दवा भी सबसे पहले अल-ज़हरावी ने तलाश की थी। अल-ज़हरावी पहले चिकित्सक थे जिन्होंने हीमोफिलिया की वंशानुगत प्रकृति की पहचान की।

• ज़हरावी ने गर्भावस्था का वर्णन किया और एक्टोपिक गर्भावस्था में सिजेरियन का सुझाव दिया और सिजेरियन के लिए सर्जिकल उपकरण भी विकसित किए।

• अल-ज़हरावी ही पक्षाघात के मूल कारण की खोज करने वाले पहले व्यक्ति थे।

• अल-ज़हरावी का प्रमुख कार्य किताब अत-तसरीफ़ लिमन अजिज़ अन-तालीफ़ (अल-तशरीफ़) है, जो चिकित्सा पद्धतियों का एक तीस-खंड का विश्वकोश है। इस किताब में आंख, कान, नाक, गला समेत 200 से ज़्यादा तरह के सर्जरी के बारे में बताया गया है, साथ ही सर्जरी का फ़ोटो भी दिया गया है। इसी लिए ज़हरावी को फ़ादर ऑफ़ सर्जरी (बाबा-ए-जराहत) कहा जाता है। इस किताब का लैटिन और हिब्रू में अनुवाद किया गया था, जो बहुत लोकप्रिय हुई और अगले पांच सौ वर्षों के लिए यूरोप में मानक पाठ्य-पुस्तक बन गई।

उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'किताब अल-तशरीफ़' है, जो एक व्यापक चिकित्सा विश्वकोश है जिसमें शल्य चिकित्सा, चिकित्सा और औषध विज्ञान सहित चिकित्सा विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह सदियों तक इस्लामी और पश्चिमी दोनों दुनिया में सबसे प्रभावशाली चिकित्सा ग्रंथों में से एक बन गया।

शल्य चिकित्सा संबंधी नवाचारों के अलावा, अल-ज़हरावी ने औषधि विज्ञान में भी गहन अध्ययन किया, तथा विभिन्न औषधियों और रोगों के उपचार में उनके अनुप्रयोगों पर बहुमूल्य जानकारी संकलित की, तथा औषधीय गुणों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

महिला स्वास्थ्य के क्षेत्र में, अल-ज़हरावी ने प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान में प्रगति की तथा प्रसव, प्रजनन क्षमता और महिला स्वास्थ्य देखभाल के विभिन्न पहलुओं पर अंतर्दृष्टि प्रदान की। अल-ज़हरावी ने चिकित्सा शिक्षा में व्यावहारिक अनुभव के महत्व पर ज़ोर दिया तथा सैद्धांतिक ज्ञान के अतिरिक्त व्यावहारिक प्रशिक्षण की भी वकालत की।

अल-ज़हरावी की कृतियों का लैटिन में अनुवाद किया गया, जिसने मध्य युग के दौरान यूरोपीय चिकित्सा शिक्षा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रभाव ने पश्चिमी चिकित्सा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

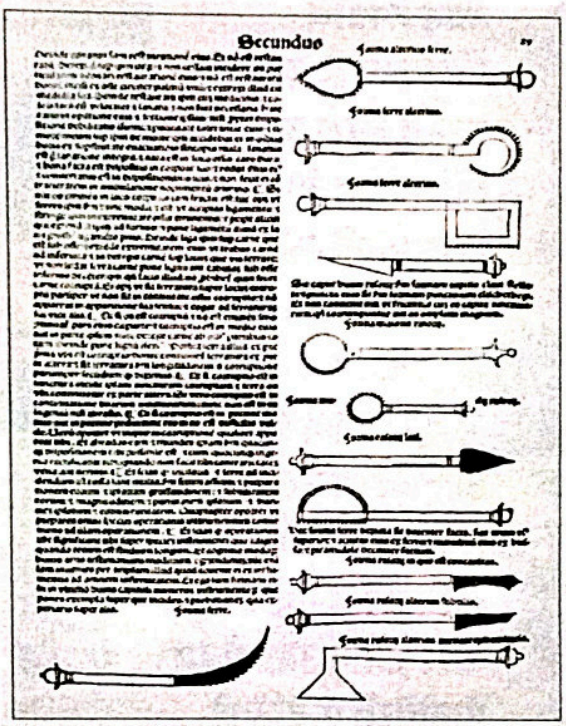

किताब अल-तफ़सीर वह पुस्तक थी जिसने अल-ज़हरावी को यूरोप में स्थायी अधिकार प्रदान किया, क्योंकि यह अब तक लिखी गई पहली सचित्र शल्य चिकित्सा मार्गदर्शिका थी, और यह अगले 500 वर्षों तक यूरोप में शल्य चिकित्सा का प्राथमिक स्रोत बनी रही।

अल-ज़हरावी की अल-तशरीफ़ की पांडुलिपि के दो पृष्ठ, जो अज़रबैजान राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, बाकू में संरक्षित हैं।

नेत्र विज्ञान में अल-ज़हरावी के योगदान में नेत्र रोगों का विस्तृत वर्णन और नेत्र स्थितियों के उपचार के लिए नवीन शल्य चिकित्सा तकनीकें शामिल थीं, जिससे विभिन्न चिकित्सा विषयों में उनकी विशेषज्ञता का पता चलता है।

दंत चिकित्सा में, अल-ज़हरावी ने दांत निकालने के तरीक़ों की रूप-रेखा बताई और अपने चिकित्सा विश्वकोश में दंत रोगों पर चर्चा की, जिससे मौखिक स्वास्थ्य की व्यापक समझ में योगदान मिला।

स्वच्छता के महत्व को स्वीकार करते हुए, अल-ज़हरावी ने चिकित्सा प्रक्रियाओं में स्वच्छता प्रथाओं पर ज़ोर दिया, तथा संक्रमण की रोकथाम और रोगी के स्वास्थ्य लाभ के लिए आधार तैयार किया।

चिकित्सा के प्रति अल-ज़हरावी का दृष्टिकोण मानवीय मूल्यों पर आधारित था। उन्होंने रोगियों के उपचार में करुणा और देखभाल पर ज़ोर दिया, जो रोगी-केंद्रित दर्शन को दर्शाता है जो आज भी प्रासंगिक है। दुनिया भर के चिकित्सा और शल्य चिकित्सा समाजों द्वारा मान्यता प्राप्त, अल-ज़हरावी के अग्रणी योगदान ने उन्हें वैश्विक मान्यता दिलाई है, जिससे चिकित्सा के इतिहास में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में उनकी स्थिति मज़बूत हुई है।

एक हज़ार वर्ष से भी अधिक समय पहले रहने के बावजूद, अल-ज़हरावी की शिक्षाएं और नवाचार प्रासंगिक बने हुए हैं, और उनकी विरासत दुनिया भर के चिकित्सा पेशेवरों को प्रेरित करती रही है। सर्जिकल प्रक्रियाओं और उपकरणों के क्षेत्र में अल-ज़हरावी के अग्रणी योगदान का आधुनिक काल में पूर्व और पश्चिम में पूरी तरह से प्रभाव पड़ा, जहां उनकी कुछ खोजों को आज भी चिकित्सा में लागू किया जाता है। ■■

हाई कोलेस्ट्रॉल

दबे पांव आने वाला ख़तरा



कोलेस्ट्रॉल बढ़ने का मूल कारण असंतुलित आहार और खराब दिनचर्या है, लेकिन इसके साथ और भी कारण हैं। आप सभी को कोलेस्ट्रॉल बढ़ने के लक्षणों के बारे में पूरी जानकारी रखनी चाहिए जिससे उनमें से कोई भी लक्षण दिखें तो आप घरेलू उपायों या ऐलोपैथी पद्धति से इलाज करवाएं।

हाई कोलेस्ट्रॉल शरीर का ऐसा विकार है, जिसका पता अक्सर ख़ुद उसके शिकार को भी नहीं चल पाता, क्योंकि अक्सर इसके कोई स्पष्ट लक्षण नहीं दिखाई देते। नतीजा यह होता है कि वह धीरे-धीरे हृदय रोग और गंभीर स्थितियों में हृदयाघात जैसी समस्याओं की ओर बढ़ता जाता है। फास्ट-फूड के आधुनिक दौर में अब हमारे भोजन में ज़्यादा शर्करा, ज़्यादा कार्बोहाइड्रेट और ज़्यादा वसा होने के कारण यह समस्या तेज़ी से बढ़ रही है।

हाल में ही 'कार्डियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ़ इंडिया' की 22 सदस्यीय समिति ने अब अधिक कोलेस्ट्रॉल की वजह से होने वाले डिस्लिपिडेमिया को लेकर जो दिशा-निर्देश जारी किए हैं, वे इसी मायने में महत्वपूर्ण हैं। इस संगठन ने जो आंकड़े दिए हैं, वे डराने वाले हैं। देश की 81 फ़ीसदी आबादी में कोलेस्ट्रॉल का स्तर सुरक्षित सीमा से काफ़ी ज़्यादा मिला है, यानी चुपचाप होने वाले इस शारीरिक विकार का ख़तरा देश की आबादी के एक बहुत बड़े हिस्से पर मंडरा रहा है।

ग़ौरतलब है कि अभी भी हमारे देश में आबादी के एक बहुत बड़े हिस्से तक प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं नहीं पहुंच पाती हैं। बहुत सारी छोटी-छोटी मौसमी बीमारियों तक का इलाज, ख़ासकर दूरदराज़ के अनेक ग्रामीण इलाक़ों में आज भी सहज उपलब्ध नहीं है, और जहां प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंच गई हैं, वहां भी शायद ही इस तरह की समस्या के इलाज की समुचित व्यवस्था होगी। इसलिए हमारे सामने जो चुनौती है, वह बहुत ज़्यादा बड़ी है।

कोलेस्ट्रॉल बढ़ने के कारण

असंतुलित आहार : शरीर में संतृप्त वसा का पूरा इस्तेमाल शरीर में होने पर भी हाई कोलेस्ट्रॉल पैदा हो सकता है। संतृप्त वसा भोजन ऐसे भोजन में पाई जाती है जिनमें कोलेस्ट्रॉल और फैट ज़्यादा होता है। अगर आप कोलेस्ट्रॉल कम करने के उपाय खोज रहे हैं तो सबसे पहले लाल फैटी मांस, मक्खन, पनीर, केक, घी आदि अधिक वसा वाले खाद्य पदार्थों का सेवन कम कर दें। यह कोलेस्ट्रॉल कम करने का सबसे कारगर उपाय है।

वंशानुगत कारण : यदि आपके परिवार में पहले से ही किसी को हाई कोलेस्ट्रॉल की समस्या रही है तो यह आपके लिए भी चिंता का कारण है। यह

सेहत

संपादन प्रभाग

अनुवांशिक हाई कोलेस्ट्रॉल भी समय पूर्व ब्लॉकेज और स्ट्रोक का कारण बनता है।

शराब का सेवन : ज़्यादा शराब का सेवन लीवर और हार्ट की मांसपेशियों को नुक़सान पहुंचा सकता है जो कि हाई ब्लड प्रेशर का कारण बनता है और शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को बढ़ाता है।

तनाव : जब लोग तनाव में होते हैं तो अपने आपको तसल्ली देने के लिए स्मोकिंग, शराब का सेवन और फैटी खाने का सेवन करते हैं। इसलिए लम्बे समय तक तनाव ब्लड कोलेस्ट्रॉल के बढ़ने का कारण बनता है।

बीमारी : कुछ बीमारियां जैसे शुगर और हाइपोथायराइडिज़्म आदि भी शरीर में कोलेस्ट्रॉल के लेवल को बढ़ाती है। इस कारण, कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कंट्रोल में बनाये रखने के लिए नियमित रूप से मेडिकल जांच कराते रहें।

उच्च कोलेस्ट्रॉल के लक्षण

हाई कोलेस्ट्रॉल को साइलेंट डिजीज के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि ज़्यादातर मामलों में उच्च कोलेस्ट्रॉल के लक्षण उत्पन्न नहीं होते हैं। दिल का दौरा या स्ट्रोक जैसी गंभीर जटिलताएं विकसित होने तक बहुत से लोगों को पता ही नहीं चलता कि उन्हें उच्च कोलेस्ट्रॉल की समस्या है।

यही कारण है कि नियमित कोलेस्ट्रॉल की जांच महत्वपूर्ण है। यदि आपकी आयु 20 वर्ष या उससे अधिक है तो अपने कार्डियोलॉजी डॉक्टर से पूछें कि क्या आपको नियमित कोलेस्ट्रॉल जांच करानी चाहिए। इसके अतिरिक्त साल में कम से कम एक बार फुल बॉडी चेकअप बहुत ज़्यादा महत्व रखता है। इससे आपको अपने स्वास्थ्य का सही से आकलन करने में भी मदद मिलेगी।

कोलेस्ट्रॉल बढ़ने का मूल कारण असंतुलित आहार और ख़राब दिनचर्या है, लेकिन इसके साथ और भी कारण हैं। आप सभी को कोलेस्ट्रॉल बढ़ने के लक्षणों के बारे में पूरी जानकारी रखनी चाहिए जिससे उनमें से कोई भी लक्षण दिखें तो आप घरेलू उपायों या ऐलोपैथी पद्धति से इलाज करवाएं। कोलेस्ट्रॉल के निम्न लक्षण बहुत ही सामान्य हैं :

सिर में दर्द : अगर आप अक्सर सिरदर्द से परेशान रहती हैं या आपको कभी-कभी सिर बहुत हल्का लगता है, तो सावधान हो जाएं, क्योंकि ये बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल के लक्षण हो सकते हैं। दरअस्ल कोलेस्ट्रॉल के कारण सिर की सभी नसों में सही तरह से ब्लड सप्लाई नहीं हो पाती है, तो ऐसी समस्या आती है। इसी कारण सिर में दर्द और चक्कर आने या संवेदना खोने जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

सांस फूलना : अगर थोड़े से काम या मेहनत के बाद आपकी सांस फूलने लगती है, तो ये बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल का संकेत हो सकता है। सांस फूलने या थकावट होने के कई कारण हो सकते हैं, मगर अगर ऐसा हो रहा है तो आपको अपना कोलेस्ट्रॉल ज़रूर चेक करवाना चाहिए।

कोलेस्ट्रॉल बढ़ने के कारण आप ज़्यादा काम किए बिना ही थकावट महसूस करने लगते हैं। आमतौर पर मोटे लोगों को ये समस्या अधिक होती है।

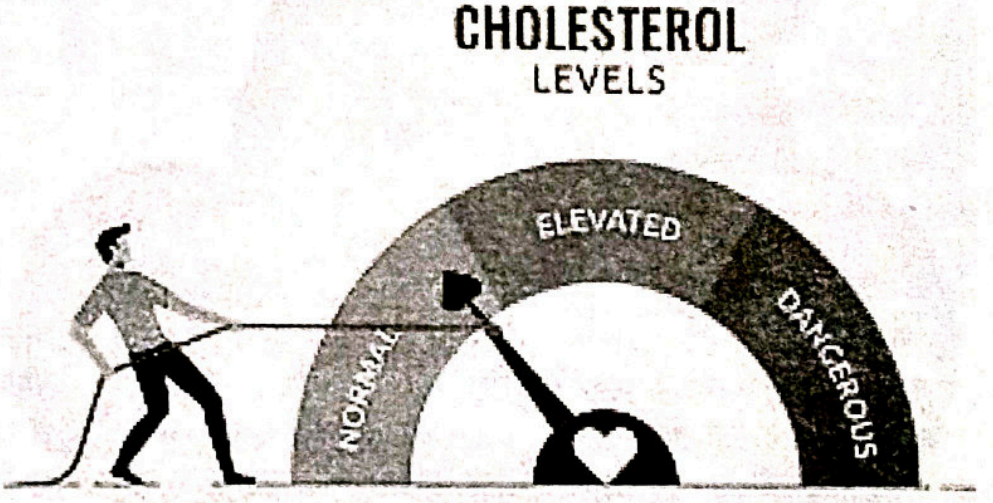

मोटापा : अगर आपको ऐसा लगता है कि आप बिना किसी ख़ास वजह के अचानक से मोटे होने लगे हैं, तो ये बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल का भी संकेत हो सकता है। इसके अलावा अगर आप पेट में भारीपन महसूस करते हैं या आपको सामान्य से ज़्यादा पसीना आता है और गर्मी लगती है तो आपको अपना कोलेस्ट्रॉल चेक करवाना चाहिए।

सीने में दर्द या बेचैनी : कोलेस्ट्रॉल के बढ़ने से मुख्य रूप से दिल की बीमारियों और स्ट्रोक का ख़तरा बढ़ जाता है। इसलिए अगर आपको सीने में दर्द महसूस हो, बेचैनी

जब वसा, कोलेस्ट्रॉल और अन्य पदार्थ धमनियों की दीवारों में जमा हो जाते हैं और प्लाक नामक कठोर संरचनाएं बनाते हैं। समय के साथ, ये प्लैक धमनियों को अवरुद्ध कर सकते हैं और पूरे शरीर में हृदय रोग, स्ट्रोक और अन्य लक्षण या समस्याएं पैदा कर सकते हैं। अक्सर कोलेस्ट्रॉल के बढ़े स्तर को नियंत्रित करना कठिन हो जाता है। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि इस समस्या से बचाव के तरीक़ों का देश में पर्याप्त प्रचार-प्रसार हो।

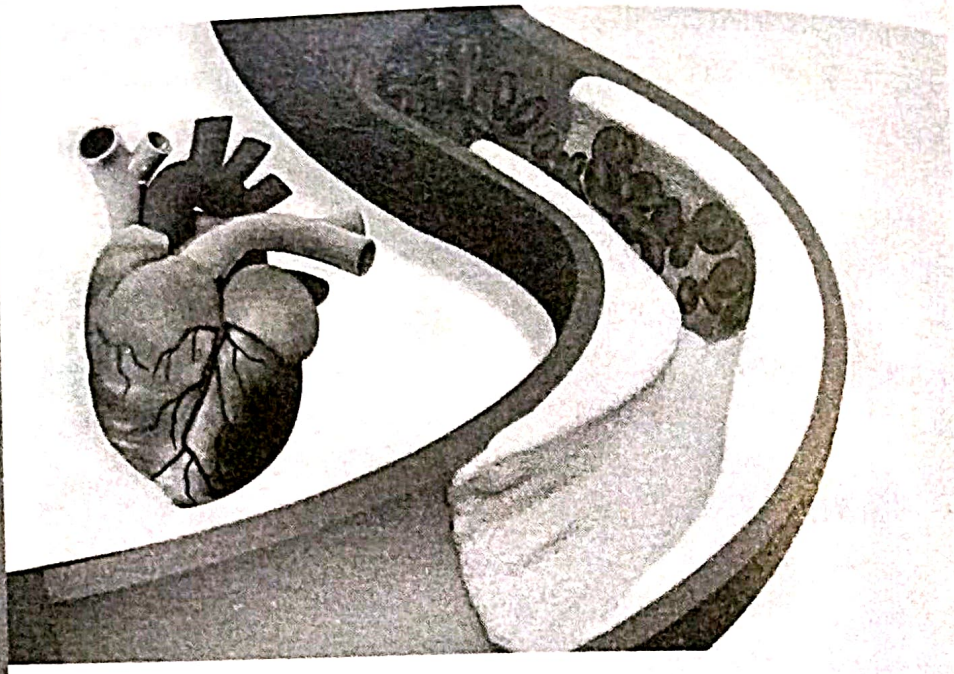

हो या दिल बहुत ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगे, तो ये कोलेस्ट्रॉल के बढ़े होने के संकेत हो सकते हैं। इसे नज़रअंदाज़ करना आपके लिए जानलेवा साबित हो सकता है इसलिए ऐसी स्थिति में तुरंत चिकित्सक से जांच करवाएं और अपना कोलेस्ट्रॉल मैनेज करें। आंख के नीचे या गर्दन पर छोटे से बॉईल या स्किन टैग का निकलना भी इस बात का संकेत है कि आपका कोलेस्ट्रॉल लेवल बढ़ रहा है।

इलाज

• अपने कोलेस्ट्रॉल के स्तर को सुधारने तथा हृदय रोग और दिल के दौरे को रोकने में मदद के लिए आप निम्नलिखित क़दम उठा सकते हैं–

धूम्रपान छोड़ें। यह सबसे बड़ा बदलाव है जो आप दिल के दौरे और स्ट्रोक के जोखिम को कम करने के लिए कर सकते हैं।

• ऐसे खाद्य पदार्थ खाएं जिनमें स्वाभाविक रूप से वसा कम हो। इनमें साबुत अनाज, फल और सब्जियां शामिल हैं।

• कम वसा वाले टॉपिंग, सॉस और ड्रेसिंग का उपयोग करें।

• ऐसे खाद्य पदार्थों से बचें जिनमें संतृप्त वसा अधिक हो।

• नियमित रूप से व्यायाम करें।

• यदि आपका वज़न अधिक है तो अपना वज़न कम करें।

यदि जीवनशैली में बदलाव कारगर नहीं होते हैं, तो आपका डॉक्टर आपको कोलेस्ट्रॉल के लिए दवा लेने के लिए कह सकता है। यह इस पर निर्भर करेगा-

• आपकी उम्र।

• चाहे आपको हृदय रोग, मधुमेह या अन्य रक्त प्रवाह संबंधी समस्या हो या नहीं।

• चाहे आप धूम्रपान करते हों या आपका वज़न अधिक हो।

• चाहे आपको उच्च रक्तचाप हो या मधुमेह।

आपको कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए दवा की आवश्यकता अधिक होने की संभावना है–

• यदि आपको हृदय रोग या मधुमेह है।

• यदि आपको हृदय रोग का उच्च जोखिम है (भले ही आपको अभी तक कोई हृदय संबंधी समस्या न हो)।

रक्त कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करने के लिए कई प्रकार की दवाएं हैं। दवाएं अलग-अलग तरीक़ों से काम करती हैं। उच्च कोलेस्ट्रॉल स्तर धमनियों के सख़्त होने का कारण बन सकता है, जिसे एथेरोस्क्लेरोसिस भी कहा जाता है। यह तब होता है जब वसा, कोलेस्ट्रॉल और अन्य पदार्थ धमनियों की दीवारों में जमा हो जाते हैं और प्लाक नामक कठोर संरचनाएं बनाते हैं।

समय के साथ, ये प्लैक धमनियों को अवरुद्ध कर सकते हैं और पूरे शरीर में हृदय रोग, स्ट्रोक और अन्य लक्षण या समस्याएं पैदा कर सकते हैं। अक्सर कोलेस्ट्रॉल के बढ़े स्तर को नियंत्रित करना कठिन हो जाता है। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि इस समस्या से बचाव के तरीक़ों का देश में पर्याप्त प्रचार-प्रसार हो। ■■

विदेशी भाषाओं में बेहतर भविष्य

भारत में विदेशी भाषाएं जानने वालों की जितनी मांग है उतने लोग उपलब्ध नहीं हैं। इस बात को देखते हुए विदेशी भाषा में करियर बनाना एक अच्छा ऑप्शन हो सकता है।

करियर



संपादन प्रभाग

आज के समय में विदेशी भाषाओं के जानकारों की मांग तेज़ी से बढ़ी है। वैश्वीकरण के दौर में पर्यटन, अनुवाद और संपादन कार्य लोगों को काम का अवसर दे रहा है। कॉल सेंटर हों या विदेशी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया या फिर टूर गाइड, विदेशी भाषा के जानकारों के लिए अब काम की कमी नहीं है। भारत में विदेशी भाषाएं जानने वालों की जितनी मांग है, उतने लोग उपलब्ध नहीं हैं। आइए जानते हैं, इस फ़ील्ड में कैसे करियर बना सकते हैं...।

अहमद ने 10वीं में ही तय कर लिया था कि वह फ्रेंच इंटरप्रेटर के रूप में अपना करियर बनाएंगी। इसलिए 12वीं में एक विषय फ्रेंच रखने के बाद उन्होंने इसे आगे भी जारी रखने का फ़ैसला लिया है। फ्रेंच, जर्मनी, स्पेनिश और चाइनीज इन सभी विदेशी भाषाओं में करियर के बहुत से अवसर हैं, लेकिन

कोई भी फॉरेन लैंग्वेज कोर्स करने के लिए 12वीं उत्तीर्ण करना जरूरी है। इसके बाद युवा सर्टिफिकेट से लेकर डिप्लोमा कोर्सेज से विदेशी भाषाएं सीख सकते हैं, जैस- फ्रेंच भाषा के छह महीने के सर्टिफिकेट कोर्स के बाद डिप्लोमा और डिग्री कोर्सेज भी किए जा सकते हैं।

वर्तमान में युवाओं में फ्रेंच भाषा के प्रति ज़्यादा लगाव देखा जा रहा है, क्योंकि दुनिया में अंग्रेज़ी के बाद जिस यूरोपियन भाषा का सबसे ज़्यादा महत्व है, वह फ्रेंच ही है। फ्रेंच भाषा में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, डिग्री के बाद करियर की असीम संभावनाएं हैं।

जानकारों की मानें, तो वैश्वीकरण के कारण फ्रेंच भाषा के पाठ्यक्रमों का महत्व तेज़ी से बढ़ा है। विदेशी दूतावास, कॉरपोरेट सेक्टर, फ्रांस की कंपनियों, सरकारी विभागों तथा मीडिया क्षेत्र में फ्रेंच भाषा के जानकारों के लिए बेहतर करियर के अवसर हैं। युवा प्रामाणिक तौर पर भाषा की जानकारी से मल्टीनेशनल कंपनियों में अच्छे पदों पर काम कर सकते हैं या फिर वे ख़ुद की कोचिंग भी खोल सकते हैं। वे होटल में जॉब भी कर सकते हैं। इससे एयर होस्टेस, टूरिज्म में गाइड या एस्कॉर्टिंग,

स्कूलों में टीचर, कॉलेजों में प्रोफ़ेसर, मल्टीनेशनल कंपनी में अनुवादक बन सकते हैं।

शैक्षणिक योग्यता : कोई भी फॉरेन लैंग्वेज कोर्स करने के लिए 12वीं उत्तीर्ण करना ज़रूरी है। इसके बाद युवा सर्टिफिकेट से लेकर डिप्लोमा कोर्सेज से विदेशी भाषाएं सीख सकते हैं, जैसे- फ्रेंच भाषा के छह महीने के सर्टिफिकेट कोर्स के बाद डिप्लोमा और डिग्री कोर्सेज भी किए जा सकते हैं।

बेसिक स्किल : किसी भी भाषा का पुख़्ता ज्ञान आपकी सफलता में सहायक होता है। विदेशी भाषा में करियर बनाने के लिए वे लोग ही आगे आते हैं, जो भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं और उससे उनका भावनात्मक लगाव भी होता है। वैसे, इसके लिए कैंडिडेट में बेहतर संवाद क्षमता होना ज़रूरी है। अगर आप अनुवादक बनना चाहते हैं, तो विदेशी भाषा के साथ-साथ अंग्रेज़ी या हिंदी पर भी पकड़ होनी चाहिए। जिस विदेशी भाषा को सीख रहे हैं, उसका व्याकरण, वाक्य संरचना और उससे जुड़ी संस्कृति व इतिहास की जानकारी होने पर आपको ही फ़ायदा होगा। वहीं, अगर आप पर्यटन क्षेत्र में जाना चाहते हैं, तो व्यक्तित्व का आकर्षक होना ज़रूरी है। इसी तरह विदेशी प्रतिनिधियों के साथ भ्रमण पर जाना है, तो आपका मिलनसार होना भी ज़रूरी है।

संभावनाएं : टूर एंड ट्रैवेल कंपनियों, टूरिज्म डिपार्टमेंट, होटल्स, रिज़ॉर्ट्स के अलावा सूचना तकनीक के केंद्र बेंगलुरू, हैदराबाद और गुरुग्राम जैसे शहरों में विदेशी भाषा के जानकार युवाओं की काफ़ी मांग है। उन्हें अनुवादक या दुभाषिये के रूप में काम मिल रहा है। आप विदेशी सैलानियों के गाइड बन सकते हैं या दूतावासों में विदेशी भाषा के विशेषज्ञों के तौर पर जुड़ सकते हैं।

देश में पर्यटन उद्योग के तेज़ी से विस्तार होने और हर साल लाखों की संख्या में आने वाले विदेशी सैलानियों के लिए टूरिस्ट गाइड या टूर ऑपरेटरों की ज़रूरत पड़ती है। ऐसे में गाइड के लिए विदेशी भाषा की जानकारी ज़रूरी योग्यता बन गई है। इसी तरह, मेडिकल टूरिज्म के तहत खाड़ी देशों के निवासी हर साल यहां निजी अस्पतालों में अपना इलाज कराने आ रहे हैं। इनका उचित तरीक़े से मार्गदर्शन करने के लिए विदेशी भाषा के विशेषज्ञों की ज़ोरदार मांग है।



अन्य अवसर : विदेशी भाषा के जानकारों की सबसे बड़ी मांग होटल उद्योग, टूरिज्म या बहुराष्ट्रीय कंपनियों में है। आज स्कूल-कॉलेजों में अध्यापन के लिए बड़े पैमाने पर विदेशी भाषा के शिक्षकों की मांग है। मैनेजमेंट से जुड़े स्कूल प्रबंधन के कोर्स में विदेशी भाषा से जुड़े पेपर को शामिल कर रहे हैं। इनमें चीनी, जैपनीज, कोरियन, स्पैनिश और फ्रेंच आदि प्रमुख हैं। बीपीओ या कॉल सेंटर्स में भी विदेशी भाषाओं के जानकार रखे जा रहे हैं।

सैलरी : अनुवादक बनने पर शुरुआती वेतनमान 30-40 हज़ार रुपये होता है। आगे चलकर वरिष्ठता और अनुभव के क्रम में यह बढ़ता जाता है। विदेशी कंपनियों के साथ काम करने पर लोगों को प्रतिमाह लाखों रुपये मिलते हैं।

मैंडरीन की बढ़ती लोकप्रियता

पूरब के अलावा पश्चिम में भी युवाओं के बीच मैंडरीन (चाइनीज़) भाषा तेज़ी से लोकप्रिय हो रही है। पूरी दुनिया में जहां महज़ 40 करोड़ लोग स्पैनिश बोलते हैं, वहीं 100 करोड़ से ज़्यादा लोगों की भाषा चीनी है। ख़ुद चीन में 70 प्रतिशत लोग मैंडरीन में बात करते हैं। राजधानी दिल्ली स्थित चीनी दूतावास में मैंडरीन सिखाई जाती है। दूतावास की वेबसाइट से विशेष जानकारी हासिल की जा सकती है। इसके अलावा, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भी मैंडरीन सिखाई जाती है। आप चाहें, तो सेंटर फॉर चाइनीज एंड साउथ ईस्ट एशियन स्टडीज़ के तहत मैंडरीन सीख सकते हैं। इसके अलावा, इंडिया चाइना चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री मुंबई में भी यह भाषा सीखी जा सकती है। यही नहीं, कोलकाता का द स्कूल ऑफ़ चाइनीज़ लैंग्वेज़ से भी सीख सकते हैं।

■■

स्वयंवर

कहानी



माइल ख़ैराबादी

बहुत दिनों से जगह-जगह एक विज्ञापन छप रहा है जिसका शीर्षक है 'स्वयंवर' और इस शीर्षक के अन्तर्गत निम्न बातें लिखी हुई हैं–

"एक कुंवारी लड़की की आयु 15, 16 वर्ष है। उसके बाल नर्म, काले और लटें लम्बी हैं, उसका माथा चौड़ा, उठा हुआ और चांदी की तरह चमकदार है, भवें कटारीदार हैं, आंखे बड़ी-बड़ी और रसीली हैं, नाक सुन्दर है, अधर गुलाब की पत्तियों की भांति नरम व नाज़ुक हैं, दांत मोती की तरह जड़े हुए हैं, गरदन लम्बी है, भुजाएं सुडौल, क़द मुनासिब, रंग साफ़, आवाज़ में लचक, बात-चीत में मिठास, छवि में जादू तात्पर्य यह कि वह सौन्दर्य की एक साक्षात मूर्ति और एक अप्सरा है, विवाह के लिए धर्म-जाति, धन-दौलत तथा शिक्षा आदि की कोई क़ैद नहीं, नस्ल-रंग का कोई विचार नहीं, आयु का कोई प्रश्न नहीं केवल एक शर्त है कि उम्मीदवार का मन प्रेम से ओत-प्रोत हो और वह आजीवन उसका दिल रखने और उसके नाज-नखरे सहन करने का वचन दे। इस उद्देश्य के लिए कोई दस्तावेज़ नहीं लिखाई जाएगी और न किसी इक़रारनामे की रजिस्ट्री ही कराई जाएगी, बल्कि उसका अमली सबूत देना होगा और बाक़ायदा परीक्षा ली जाएगी। उम्मीदवारों को चाहिए कि पत्र व्यवहार से काम न लें, बल्कि निम्न पते पर आमने-सामने आकर मामले को तय कर लें।"

पता : H.H. C/o Manager Steen & Co. No. 153 Chandni Chowk, Delhi-6

इस विज्ञापन ने मेरे ध्यान को खींचने में इतनी तेज़ी दिखाई कि एक ऐसी स्त्री से जो धर्म व जाति के बंधनों से मुक्त हो, विवाह को सही न समझने के बावजूद न० 153 की खोज में घंटाघर से फ़तेहपुरी की ओर चल पड़ा। थोड़ी देर के बाद मुझे वह दुकान मिल गई जिसकी मुझे खोज थी। मैं मैनेजर से मिला और इससे पहले कि मैं अपने आने का उद्देश्य उनके सामने रखता, उन्होंने उदासीनता दर्शाते हुए कहा कि, "आप भी विवाह के चक्कर में आए होंगे?" मैंने कहा, "जी हां," मैनेजर साहब ने कहा, "साहब! मैं तो उम्मीदवारों की अधिकता से परेशान हो गया हूं। विज्ञापन दिया जा रहा है, इसलिए इन्कार का भी कोई कारण नहीं। अब आप यह कीजिए कि कल शाम को चार बजे ठीक फ़िरोज़शाह कोटले पहुंच जाएं, वहां कुमारी जी भी जाएंगी और तमाम उम्मीदवार भी जमा होंगे। कुमारी जी परदा उठाकर अपने रूप का दर्शन भी कराएंगी और विवाह की शर्त भी तय करेंगी। परन्तु एक बोतल में आधा पाव गुलाब जल और एक छोटी-सी पंखियां अपने साथ अवश्य लाइएगा" मेरे मन में सैंकड़ों प्रश्न पैदा हो रहे थे। मैनेजर-'अच्छा, चला' कहकर बेमन से दूसरे कमरे में चला गया और मुझे अनचाहे उठकर चला आना पड़ा। मेरी भावनाओं की रेल-पेल और विचारों की उधेड़बुन को कुछ न पूछिए। इन 26 घंटों का बिताना कठिन हो गया। किसी प्रकार संध्या हुई और नित्य से कई घंटे बढ़ जाने वाली रात भी अन्त को पहुंची। सुबह उठकर

इस विज्ञापन ने मेरे ध्यान को खींचने में इतनी तेजी दिखाई कि एक ऐसी स्त्री से जो धर्म व जाति के बंधनों से मुक्त हो, विवाह को सही न समझने के बावजूद न० 153 की खोज में घंटाघर से फतेहपुरी की ओर चल पड़ा। थोड़ी देर के बाद मुझे वह दुकान मिल गई जिसकी मुझे खोज थी। मैं मैनेजर से मिला और इससे पहले कि मैं अपने आने का उद्देश्य उनके सामने रखता, उन्होंने उदासीनता दर्शाते हुए कहा कि, "आप भी विवाह के चक्कर में आए होंगे?" मैंने कहा, "जी हां," मैनेजर साहब ने कहा, "साहब! मैं तो उम्मीदवारों की अधिकता से परेशान हो गया हूँ।

मुझे गुलाब जल की याद आई और बोतल की खोज होने लगी। अलमारी में एक बोतल दिखाई दी, जो एक मिश्रण से भरी हुई थी। याद आया, ओहो! यह वही मिश्रण है जिसकी छः ख़ुराकें एक मोटे डॉक्टर ने बुख़ार की मामूली शिकायत पर मेरे सर मढ़ दी थी, पर एक ही ख़ुराक से ऐसा नुक़्सान पहुंचा कि दूसरे की हिम्मत न हुई और कुछ पैसे में यह बोतल ही मेरे पल्ले पड़ी थी- मैंने बोतल को साफ़ करने के लिए आंगन में दवा उलट दी- छी, छी दुर्गन्ध ने दिमाग़ को ख़राब-सा कर दिया। गर्म पानी से कई बार धोने के बाद बोतल साफ़ हुई और मैं हकीम अजमल ख़ां वाले हिन्दुस्तानी दवाख़ाने में पहुंचा और वहां से आधा पाव गुलाब जल ख़रीदा। जल लेकर मैं चांदनी चौक पहुंचा, पर अभी तो दस ही बजे थे और दर्शन होने में पूरे छः घंटे बाक़ी थे, बड़ी कठिनाई से मैंने इस मुद्दत को पूरा किया। अभी तीन बजे थे कि मैं कपड़े बदलकर बेचैनी के साथ घर के बाहर निकल आया और तांगे में बैठकर कोटले की ओर चल पड़ा। रास्ते में और भी बहुत से तांगे, इक्के, गाड़ियां और मोटर दिखाई पड़े जो बाद में मेरे सहयात्री सिद्ध हुए। 15 मिनट में मेरी यात्रा ख़त्म हो गई। कोटला के भीतर पहुंच कर देखता हूं कि सैकड़ों व्यक्ति पहले से मौजूद हैं, जिस समय घड़ी में चार बजे, उस समय मुझे नज़र आया कि पूरा मैदान लोगों से खचाखच भरा हुआ था, उनमें सैकड़ों को मैंने पहचाना, मुसलमान भी थे, हिन्दू भी थे, ईसाई भी थे और सिख भी, बड़े-बड़े मौलवी, पंडित, पीर ब्रह्मचारी, नेतागण, पत्रों के संपादक, ग्रेजुएट, गंवार, ऑफ़िसर, अहलकार, व्यापारी उद्योगपति, तात्पर्य यह कि हर वर्ग और हर श्रेणी के लोग मौजूद थे। ठीक चार बजे एक शानदार मोटर कोटले के फाटक पर पहुंचकर ठहरी और चादरों में लिपटी हुई सात स्त्रियां उससे उतरकर कोटले की छत पर चढ़ गईं। वह मैनेजर महोदय भी जिनसे मेरी भेंट हुई थी, साथ हो लिए। उन्होंने लोगों को इस ओर आकृष्ट किया कि जो कुंवारी विवाह करना चाहती है, उसे सब लोग खुले तौर पर देख लें, पर गुलाब जल की बोतलें और पंखियां हाथों में रखें। आप विश्वास कीजिए कि इतना सुनकर प्रत्येक व्यक्ति सचेत हो गया, बल्कि यूं कहिए कि पूरा प्राण सिमट कर आंखों में आ गया। तीन सहेलियां इस ओर और तीन सहेलियां उस ओर और बीच में वह कुंवारी। दस मिनट के बाद उसने चादर उतारी और उसका चेहरा सूर्य की तरह प्रकाशमान हो गया-यह सौन्दर्य, यह छवि, यह कान्ति, न कभी देखी, न सुनी, मैं न बयान कर सकता हूं और न आपके मस्तिष्क में उसका कोई विचार आ सकता है। बस, यह समझिए कि इससे अधिक सुन्दर व रूपवती न इन आंखों ने कभी देखी थी और न इन कानों ने कभी सुनी थी। चादर उठते ही भीड़ में एक कोलाहल-सा मच गया। आधे से ज़्यादा व्यक्ति ताब न ला सके और अचेत होकर गिर पड़े। अब मुझे मालूम हुआ कि गुलाब जल और पंखियां मंगाने की आवश्यकता क्यों थी बहरहाल जो लोग सचेत थे, उन्होंने अचेतों पर गुलाब छिड़का और उनके दिमाग़ को हवा पहुंचाई। आधे घंटे के बाद भीड़ दूसरे नज़ारे को तैयार हुई। अब कुमारी की ओर से मैनेजर साहब ने प्रत्येक व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहा कि, "तुमको यह लड़की पसन्द है?" भीड़ की ओर से एक आवाज़ आई कि 'अत्यधिक' फिर उसने पूछा कि, "क्या तुम लोग इससे ब्याह रचाना चाहते हो?" भीड़ ने एक साथ कहा, "अवश्य, अवश्य।" मैनेजर ने कहा, "तुम लोग परीक्षा के लिए तैयार हो ?" उत्तर आया, 'जान व दिल से।' मैनेजर ने कहा, "देखो! इस कुमारी को न जान की ज़रूरत है और न दिल की। उसने अपने प्रेम का मेयार रुपए को क़रार दिया है, तो जो लोग उसे प्राप्त करना चाहते हैं, वे जिस प्रकार सम्भव हो, रुपए का प्रबंध करें।" यह सुनकर लोगों ने कहा, "बहुत अच्छा, हम रूपए प्राप्त करने के लिए अपनी जान लड़ा देंगे और ईमान व आबरू को भी ध्यान में न लाएंगे।" मैनेजर ने इसके बाद सभा ख़त्म करने की घोषणा की और कुमारी यथानियम चेहरे पर चादर डालकर सहेलियों के संग धीरे-धीरे मोटर की ओर चल पड़ी। अब भीड़ भी छटने लगी। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ अपने तांगे पर वापस आया और घर पहुंचकर पूरी रात इन तमाम घटनाओं पर विचार करता

अभी तीन बजे थे कि मैं कपड़े बदलकर बेचैनी के साथ घर के बाहर निकल आया और तांगे में बैठकर कोटले की ओर चल पड़ा। रास्ते में और भी बहुत से तांगे, इक्के, गाड़ियां और मोटर दिखाई पड़े जो बाद में मेरे सहयात्री सिद्ध हुए। 15 मिनट में मेरी यात्रा ख़त्म हो गई। कोटला के भीतर पहुंच कर देखता हूं कि सैकड़ों व्यक्ति पहले से मौजूद हैं, जिस समय घड़ी में चार बजे, उस समय मुझे नजर आया कि पूरा मैदान लोगों से खचाखच भरा हुआ था।

रहा।

दूसरे दिन मैंने सुना कि एक जौहरी के यहां एक लाख की चोरी हुई और चोर गिरफ़्तार कर लिया गया। बड़ी संख्या में लोग इस चोर को देखने के लिए जा रहे थे। एक मित्र मुझे ले गए। जाकर देखता हूं तो चोर महोदय उसी भीड़ के एक कर्मठ सदस्य और उस रूपवती के उम्मीदवार थे। दो-तीन दिन के बाद सुनने में आया कि जायदाद की लालच में एक सगे भाई ने भाई को विष पिला दिया। संयोगवश हत्यारे को अदालत में मैंने भी देखा और पहचाना कि यह व्यक्ति भी उस कुमारी के चाहने वालों में था। इसी सप्ताह धोखाधड़ी की एक शिक्षाप्रद घटना घटी कि एक छली ने कुछ व्यापारियों को नोट बनाने का लोभ दिलाकर दस लाख के नोट प्राप्त कर लिए और स्टेशन पर गिरफ़्तार हुआ। मैं जाकर देखता हूं तो यह छली व कपटी अपराधी भी उन्हीं उम्मीदवारों में से एक था। इसी बीच एक बड़े अहलकार के पकड़े जाने का हाल मालूम हुआ जिस पर एक लाख का गबन साबित हुआ था। अब मुझे जरायम पेशा व्यक्तियों से बड़ी दिलचस्पी हो गई थी। जहां किसी मुजरिम का हाल सुना, उसको देखने का शौक़ पैदा हुआ, अतएव मैं उन अहलकार साहब को देखने पहुंचा और मेरा अनुमान बिल्कुल ठीक साबित हुआ। यह सज्जन भी उसी प्रेमदा की प्रेमाग्नि में जल-भुन रहे थे।

तात्पर्य यह कि, मैं कहां तक बयान करूं, उस दिन से पूरे नगर में, बल्कि पूरे देश में एक अशान्ति-सी फैली हुई थी। हर जगह चोरी, सेंधमारी और डकैती की वारदातें हो रही थीं। चारों ओर जालसाजी, मक्कारी, धोखाधड़ी, घूसख़ोरी, लूटमार और भांति-भांति के भयावह अपराधों की ख़बरें सुनने में आ रही थीं। एक सज्जन से और कुछ न बन पड़ा, तो उन्होंने तस्करी के पक्ष ही में प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया और मैं चकित था कि लोग उनका समर्थन क्यों कर रहे हैं : अन्त में खोज करने से मालूम हुआ कि समर्थक भी उसी रूपवती के प्रेमी होने का दावा करते हैं। अन्ततः जरायम की अधिकता से मजबूर होकर आबादी के हर हिस्से में दीवानी और फ़ौजदारी अदालतें क़ायम की गईं और हर अदालत में इतने-इतने मुक़द्मे दर्ज हो रहे थे कि न्यायाधीशों को मुक़दमों के फ़ैसले से सांस लेने को फ़ुर्सत नहीं मिल पा रही थी। जेलख़ाने मुजरिमों से भर चुके थे। लोग रुपए के लोभ में जो चाहते थे, कर गुज़रते थे और 75% गिरफ़्तार होकर अपनी ग़लती को भुगतते थे। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अब तक ताज़ीरात की पकड़ से बचे हुए थे। इन बचे हुए लोगों में से बहुतों को मैं जानता था और कोटले की उस बड़ी भीड़ में उनसे भेंट कर चुका था। इस सिलसिले में कुछ उन मित्रों का हाल बयान करना दिलचस्पी से ख़ाली न होगा जो प्रेमपाश में जकड़े जाने के बाद बड़े-बड़े जरायम कर बैठे और एक भारी राशि इकट्ठा कर उस सुन्दर कुमारी के सामने विवाह की आशा में पहुंचे।

इसमें एक मौलवी साहब थे जिनका संयम व ईश-भय पूरे नगर में प्रसिद्ध था। आचार-शास्त्र का पालन इस सीमा को पहुंच चुका था कि वह सांस भी धर्म की शिक्षा के विरुद्ध नहीं लेते थे। उम्र साठ-सत्तर के लगभग थी। बेटी-बेटे, पोती-पोते से घर भरा हुआ था, किसी को ध्यान भी नहीं हो सकता था कि मौलवी साहब भी ऐसा कर सकते थे कि नज़र बचाकर कोटले पधारेंगे और अपना मन उस रूपवती की लटों में उलझा देंगे। उन्होंने रुपए प्राप्त करने की यह विधि सोची कि एक साहब जब हज

"आधे घंटे के बाद भीड़ दूसरे नज़ारे को तैयार हुई। अब कुमारी की ओर से मैनेजर साहब ने प्रत्येक व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहा कि "तुमको यह लड़की पसन्द है?" भीड़ की ओर से एक आवाज़ आई कि 'अत्यधिक' फिर उसने पूछा कि, "क्या तुम लोग इससे ब्याह रचाना चाहते हो?" भीड़ ने एक साथ कहा, "अवश्य, अवश्य।" मैनेजर ने कहा, "तुम लोग परीक्षा के लिए तैयार हो ?" उत्तर आया, 'जान व दिल से।' मैनेजर ने कहा, "देखो! इस कुमारी को न जान की ज़रूरत है और न दिल की। उसने अपने प्रेम का मेयार रुपए को क़रार दिया है, तो जो लोग उसे प्राप्त करना चाहते हैं, वे जिस प्रकार सम्भव हो, रुपए का प्रबंध करें।"

को जाने लगे थे तो स्त्रियों के जेवरों का एक छोटा बक्स धरोहर के तौर पर उनके सुपुर्द कर गए थे, उन्होंने इस धरोहर से साफ़ इन्कार कर दिया और पचास लाख के जेवर लेकर उस रूपवती के पास पहुंचे हुए थे। उसने देखते ही कहा, 'मौलाना! बस मैं आपकी दासी हूं, कल शाम को तशरीफ़ लाइए ताकि विवाह की रस्में पूरी की जा सकें।' मौलवी साहब की प्रसन्नताओं की कोई सीमा न रही। जब वापस जाने लगे तो कुमारी ने अपनी सहेली को संकेत किया, वह जेवरों का बक्स उठाकर ले गई और शरबत का एक गिलास मौलवी साहब को सेवा में प्रस्तुत किया। मौलवी साहब 'जब यार ही पिलाए तो फिर क्यों न पीजिए के पालन में उसे ख़ाली कर गए। घर पर पहुंचकर उन्होंने पेट में दर्द महसूस किया, थोड़ी देर में ख़ूनी क़ै हुई और तीन-चार घंटे में प्राण पखेरू उड़ गए।

एक-दूसरे निष्ठावान प्रेमी की कहानी सुनिए।

वे अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे और बड़े विद्वान थे, पर प्रेम में दीवाने हो रहे थे। उन्होंने कोटले से आकर तुरन्त एक दैनिक पत्र प्रकाशित किया जिसने एक ही दो सप्ताह में असाधारण लोकप्रियता प्राप्त कर ली। इसके बाद यह सज्जन उन तमाम आन्दोलनों में अमली हिस्सा लेने लगे जो उस समय चल रहे थे और झट आन्दोलन के लिए एक फंड खोल दिया, चूंकि एडीटर एक उच्च व्यक्तित्व का स्वामी होता है, इसी लिए लोग उस पर भरोसा करने लगे। रुपयों की वर्षा होने लगी। कुछ महीने में एक लाख से कुछ अधिक रक़म इकट्ठी हो गई और नोटों की एक गड्डी लेकर उस कुमारी के पास पहुंचे, उसने पूरे उत्साह से स्वागत किया, नोटों की गड्डी लेकर और भली-भांति गिनकर बॉक्स में बंद किया।

एडीटर साहब से कहा कि आज शाम को ही विवाह सम्पन्न होना चाहिए। इसके बाद खाना परोस दिया गया, अच्छे से अच्छे खाने चुन दिए गए, सबने मिलकर खाना खाया। खाने के बाद एडीटर साहब ख़ुश-ख़ुश वापस हुए ताकि विवाह का प्रबन्ध करें, पर अभी अपने आफ़िस भी नहीं पहुंचे थे कि सहसा मोटर की सीट से नीचे गिर पड़े और प्राण पखेरू उड़ गए।

यह सुनकर लोगों ने कहा, "बहुत अच्छा, हम रुपए प्राप्त करने के लिए अपनी जान लड़ा देंगे और ईमान व आबरू को भी ध्यान में न लाएंगे।" मैनेजर ने इसके बाद सभा खत्म करने की घोषणा की और कुमारी यथानियम चेहरे पर चादर डालकर सहेलियों के संग धीरे-धीरे मोटर की ओर चल पड़ी। अब भीड़ भी छटने लगी। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ अपने तांगे पर वापस आया और घर पहुंचकर पूरी रात इन तमाम घटनाओं पर विचार करता रहा।

एक व्यापारी की घटना भी अति शिक्षाप्रद है, उन्होंने एक लिमिटेड कंपनी स्थापित की और लोगों को लाभ के हरे बाग़ दिखाए कि थोड़े समय में 60-70 हज़ार रुपए इकट्ठा हो गया। ये बेचारे भी रुपए लेकर उस हत्यारिन के पास पहुंचे और उसने उन्हें भी कोई ऐसी चीज़ खिलाई कि तीन दिन तक बुख़ार में पड़े रहे और अन्त में नश्वर संसार से विदाई ले ली। एक सज्जन ने छोटे भाई-बहनों का हिस्सा हड़प करके कुछ रुपया एकत्र किया और उस सौन्दर्य की देवी पर भेंट चढ़ा दिया, पर अन्त में वह भी मौत के घाट उतार दिए गए। कुछ अन्य मित्रों के साथ भी यही बर्ताव हुआ, जिन्होंने अनेकों छल-कपट और मक्कारियों से रुपया एकत्र करके इस अप्सरा को पेश किया और उसने रुपया लेकर उन्हें सदा-सर्वदा के लिए मरघट में सुला दिया। ये तमाम घटनाएं मेरी आंखों देखी हैं। आज तक कोई व्यक्ति उसके चंगुल से छूट नहीं सका। वह बड़े-बड़े बुद्धिमानों को मूर्ख बना रही है। उसके लिए धनी-निर्धन का कोई अंतर नहीं। अगर कोई तांबे के ही कुछ पैसे लेकर पहुंच जाता है तो उसको स्वीकार करने में उसे कोई झिझक नहीं होती। वह जितनी ही सुन्दर है, उतनी ही छली-कपटी है। सच तो यह है कि कोटले में पहले-पहल उसका सौन्दर्य व रूप देखकर मेरे मन में भी प्रलोभनों का एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ था और धन इकट्ठा करने के लिए भांति-भांति के तरीक़े मेरे मस्तिष्क में भी जन्म लेने लगे थे, पर जब से मैंने उक्त घटनाओं को अपनी आंखों से देखा लड़खड़ाते हुए क़दम संभल गए और मुझे उस छल-कपट वाली कुमारी से बड़ी घृणा हो गई है।

चूंकि विज्ञापन का सिलसिला अब तक चल रहा है और लोग बराबर उसके धोखों व चालों का शिकार हो रहे हैं, इसलिए मैं यह ऐलान छापकर अपने नातेदारों, मित्रों तथा देशवासियों को सचेत करता हूं कि ईश्वर के लिए उस छली के छल-कपट में न आएं और उसके ऊपरी सौन्दर्य व रूप पर जिसके भीतर हज़ार दोष छिपे हुए हैं, दीवाना होकर अपने स्थाई सुख-शान्ति को हाथ से न जाने दें और हां, स्पष्ट रहे कि उस कुमारी का नाम "दुनिया" है। ■■

केंद्र सरकार और विपक्ष दोनों

समझें इस जनादेश को

घटना चक्र

संपादन प्रभाग

हाल में ही जमाअत-ए-इस्लामी हिंद (जेआईएच) की केंद्रीय सलाहकार परिषद (सीएसी) की तीन दिवसीय बैठक में पारित किए गए प्रस्तावों में कहा गया है कि भाजपा के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार जो सत्ता में आई है, वह सभी के लिए जवाबदेह है और इसमें वे सभी शामिल हैं जिन्होंने इसे वोट दिया और जिन्होंने इसका विरोध किया।

प्रस्ताव में मांग की गई है कि सरकार द्वारा नागरिकों के बीच कोई भेदभाव या पूर्वाग्रह नहीं दिखाया जाना चाहिए। यह प्रस्ताव काफ़ी महत्वपूर्ण है, क्योंकि कुछ भाजपा सांसदों ने स्पष्ट रूप से घोषणा की है कि वे मुसलमानों का समर्थन या उनका कोई काम नहीं करेंगे, क्योंकि उनके संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों के मुसलमानों ने उन्हें वोट नहीं दिया।

जमाअत की केंद्रीय सलाहकार परिषद का मानना है कि इस बार संसदीय चुनाव में लोगों का जनादेश बिल्कुल स्पष्ट है। यह जनादेश तानाशाही के बजाय लोकतंत्र, फ़ासीवाद और संप्रदायवाद के बजाय संवैधानिक मूल्यों, नफ़रत और भेदभाव के बजाय सहिष्णुता और बहुलवाद और अहंकार के बजाय विनम्रता के पक्ष में है। सलाहकार परिषद का मानना है कि लोगों ने सत्ताधारी पार्टी को सत्ता नहीं लौटाई है, बल्कि एनडीए की गठबंधन सरकार और एक मज़बूत विपक्ष के लिए वोट किया है। सरकार को इस जनादेश को भली-भांति समझना चाहिए और उसके अनुरूप अपने दृष्टिकोण में उचित सुधार करना चाहिए।

केंद्रीय सलाहकार परिषद ने विपक्षी दलों से मांग की है कि वे नतीजों और उसके जनादेश को समझें। यदि धर्मनिरपेक्ष दल अपने दलगत हितों एवं व्यक्तिगत अहंकार से ऊपर उठकर गठबंधन का रूप नहीं लेते तो उन्हें यह सफलता कभी नहीं मिलती।

आगे कहा गया है कि, यह भी एक तथ्य है कि विपक्ष पर लोगों का विश्वास तब पैदा हुआ जब उसने सांप्रदायिकता, फासीवादी प्रवृत्तियों और नफ़रत और भेदभाव की राजनीति के ख़िलाफ़ स्पष्ट और साहसिक रुख़ अपनाया।

जिन राज्यों में वे साम्प्रदायिकता के विरुद्ध स्पष्ट रुख़ लेकर आये, वहां उन्हें सफलता मिली और जहां वे संकोच, भय और दमन तथा लोभ और स्वार्थ के मनोविज्ञान से पीड़ित थे, वहां उन्हें इस बार भी असफलता का सामना करना पड़ा।

जमाअत-ए-इस्लामी हिंद की केंद्रीय सलाहकार परिषद ने हालिया लोकसभा चुनावों में नागरिक समाज के असाधारण प्रयासों की सराहना की, जिन्होंने ख़ामोशी और समझदारी से लोकतंत्र की स्थिरता और देश में सांप्रदायिक शांति और सद्भाव के स्थायित्व और

इस बार संसदीय चुनाव में लोगों का जनादेश बिल्कुल स्पष्ट है। यह जनादेश तानाशाही के बजाये लोकतंत्र, फ़ासीवाद और संप्रदायवाद के बजाये संवैधानिक मूल्यों, नफ़रत और भेदभाव के बजाये सहिष्णुता और बहुलवाद और अहंकार के बजाय विनम्रता के पक्ष में है। सलाहकार परिषद् का मानना है कि लोगों ने सत्ताधारी पार्टी को सत्ता नहीं लौटाई है, बल्कि एनडीए की गठबंधन सरकार और एक मज़बूत विपक्ष के लिए वोट किया है। सरकार को इस जनादेश को भली-भांति समझना चाहिए और उसके अनुरूप अपने दृष्टिकोण में उचित सुधार करना चाहिए।



दमनकारी नीतियों की रोकथाम के लिए सतत एवं समग्र संघर्ष किया तथा जनचेतना को जागृत किया।

इसी प्रकार दलित और पिछड़े वर्ग के नागरिकों ने भी जनता की मूलभूत समस्याओं और संविधान की रक्षा को ध्यान में रखते हुए अपनी प्राथमिकताएं तय कीं और सकारात्मक परिणाम सामने आये। सलाहकार परिषद ने केंद्र सरकार और विपक्ष दोनों से मांग की है कि वे लोगों के इस जनादेश का सम्मान करें, लोगों के बुनियादी सवालों और समस्याओं पर गंभीरता से ध्यान दें और लोकतांत्रिक मूल्यों और परंपराओं को ध्यान में रखें।

प्रस्ताव में कहा गया है कि, यह सरकार की ज़िम्मेदारी है कि वह देश के सभी नागरिकों के मौलिक अधिकारों का समान रूप से सम्मान करे और देश में सांप्रदायिकता और वर्ग संघर्ष पैदा न होने दे। जब कोई पार्टी या गठबंधन सरकार बना लेता है तो वह देश के सभी लोगों के संसाधनों का ट्रस्टी बन जाता है और सभी के लिए ज़िम्मेदार होता है। इसलिए सरकार को देश के नागरिकों के बीच भेदभाव नहीं करना चाहिए।

सलाहकार परिषद समझती है कि एनडीए में शामिल धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलों की ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। यदि वे सरकार का समर्थन कर रहे हैं, तो अपने सिद्धांतों के कारण यह सुनिश्चित करना उनकी ज़िम्मेदारी है कि सरकार लोकतांत्रिक मूल्यों और परंपराओं का सख़्ती से पालन करें, लोकतांत्रिक संस्थानों की स्वायत्तता और लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों और स्वतंत्रता में विघ्न उत्पन्न करने से बचे और देश के हर वर्ग की समस्याओं को गंभीरता से हल करें।

क्रोनी पूंजीवाद और पक्षपाती संप्रदायवाद की नीतियों को त्यागें और संसाधनों का उचित वितरण सुनिश्चित करने वाली नीतियों को बढ़ावा दें। समाज के कमज़ोर और पिछड़े वर्गों को सशक्त बनाया जाए और अल्पसंख्यकों के अधिकारों का पूरा सम्मान करते हुए उनके विश्वास को बहाल किया जा सके।

■■



दिल से जो बात निकलती है...

आख़िरी पन्ना



एजाज़ अहमद असलम

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के साथ ताइफ़ के इलाक़े में अत्यंत अपमानजनक व्यवहार किया गया और आपको लहूलुहान करके ताइफ़ की बस्ती से निकलने के लिए मजबूर कर दिया गया। बाद में जब आप एक बाग़ की दीवार का सहारा लेकर अंगूर की एक बेल की छाया में बैठे तो उस समय आप ईश्वर की ओर उन्मुख हुए और आपने ईश्वर से दुआ की। इस दुआ को 'दुआ-ए-मुज़्तज़अफ़ीन' यानी कमज़ोरों की दुआ और दुआ-ए-ताइफ़ भी कहा जाता है। इस दुआ में ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास को व्यक्त किया गया है और उससे सहायता मांगी गई है। दुआ के शब्द हैं–

"हे ईश्वर, तेरे ही सामने अपनी बेबसी, बेचारगी और लोगों की निगाह में अपनी नाक़द्री की शिकायत करता हूं। ऐ सबसे बढ़कर रहम करने वाले, तू सारे ही कमज़ोरों का रब है और मेरा रब भी तू ही है। मुझे तू किसके हवाले कर रहा है? क्या किसी पराए के हवाले जो मुझ से रुखाई के साथ पेश आए? या किसी दुश्मन के हवाले जो मुझ पर क़ाबू पा ले? अगर तू मुझ से नाराज़ नहीं है, तो मुझे किसी मुसीबत की परवाह नहीं, मगर तेरी ओर से मुझे कुशलता मिल जाए तो उसमें मेरे लिए ज़्यादा कुशादगी है। मैं पनाह मांगता हूं तेरी सत्ता के उस नूर (प्रकाश) की जो अंधेरे में उजाला और लोक-परलोक के मामलों को ठीक करता है। मुझे इससे बचा ले कि तेरा क्रोध मुझ पर टूट पड़े। या मैं तेरे प्रकोप का भागी हो जाऊं। तेरी मर्ज़ी पर राज़ी हूं यहां तक कि तू मुझ से राज़ी हो जाए। कोई ज़ोर और शक्ति तेरे बिना नहीं है।"

कितने प्यारे शब्द हैं, क्या करुण-क्रन्दन है, क्या विनम्रता है, किस तरीक़े

इस अवसर पर आप (सल्ल.) के व्यक्तित्व का एक और पहलू उल्लेखनीय है। जब आप उस बस्ती से बाहर निकले और एक स्थान पर आए, तो आपने देखा कि कुछ बादल जैसे छाए हुए हैं। आपने नज़र उठाकर देखा, जिबरील अमीन (फ़रिश्ता) वहां पर थे। जिबरील अमीन ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर सलामती हो। आपने अपनी क़ौम के सामने जो दावत पेश की थी, उन्होंने क्या जवाब दिया, अल्लाह तआला को सब कुछ मालूम है।



से तड़पकर, गिड़गिड़ा कर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ईश्वर से सहायता मांग रहे हैं।

ताइफ़ के हालात की पृष्ठभूमि में रसूल (सल्ल.) की यह दुआ हमें बताती है कि हमारा भी रवैया यही होना चाहिए। बार-बार हमें अपने पालनहार की ओर उन्मुख होना चाहिए और अपने आपको चरित्र एवं आचरण की दृष्टि से सही रखते हुए सच्चाई को लोगों के सामने पेश करना चाहिए। यदि इस मार्ग में कुछ कठिनाइयां आएं, कुछ बुरा-भला कहा जाए तो उसको सहन कीजिए।

इस अवसर पर आप (सल्ल.) के व्यक्तित्व का एक और पहलू उल्लेखनीय है। जब आप उस बस्ती से बाहर निकले और एक स्थान पर आए, तो आपने देखा कि कुछ बादल जैसे छाए हुए हैं। आपने नज़र उठाकर देखा, जिबरील अमीन (फ़रिश्ता) वहां पर थे। जिबरील अमीन ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर सलामती हो। आपने अपनी क़ौम के सामने जो दावत पेश की थी, उन्होंने क्या जवाब दिया, अल्लाह तआला को सब कुछ मालूम है। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ सुनी और यह पहाड़ों का प्रबंधक फ़रिश्ता आपकी सेवा में हाज़िर है।"

पहाड़ों का प्रबंधक फ़रिश्ता आगे बढ़ता है और कहता है कि, "ऐ अल्लाह के रसूल, अगर आप मुझे आदेश दें जिन दो पहाड़ियों के बीच यह ताइफ़ की बस्ती है, उन पहाड़ों को इस तरीक़े से मिला दूं कि सब-के-सब कुचलकर ख़त्म हो जाएं?"

अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया, "नहीं, नहीं..नहीं। मैं यह नहीं चाहता। मुझे ईश्वर से उम्मीद है कि आज अगर ये लोग धर्म को, मेरी बातों को रद्द करते हैं, तो कल ईश्वर इनकी नस्ल में से ऐसे लोगों को उठाएगा कि वे लोग धर्म को स्वीकार करेंगे, इसकी सत्यता को स्वीकार करेंगे।"

बाद में दुनिया ने देखा कि सक़ीफ़ का क़बीला जो ताइफ़ और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बसा हुआ था, वह इस्लाम की शक्ति को सुदृढ़ करने का एक माध्यम बना। एक लम्बे समय के बाद एकेश्वरवाद की दावत उभरी है। हमें भी पैग़म्बर (सल्ल.) की सच्ची पैरवी करनी चाहिए और हर समय हमारा उद्देश्य भी ऐसा ही होना चाहिए। किसी शायर ने कहा है–

न गरज़ किसी से न वासता, हमें काम अपने ही काम से।
तेरे ज़िक्र से, तेरे फ़िक्र से, तेरी याद से, तेरे नाम से।।

हमें लोगों के सामने सत्य को प्रस्तुत करना है, युक्तिपूर्ण ढंग से, प्रेम के साथ, सज्जनता के साथ और जो कठिनाइयां इस राह में आएं, उनको सहन करना है। ईश्वर से दुआ है कि वह हमें ऐसा करने का सौभाग्य प्रदान करे। ■■



"ऐ आदम की संतान, हर इबादत के अवसर पर अपनी सज्जा से सुशोभित रहो और खाओ-पियो और सीमा से आगे न बढ़ो, अल्लाह सीमा से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।"
(क़ुरआन, 7:31)

with best compliment from

J.I.H. Jhunjhunu
(Rajasthan)

KANTI Monthly, New Delhi
AUGUST 2024
Posted on 20-21 July 2024
Published on 18 July 2024
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52

A Well Wisher



"जिस किसी ने तुम्हारे पास अमानत रखी है उसकी अमानत अदा कर दो, और जिस किसी ने तुम्हारे साथ ख़ियानत की हो तुम उसके साथ ख़ियानत न करो।"
(तिरमिज़ी, अबू दाऊद)

J.I.H. Dhanbad
(Jharkhand)